



# बालसंकाय

उत्कृष्ट बाल शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान द्वारा  
स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव को समर्पित



गांधी एनाएक, जबलपुर



त्रिवुल्यी एनाएक, जबलपुर

उनतीसवाँ अंक

सत्र- 2021-22

शारसवीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान मध्यप्रदेश, जबलपुर

स्थापना : 16 अगस्त 1954



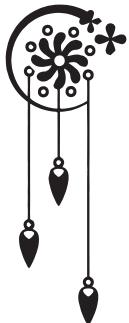
**डी.पी.एस.ई. प्रथम वर्ष छात्राएँ (2021-22) एवं प्रशिक्षण स्टाफ**



**डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष छात्राएँ (2021-22) एवं प्रशिक्षण स्टाफ**

# बालारुण

वर्ष : 2021-22



उन्तीसवाँ अंक

संरक्षक - प्राचार्य

डॉ. राममोहन तिवारी

सम्पादक

श्रीमती अंजलि सक्सेना

सम्पादक मण्डल

श्रीमती बरखा खरे ( उप संपादक )

श्रीमती रजनी द्विवेदी ( प्राथ. प्रभारी )

डॉ. ( श्रीमती ) शशि सराफ

श्रीमती वंदना श्रीवास्तव

प्रशिक्षणार्थी प्रतिनिधि

कु. अंजलि चौधरी, श्रीमती सरोज रावत कायदे

शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान ( मॉटेसरी )

नेपियर-टाऊन, जबलपुर, मध्य प्रदेश

फोन : 0761-2409188, 2409888



## बालारुण



राकेश सिंह  
संसद सदस्य (लोकसभा)  
जबलपुर (म.प्र.)



चेयरमैन  
कोयला एवं इस्पात संबंधी  
स्थायी समिति  
210, ब्लॉक 'बी' संसदीय सीधा एक्सटेशन  
नई दिल्ली - 110001  
फोन : 011-23035744, 21410176  
फैक्स 011-21410178  
दिनांक - 11/12/2021

## झांडेश

शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर द्वारा संस्थान की वार्षिक पत्रिका “बालारुण” के 29 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। नगर ही नहीं, सम्पूर्ण महाकौशल क्षेत्र की महिला प्रशिक्षणार्थियों के लिए पूर्व प्राथमिक शिशु शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण हेतु यह एकमात्र संस्था है। संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त सुयोग्य शिक्षकों द्वारा विभिन्न स्तरों पर बाल शिक्षा को बढ़ाने के लिए सतत् प्रयत्न किये जाते रहे हैं। इस प्रशिक्षण संस्थान में बाल कक्षा में ( मॉटेरसरी ) गतिविधि आधारित खेल पद्धति द्वारा अध्यापन कराया जाना निःसंदेह प्रशंसनीय है। संस्थान की वार्षिक पत्रिका बालारुण के 29 वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।



( राकेश सिंह )

## बालारुण



इन्द्र सिंह परमार  
राज्यमंत्री  
मध्यप्रदेश शासन  
स्कूल शिक्षा (स्वतंत्र प्रभार)  
एवं सामान्य प्रशासन विभाग

कार्यालय : कक्षा क्रमांक बी-427,

बल्लभ भवन-II, मंत्रालय भोपाल

दूरभाष : 0755-2708157

निवास : बी-4, श्यामला हिल्स, भोपाल

दूरभाष : 0755-2446227, 2471875

भोपाल, दिनांक : 22/01/2022

## अंडेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर प्रदेश की ऐसी संस्था है जो विगत 67 वर्षों से पूर्व प्राथमिक व शिशु शिक्षा प्रदान कर रही है। शाला पूर्व शिक्षा, छात्र की औपचारिक शिक्षा प्रारंभ करने से पूर्व उसके संस्कार पक्ष को मजबूत करने के लिए अत्यंत आवश्यक है, इस कार्य को यह संस्था निरंतर करती आ रही है।

संस्था द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका “बालारुण” के 29 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसके माध्यम से संस्था की गतिविधियाँ समाज तक पहुँचेंगी। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संस्थान परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(इन्द्र सिंह परमार)

## बालारुण

### कार्यालय कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी

जिला-जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत  
पिन-482002

दूरभाष : +91 761 2624100 (का.)  
+91 761 2603333 (नि.)  
फैक्स : +91 761 2624200 (का.)  
E-mail : dmjabalpur@mp.gov.in  
Website : www.jabalpur.nic.in



Office of the Collector & District Magistrate  
District Jabalpur, Madhya Pradesh, India  
Pin - 483 002

Phone : +91 761 2624100 (O)  
+91 761 2603333 (R)  
Fax : +91 761 2624200  
E-mail : dmjabalpur@mp.gov.in  
Website : www.jabalpur.nic.in



कर्मवीर शर्मा  
कलेक्टर  
एवं जिला दण्डाधिकारी  
जिला जबलपुर

## अंदेश

भोपाल, दिनांक : 24/01/2022

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि, शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर द्वारा विद्यालय की पत्रिका “बालारुण” का प्रकाशन किया जा रहा है। विद्यालय पत्रिका विद्यालय की वर्ष भर की समस्त गतिविधियों का दर्पण होती है, इसके माध्यम से छात्र-छात्राओं को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का सुअवसर तथा प्रोत्साहन मिलता है। मुझे आशा है पत्रिका में जिस संग्रहित सामग्री का प्रकाशन किया जाएगा, वह छात्र-छात्राओं के लिए ज्ञानवर्धक व उपयोगी होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं संस्थान की प्रगति के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित हैं।

( कर्मवीर शर्मा )  
कलेक्टर  
जिला जबलपुर

## बालारुण



घनश्याम सोनी  
जिला शिक्षा अधिकारी  
जबलपुर (म.प्र.)

कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी  
जिला जबलपुर  
फोन : 0761-2625670  
ई-मेल : deojbp@gmail.com

दिनांक - 16/12/2021

## अंदेश

मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हो रही है कि संस्थान द्वारा वार्षिक पत्रिका “बालारुण” के 29 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका के प्रकाशन से मॉण्टेसरी गतिविधियों पर आधारित खेल एवं शैक्षणिक पद्धति, प्यारे बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिक्षण की मॉण्टेसरी पद्धति नई शिक्षा नीति 2020 के साथ मिलकर विद्यार्थियों के विकास के सम्पूर्ण आयामों को और भी पुष्टि व पल्लवित करने में सहायक सिद्ध होगी।



( घनश्याम सोनी )



## प्राचार्य की कलम से...



“सुमति कुमति सब के उर रहहीं।  
नाथ पुरान निगम अस कहहीं॥  
जहाँ सुमति तहं सम्पत्ति नाना।  
जहाँ कुमति तहं विपत्ति निदाना॥”

अर्थात् सुबुद्धि और कुबुद्धि सभी के हृदय में रहती हैं। जहाँ सुबुद्धि है वहाँ नाना प्रकार की संपदाएँ रहती हैं, और जहाँ कुबुद्धि है वहाँ अनेक प्रकार की विपदाओं का वास होता है। यह संदेश जीवन के प्रत्येक क्षेत्र हेतु सटीक है। शिक्षा के क्षेत्र में विचार किया जाये तो, शिक्षा के मूल उद्देश्य ही वास्तव में शिक्षार्थी के लिये संपदायें हैं, जो उसके जीवन को प्रगतिशील और सुंदर बनाने हेतु महत्वपूर्ण हैं। शिक्षण क्षेत्र से जुड़े सभी लोगों के समक्ष सदैव यह पुण्य अवसर उपलब्ध रहता है, कि वे अपने विद्यार्थियों के अंदर उपस्थित सुबुद्धि को निरंतर पोषित करते रहें, ताकि कुबुद्धि स्वतः ही दमित हो सके, और विद्यार्थी श्रेष्ठ मार्गगामी होकर समाज एवं राष्ट्र को गौरवशाली स्वरूप प्रदान कर सकें।

यह निश्चय ही आनंदित और गौरवान्वित होने का विषय है कि, संस्कारधानी के हृदय स्थल में स्थित हमारा संस्थान उत्कृष्ट बाल शिक्षक तैयार करने के साथ ही बालकों की उत्तम शिक्षा के क्षेत्र में 67 वर्षों की दीर्घ अवधि पूर्ण कर चुका है। हमारी संस्था के प्रशिक्षणार्थी और विद्यार्थी समाज में जहाँ भी स्थापित हैं, उनमें संस्थान की संस्कृति और परम्पराओं का प्रभाव और इस संस्था के प्रति आदर का भाव स्पष्ट दृष्टिगत होता है।

आज संस्थान पत्रिका “बालारुण” के 29वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं संस्थान के समस्त स्टाफ सदस्यों, प्रशिक्षणार्थियों, विद्यार्थियों एवं उनके पालकों को शुभकामना प्रेषित करता हूँ, जिनके सहयोग से कोविड-19 की विषम परिस्थितियों में भी शासन के निर्देशानुसार संस्थान का निर्बाध संचालन संभव होता रहा।

भारतीय स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के अवसर पर “आजादी का अमृत महोत्सव” मनाते हुये उल्लास की बेला में “बालारुण” के 29 वें अंक के माध्यम से सभी को शुभकामनाएँ।

  
**डॉ. राममोहन तिवारी**  
**प्राचार्य**

एवं संयुक्त संचालक लोक शिक्षण, जबलपुर संभाग, जबलपुर



# संघादकीय



समय का प्रवाह निरन्तर है, और हम सभी की नियति है इस प्रवाह के साथ निरन्तर आगे बढ़ना। इस यात्रा के दौरान ही मनुष्य को अपने कर्मों की सार्थकता रेखांकित करनी होती है। वर्तमान परिदृश्य में कोविड-19 के कारण व्याप्त जड़ता, सहमापन, उदासी, चिंता जैसे नकारात्मक प्रभावों को तोड़ना समाज की प्राथमिकता है। आज्ञादी के अमृत वर्ष में भारत का प्रवेश हमें अवसर दे रहा है, नकारात्मकता और उदासी को त्याग उल्लास और उमंग की ओर मुखातिब होने का। इसी उद्देश्य को समक्ष रखते हुए एक छोटा सा प्रयास है 'बालारुण' का 29वां अंक।

हमारी संस्थान की पत्रिका 'बालारुण' संस्थान के अंतर्गत शिक्षा के तीन स्तरों- बाल मंदिर, प्राथमिक एवं शिक्षक-प्रशिक्षण को साहित्यिक अभिरुचि हेतु मंच प्रदान करती है। 'बालारुण' की विविधता ही इसका अनूठापन है।

'बालारुण' के इस अंक को हमने तीन भागों में विभाजित किया है- खण्ड अ मॉण्टेसरी घराना, खण्ड ब इंद्रधनुष, खण्ड स खुला आकाश, जिसके अंतर्गत क्रमशः स्टाफ सदस्यों, प्रशिक्षणार्थियों एवं प्राथमिक संवर्ग के बच्चों की रचनाएँ समाहित हैं। इन खण्डों के अंतर्गत मेक इन इण्डिया, स्वयं सिद्धा, नई शिक्षा नीति 2020, नहें पंख, चौथी की चौकड़ी, पंचम स्वर आदि छोटे-छोटे उपखण्ड आपके समक्ष प्रकट होकर अपनी सार्थकता सिद्ध करेंगे। हमारा प्रयास रहा है कि पत्रिका हेतु प्राप्त रचनाओं/संकलन में से अधिकतम को पूर्ण या आंशिक रूप से पत्रिका में स्थान अवश्य मिले। संस्थान प्राचार्य डॉ. राममोहन तिवारी (वर्तमान संयुक्त संचालक लोक शिक्षण, जबलपुर संभाग, जबलपुर) के मार्गदर्शन एवं नैतिक सहयोग ने पत्रिका के प्रकाशन को संभव बनाया। संपादक मंडल के सदस्यों के बहुमूल्य सुझावों को पत्रिका में स्थान दिया गया है। यहाँ मैं पत्रिका की उप-संपादक, संस्थान में मेरी वरिष्ठ दीदी बरखा खेरे के पत्रिका प्रकाशन कार्य में दिए गये विशेष सहयोग को रेखांकित करना चाहूँगी। संस्थान की सहा. प्राध्यापक दीदी अर्चना शर्मा को त्रुटि निवारण हेतु आभार एवं शुभकामनाएँ।

पत्रिका को इस कलेक्टर में प्रस्तुत करने हेतु एम.पी. प्रिंटिंग प्रेस को भी आभार एवं शुभकामनाएँ। हम 'बालारुण' के 28वें अंक की तरह 29 अंक का भी इलेक्ट्रॉनिक संस्करण प्रकाशित कर रहे हैं जिसका क्यू. आर. कोड पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर दिया जा रहा है। इस क्यू.आर. कोड को स्कैन कर इस अंक का ऑनलाइन आनंद, अधिकतम पाठक ले पाएँगे। इलेक्ट्रॉनिक संस्करण तैयार करने के लिए बी.टेक. छात्र, स्पंदन को उज्जवल भविष्य हेतु शुभाशीष।

'बालारुण' का 29वां अंक पाठकों को सौंपते हुए हर्षित और उत्साहित हूँ। आशा है आप इसे पसंद करेंगे।

अंजलि सक्सेना



डॉ. (श्रीमती) शशि सराफ, श्रीमती रजनी द्विवेदी, डॉ. राममोहन तिवारी (प्राचार्य), श्रीमती अंजलि सक्सेना,  
श्रीमती बरखा खरे, श्रीमती वंदना श्रीवास्तव



संस्थान का प्रवेश द्वार

पांचवीं 'अ'



प्राचार्य डॉ. राम मोहन तिवारी, प्राथमिक प्रभारी श्रीमती रजनी  
द्विवेदी एवं कक्षा शिक्षक श्रीमती रशिम द्वे

पांचवीं 'ब'



प्राचार्य डॉ. राम मोहन तिवारी, प्राथमिक प्रभारी श्रीमती रजनी  
द्विवेदी एवं कक्षा शिक्षक श्रीमती रशिम श्रीवास्तव

## बालाकृष्ण

### अनुक्रमाणिका

क्र.	विवरण	रचनाकार	पृष्ठ क्र.
1	संस्थान परिवार		
2	विद्यालयीन समितियाँ		
3	प्रतिवेदन		
4	बिदाई-शुभकामनाएँ		
5	स्वागत-अभिनंदन		
6	परीक्षा में सर्वोच्च स्थान डी.पी.एस.ई. प्रशिक्षण		
7	चमके सितारे		
8	संस्थान - अतिथियों की नजर में...		
9	शालापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण (डी.पी.एस.ई.)...	श्रीमती बरखा खरे (व्याख्याता)	11
10	मॉन्टेसरी विद्यालय परिदृश्य एक नजर में	श्रीमती रजनी द्विवेदी (प्रा. सं. प्रभारी)	13
11	संस्थान का जन्म दिवस गीत	श्रीमती शिबानी चटर्जी (संगीत शिक्षक)	14
<b>खण्ड-आ ( मॉन्टेसरी घराना )</b>			
12	सीखने की कला	श्रीमती अर्चना शर्मा (सहा. प्राध्या.)	15
13	खेल में उज्ज्वल भविष्य	विनोद पोद्दार (सहा. ग्रेड-3)	16
14	मेरा गीत	राजेश उपाध्याय, (लेखापाल)	16
15	स्वामी विवेकानंद-शिक्षा दर्शन एवं स्त्री शिक्षा	डॉ. (श्रीमती) शशि सराफ,(सहा. शि)	17
16	मेरा सेवा कालीन अनुभव	सुश्री रेखा शर्मा, (उच्च श्रेणी शिक्षक)	18
17	सरदार बल्लभ भाई पटेल	श्रीमती रश्मि दवे, (सहा. शि)	19
18	नई शिक्षा नीति में आधारभूत शिक्षा	श्रीमती शीबा खान, (सहा. शि)	20
19	कहो कि...	श्रीमती कुसुम पासी, (सहा. शि)	22
20	अकुलाहट	श्रीमती किरण महोबिया, (सहा. शि)	22
21	राष्ट्रीय आल्हा गीत	मीना चौरसिया, (प्रा. शि.)	22
22	जीवन और सागर	श्रीमती किरण महोबिया, (सहा. शि)	23
23	घर	आशा विश्वकर्मा (कार्या. सहा.)	23
24	सरस्वती वंदना	श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव (प्रा. शि)	23
25	पथिक	श्रीमती वंदना श्रीवास्तव (प्रा. शि.)	24
26	भूल न पाएंगे	श्रीमती रजनी द्विवेदी (प्राथ. प्रभारी)	24
27	शिक्षक : कौम की बुनियाद	श्रीमती आयशा अंसारी (सहा. शि)	24

## अनुक्रमाणिका

क्र.	विवरण	रचनाकार	पृष्ठ क्र.
<b>खण्ड-ब ( इंद्रधनुष )</b>			
28	भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में जबलपुर....	सरोज रावत कायंदे (प्रथम वर्ष)	25
29	स्वच्छ भारत आल्हा	मनीषा विश्वकर्मा (द्वितीय वर्ष)	26
30	कीमती सीपियाँ.....	अरुणिका पटेल (प्रथम वर्ष)	26
31	हाय रे नौकरी	नेहा परिहार (प्रथम वर्ष)	27
32	भारत की युवाशक्ति	मानसी विश्वकर्मा (द्वितीय वर्ष)	27
33	बुद्धिमान बुजुर्ग	पूनम सस्वार (द्वितीय वर्ष)	27
34	सुभद्रा जी की रचना – माला	अंकिता गिनारा (प्रथम वर्ष)	28
35	कुछ अच्छा होगा	साक्षी ठाकुर (प्रथम वर्ष)	28
36	बालगीत	गीत	29
37	मेरा भारत, स्वतंत्र भारत, शिक्षित भारत,....	अर्चना सोनी (द्वितीय वर्ष)	30
38	मेक इन इण्डिया – परिचय	शमा बेगम (द्वितीय वर्ष)	31
39	मेक इन इंडिया निवेश योजना	श्रुति दुबे (द्वितीय वर्ष)	31
40	मेक इन इंडिया लोगो	विनीता तिवारी (द्वितीय वर्ष)	32
41	मेक इन इंडिया में रोजगार के अवसर	रोशनी नायक (द्वितीय वर्ष)	32
42	मेक इन इंडिया में निर्यात संभावनाएँ	नीतू गौड़ (द्वितीय वर्ष)	32
43	नई शिक्षा नीति – प्रमुख बातें	रचना जाटव (द्वितीय वर्ष)	33
44	नई शिक्षा नीति में शाला पूर्व शिक्षा	अंजली चौधरी (द्वितीय वर्ष)	33
45	प्री-प्राइमरी स्कूल	मनीषा विश्वकर्मा (द्वितीय वर्ष)	34
46	बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN)	मधु बेन (द्वितीय वर्ष)	34
47	शिक्षा का अधिकार	प्रगति विश्वकर्मा (द्वितीय वर्ष)	34
48	विशेष आवश्यकता वाले बच्चे हेतु प्रावधान	अनुपमा चौरे (द्वितीय वर्ष)	35
49	उच्च शिक्षा में बदलाव	योगिता सकवार (द्वितीय वर्ष)	35
50	नई शिक्षा नीति-मेरा नज़रिया	दीपा कुमुद (द्वितीय वर्ष)	35
51	नारी का बंधन भी नारी....	पुष्पा माँझी (प्रथम वर्ष)	36
52	पढ़ना है....	साधना रघुवंशी (प्रथम वर्ष)	36
53	नारी तुम	रंजना पटेल (प्रथम वर्ष)	37

## अनुक्रमाणिका

क्र.	विवरण	रचनाकार	पृष्ठ क्र.
54	नारी के सपने	सपना विश्वकर्मा (प्रथम वर्ष)	37
55	जगत जननी : नारी	प्रीति सराठे (द्वितीय वर्ष)	37
56	माँ और बेटी	नेहा शाक्य (प्रथम वर्ष)	37
57	बेटी	सपना कोरी (प्रथम वर्ष)	38
58	कौन तय करेगा ?	सरोज रावत कायंदे (प्रथम वर्ष)	38
59	स्कूल से कॉलेज तक	राखी विश्वकर्मा (प्रथम वर्ष)	38
60	शेर से शेर	अफशाँ निगार (द्वितीय वर्ष)	38
<b>रघु—स ( खुला आकाश )</b>			
61	बुरी आदत	विधि तिवारी ( कक्षा 2 अ )	39
62	आम की टोकरी	शौर्य पटेल ( कक्षा-3 ब )	39
63	बिल्ली चूहा	अर्पिता लोधी ( कक्षा-2 ब )	39
64	कोयल	अनन्या शर्मा ( कक्षा-2 1 )	40
65	झंडा प्यारा	आराध्या प्रजापति ( कक्षा-2 अ )	40
66	प्यारी माँ	पायल कहार ( कक्षा-3 ब )	40
67	तितली रानी	आयुषी कैथवास ( कक्षा-2 ब )	40
68	तिरंगा	यशमिता देवी मरावी ( कक्षा-3 ब )	40
69	सूरज	डॉली सोनी ( कक्षा - 2 ब )	40
70	स्वच्छता	नितलेश सोंधिया ( कक्षा-2 अ )	40
71	मजेदार चुटकुले	चुटकुले	41
72	भगत सिंह	प्रियांशी कोरी ( कक्षा 4 ब )	42
73	क्रोध – विष	कृतिका रैकवार ( कक्षा 4 ब )	42
74	मॉटेसरी अपनी हमको प्यारी	आशी साहू कक्षा-4 अ)	43
75	स्वच्छता अभियान	शीहम अली, कक्षा-4 अ	43
76	बेटियाँ देवियाँ हैं बचा लीजिए	भक्ति झारिया कक्षा-4 ब	43
77	स्वच्छता	रैनक राजपूत, कक्षा-4 अ	43
78	चन्द्रशेखर आजांद	आस्था विश्वकर्मा, कक्षा 4 ब	44
79	चिट्ठी का सफर	सरिता झारिया, कक्षा 4 ब	44

## **बालाङ्गण**

### **अनुक्रमाणिका**

क्र.	विवरण	रचनाकार	पृष्ठ क्र.
80	सफाई	शिमरा (कक्षा 4 ब)	45
81	भारत के राष्ट्रपति	खुशबू ठाकुर (कक्षा 4 थी ब)	45
82	घमण्डी पेड़	अनुज पटेल (कक्षा 4 ब)	46
83	एक बार की बात है...	खुशबू झारिया (5 'अ')	47
84	बलिदानी राजा शंकरशाह और ....	पूर्वा बाजपेई (कक्षा 5 वीं अ)	48
85	बढ़े चलो	हरिप्रसाद पटेल (कक्षा-5 ब)	49
86	माँ	लक्ष्य अग्रहरी (कक्षा-5 अ)	49
87	प्यारे बापू	दिव्यांश बंशकार (कक्षा-5 ब)	49
88	हिन्दी	गौरी राजपूत (कक्षा-5 अ)	49
89	कोरोना वायरस (कोविड-19)	कशिश पवार (कक्षा 5 ब)	50
90	कल्पनाओं की उड़ान	बाल कक्ष से	51
91	प्रशिक्षणार्थी सूची	सूची	52

## संस्थान परिवार

### प्रशिक्षण संवर्ग

क्र.	नाम	पद	शैक्षणिक योग्यता
1.	डॉ. राममोहन तिवारी	प्राचार्य उपसंचालक संवर्ग	एम.एस.सी. (रसायन शास्त्र) एम.एड., एल.एल.बी., सी.सी.वाई, पी.एच.डी., गीतांजली डिप्लोमा (सुगम संगीत)
2.	श्रीमती अर्चना शर्मा	सहा. प्राध्या.	एम.एस.सी. (गणित) एम.एड.
3.	श्रीमती बरखा खरे	व्याख्याता	एम.ए. (अंग्रेजी) एम.एड.
4.	श्रीमती अंजलि सक्सेना	व्याख्याता	एम.एस.सी. (रसायन शास्त्र) एम.ए. (इतिहास) एम.एड.
5.	सुश्री रेखा शर्मा	उच्च क्षेणी शिक्षक	एम.ए. (समाज शास्त्र), बी.एड., पूर्व प्राथ. प्रशिक्षण प्रमाणपत्र

### कार्यालयीन स्टाफ

क्र.	नाम	पद	शैक्षणिक योग्यता
1	श्री राजेश उपाध्याय	लेखापाल	हायर सेकेण्डरी, हिन्दी+अंग्रेजी टाईपिंग
2	श्री विनोद पोद्दार	सहा.ग्रेड-3	एम.ए., हिन्दी टाईपिंग

### प्राथमिक संवर्ग

क्र.	नाम	पद	शैक्षणिक योग्यता
1	श्रीमती रजनी द्विवेदी	शिक्षक (प्रा. प्रभारी)	एम.ए., बी.एड. मॉटेसरी प्रशिक्षित
2	डॉ (श्रीमती) शशि सराफ	सहायक शिक्षक	एम.ए., एम.एड., एम.फिल, पी.एच.डी.
3	श्रीमती संगीता श्रीवास्तव	सहायक शिक्षक	एम.ए., बी.एड.
4	श्रीमती कुसुम पासी	सहायक शिक्षक	एम.ए., डी.एड.
5	श्रीमती रश्मि दवे	सहायक शिक्षक	बी.एस.सी., बी.एड.
6	श्रीमती शीबा खान	सहायक शिक्षक	एम.ए., बी.एड.
7	श्रीमती किरण महोबिया	सहायक शिक्षक	एम.ए., एम.एड.
8	श्रीमती मीना चौरसिया	प्राथमिक शिक्षक	एम.ए., डिप्टी
9	श्रीमती आयशा बानो अंसारी	प्राथमिक शिक्षक	एम.ए., बी.एड.
10	श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव	प्राथमिक शिक्षक	एम.ए., डी.एड.
11	श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव	प्राथमिक शिक्षक	एम.ए., डी.एड.

### चतुर्थ वर्ग

श्री शिव कुमार सौंधिया	श्रीमती विद्या कोल	श्रीमती आशा विश्वकर्मा	श्रीमती सरोज तिवारी
श्रीमती सावित्री चक्रवर्ती	श्रीमती मिथलेश तिवारी	श्री राशिद खान	श्री आनंद दुबे

## विद्यालयीन समितियाँ

### (1) क्रय समिति (प्रशिक्षण संघर्ग)

1. प्रभारी-श्रीमती अर्चना शर्मा (सहा.प्राध्यापक)
2. श्रीमती बरखा खरे (व्या.)
3. श्रीमती अंजलि सक्सेना (व्या.)
4. श्री विनोद पोद्दार (सहा.ग्रेड-3)
5. श्रीमती रजनी द्विवेदी (प्राथमिक प्रभारी)

### (2) संस्थान विकास समिति (प्रशिक्षण संघर्ग)

1. अध्यक्ष-संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र
2. सचिव-प्राचार्य (पदेन)
3. कोषाध्यक्ष-श्रीमती अर्चना शर्मा (सहा.प्राध्यापक)
4. सदस्य-श्रीमती अंजलि सक्सेना (व्या.)
5. प्रशिक्षणार्थी प्रतिनिधि-कु. अंजलि चौधरी  
-श्रीमती अनुपमा चौरे

### (3) संस्थान विकास समिति (वित्त समिति)

1. पदेन अध्यक्ष-प्राचार्य
2. कोषाध्यक्ष-श्रीमती अर्चना शर्मा (सहा.प्राध्यापक)
3. सदस्य-नगर कोषालय अधिकारी या उनका प्रतिनिधि
4. सदस्य-श्रीमती बरखा खरे (व्या.)
5. सदस्य-श्री विनोद पोद्दार (सहा.ग्रेड-3)

### (4) प्रवेश समिति (प्रशिक्षण)

1. प्रभारी-श्रीमती अर्चना शर्मा (सहा.प्राध्यापक)
2. सदस्य-श्रीमती बरखा खरे (व्या.)
3. सदस्य-श्रीमती अंजलि सक्सेना (व्या.)
4. सुश्री रेखा शर्मा (उ.श्रे.शि.)

### (5) परीक्षा समिति (प्रशिक्षण संघर्ग)

1. प्रभारी-श्रीमती बरखा खरे (व्या.)
2. सदस्य-श्रीमती अर्चना शर्मा (सहा.प्राध्यापक)
3. सदस्य-श्रीमती अंजलि सक्सेना (व्या.)

### (6) पुस्तकालय समिति (प्रशिक्षण संघर्ग)

1. प्रभारी-श्रीमती अंजलि सक्सेना (व्या.)
2. श्रीमती अर्चना शर्मा (सहा.प्राध्यापक)
3. श्रीमती बरखा खरे (व्या.)
4. सदस्य-श्री विनोद पोद्दार (सहा.ग्रेड-3)

### (7) ई.सी.सी.ई. प्रकोष्ठ

1. श्रीमती बरखा खरे (व्या.)
2. श्रीमती अंजलि सक्सेना (व्या.)
3. सुश्री रेखा शर्मा (उ.श्रे.शि.)

### (8) साहित्यिक/सांस्कृतिक समिति

1. प्रभारी-श्रीमती अंजलि सक्सेना (व्याख्याता)
2. श्रीमती रजनी द्विवेदी (प्राथमिक प्रभारी)
3. श्रीमती रश्मि दवे (सहा.शिक्षक)
4. श्रीमती शीबा खान (सहा.शिक्षक)
5. श्रीमती वंदना श्रीवास्तव (प्रा.शिक्षक)
6. श्रीमती आयशा बानो (प्रा.शिक्षक)

### (9) प्रवेश समिति (प्राथमिक संघर्ग)

1. श्रीमती रजनी द्विवेदी (प्रा. प्रभारी)
2. श्रीमती रश्मि दवे (सहा. शिक्षक)
3. श्रीमती आयशा बानो (प्रा. शिक्षक)
4. श्रीमती मीना चौरसिया (प्रा. शिक्षक)

## **बालाळण**

### **(10) परीक्षा समिति (प्राथमिक संवर्ग)**

1. श्रीमती रजनी द्विवेदी (प्रा. प्रभारी)
2. श्रीमती रश्मि दवे (सहा. शिक्षक)
3. श्रीमती शीबा खान (सहा. शिक्षक)

### **(11) अनुशासन समिति (प्राथमिक संवर्ग)**

1. श्रीमती कुसुम पासी (सहा.शिक्षक)
2. डॉ. श्रीमती शशि सराफ (सहा.शिक्षक)
3. श्रीमती किरण महोबिया (सहा.शिक्षक)

### **(12) छात्रावास समिति (प्रशिक्षण)**

1. डॉ. राममोहन तिवारी (उपसंचालक/प्रचार्य/संरक्षक)
2. प्रभारी-श्रीमती रजनी द्विवेदी (छात्रावास अधीक्षक)
3. खेलकूद/बैण्ड दल समिति (प्राथमिक)
4. श्रीमती कुसुम पासी (सहा.शि.)
5. डॉ. शशि सराफ (सहा.शि.)

### **(14) पर्यावरण गतिविधि/स्वच्छता समिति**

1. श्री राजेश उपाध्याय (लेखापाल)
2. श्रीमती कुसुम पासी (सहा.शिक्षक)
3. श्रीमती शीबा खान (सहा.शिक्षक)
4. श्रीमती किरण महोबिया (सहा.शिक्षक)
5. श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव (प्रा.शिक्षक)
6. श्रीमती मीना चौरसिया (प्रा.शिक्षक)

### **शाला प्रबंधन समिति ( प्राथमिक संवर्ग )**

**2021-22**

- |                           |                 |
|---------------------------|-----------------|
| 1. श्रीमती रजनी द्विवेदी  | सचिव            |
| 2. डॉ. श्रीमती शशि सराफ   | वरिष्ठ शिक्षक   |
| 3. श्रीमती अनामिका मिश्रा | वार्ड की पार्षद |

अधिभावक मण्डल के सदस्य -

- |                            |           |
|----------------------------|-----------|
| 1. श्री सुखदास चौधरी       | अध्यक्ष   |
| 2. श्रीमती छोटी बाई उड़के  | उपाध्यक्ष |
| 3. श्री आशीष कैथवास        | सदस्य     |
| 4. श्रीमती प्रभा वंशकार    | सदस्य     |
| 5. श्री अनिल प्रजापति      | सदस्य     |
| 6. श्रीमती पार्वती जायसवाल | सदस्य     |
| 7. श्री मोहन मरावी         | सदस्य     |
| 8. श्री विजय शर्मा         | सदस्य     |
| 9. श्री विजय कोरी          | सदस्य     |
| 10. श्री दीपक सिंह चंदेल   | सदस्य     |
| 11. श्री अजय नामदेव        | सदस्य     |
| 12. श्रीमती संगीता कछवाहा  | सदस्य     |



“प्रभो, बाल जीवन के रहस्यों को समझने में हमारी सहायता करो जिससे कि हम, उस बालक के स्वरूप को जान सकें, उसे प्यार कर सकें और तुम्हारे नीति नियमों के अनुसार एवं तुम्हारे दिव्य संकल्पों के अनुरूप कर सकें। यही प्रार्थना शिक्षकों को भी भगवान से करना चाहिए।”

-मारिया मॉन्टेसरी

## **प्रतिवेदन**

### डी.पी.एस.ई प्रवेश

**प्रभारी – श्रीमती अर्चना शर्मा, सहा. प्राध्यापक**

राज्य शिक्षा केंद्र मध्य प्रदेश भोपाल द्वारा सत्र 2021-22 से डी.पी.एस.ई. (विद्यालय पूर्व शिक्षा में डिलोमा) द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश हेतु एम.पी. ऑनलाइन द्वारा ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया आरंभ की गई है। पाठ्यक्रम में सिर्फ उन महिलाओं को प्रवेश दिया जाता है जिनकी आयु 1 जुलाई की स्थिति में न्यूनतम 18 वर्ष एवं अधिकतम 40 वर्ष हो। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए अधिकतम आयु सीमा 45 वर्ष है। हायर सेकेंडरी स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा 10+2 अथवा समकक्ष परीक्षा न्यूनतम 50 प्रतिशत प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण हो। प्रशिक्षण में मध्य प्रदेश शासन के नियमानुसार अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, विकलांग, भूतपूर्व सैनिक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के परिवार की महिलाएं, विधवा, परित्यक्ता आवेदकों के लिए स्थान आरक्षित है। प्रवेश हेतु अभ्यर्थी को एम.पी. ऑनलाइन पोर्टल पर पंजीयन कराना अनिवार्य है। कक्षा 12वीं के प्राप्तांकों के आधार पर तैयार मेरिट सूची के क्रम में अभ्यर्थियों को प्रवेश दिया जाता है।

### परीक्षा प्रक्रोष्ट

**प्रभारी – श्रीमती बरखा खरे, व्याख्याता**

संस्थान में पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण पत्रोपाधि का द्विवर्षीय महिला प्रशिक्षण विगत 6दशक से संचालित किया जा रहा है। यह नियमित प्रशिक्षण म.प्र. शासन स्कूल शिक्षा विभाग के अधीन तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त है। प्रथम वर्ष में 40 सीट तथा द्वितीय वर्ष में 40 सीट आवंटित है। पाठ्यक्रम का निर्धारण व परीक्षा आयोजन माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. भोपाल द्वारा किया जाता है। परीक्षाफल सदैव शत प्रतिशत रहता है, तथा माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा घोषित प्रदेश स्तरीय प्रावीण्य सूची में भी संस्थान की छात्राएँ स्थान अर्जित करती रही हैं। सत्र 2015-16 से इस प्रशिक्षण का नाम मा.शि.म. द्वारा डी.पी.एस.ई. (डिलोमा इन प्री स्कूल एजुकेशन) कर दिया गया है। मण्डल के नियमानुसार इस परीक्षा में पूरक की पात्रता नहीं होती। किसी विषय में अनुत्तीर्ण छात्रा को अगले वर्ष की वार्षिक परीक्षा के साथ ही द्वितीय अवसर प्राप्त होता है।

### साहित्यिक/सांस्कृतिक प्रकोष्ट

**प्रभारी – श्रीमती अंजलि सक्सेना, व्याख्याता**

संस्थान के विद्यार्थियों के साहित्यिक, सांस्कृतिक विकास के उद्देश्य से संस्थान में साहित्यिक सांस्कृतिक प्रकोष्ट है। इस प्रकोष्ट द्वारा समस्त गतिविधियों के व्यवस्थित और नियमित संचालन हेतु सत्रांभ में गतिविधियों हेतु एक कैलेण्डर तैयार किया जाता है। इसके अनुरूप गुरुपूर्णिमा, तिलक पुण्यतिथि, कृष्ण जन्माष्टमी, संस्थान का स्थापना दिवस, शिक्षक दिवस, गणेश उत्सव ( 10 दिवसीय ), गाँधी-शास्त्री जयन्ती, बाल दिवस, वार्षिक सांस्कृतिक, साहित्यिक एवम् क्रीड़ा गतिविधियाँ, गणतंत्र दिवस, बसंत पंचमी का आयोजन पारंपरिक रूप से किया जाता है। सत्र 2020-21 में कोविड महामारी का प्रभाव समस्त गतिविधियों पर भी पड़ा और गतिविधियाँ बच्चों की अनुपस्थिति में लघु स्वरूप में या फिर कुछ -कुछ ऑनलाइन स्वरूप में आयोजित हो सकीं। सत्र 2021-22 में कोविड-19 के नियंत्रित होते ही प्रशिक्षण की कक्षाएँ आरंभ हुईं। गणेश उत्सव का आयोजन शासन द्वारा निर्धारित एस.ओ.पी. का पालन करते हुए किया गया। शिक्षक दिवस का आयोजन भी पौधारोपण करके किया गया। नवरात्रि के अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों ने बड़े ही अनूठे स्वरूप में गरबा डांडिया खेला।

## **बालाङ्गण**

एक साथ ज्यादा भीड़ न एकत्र हो इस बात को ध्यान मे रखकर, इस वर्ष वार्षिक साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन एक साथ न कर, उन्हे टुकड़ों में आयोजित किया गया। सत्र में सासाहित्यिक रूप से शनिवार के दिन उत्तरार्द्ध के एक घंटे में कोई एक प्रतियोगिता आयोजित करने का निर्णय लिया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं की थीम रखी गई, “आजादी का अमृत महोत्सव”। रांगोली, मिट्टी के खिलौने बनाना, बाल गीत, कहानी, बाल खेल, मेमोरी रेस आदि प्रतियोगिताओं में प्रशिक्षणार्थीयों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। विजेता प्रतिभागियों को गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रमाण-पत्र वितरण का निर्णय लिया गया। प्राथमिक शाला के छोटे बच्चों की सुरक्षा की दृष्टि से उनकी कक्षाओं में ही छोटे-छोटे साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजन किए गए। चित्रकला प्रतियोगिता में बच्चों ने अद्भुत कौशल का प्रदर्शन किया। बच्चों द्वारा निर्मित, चयनित चित्रों को एक गैर शासकीय संगठन द्वारा संस्कारधानी के रानी दुर्गाविता संग्रहालय की कला वीथिका में आयोजित एक प्रदर्शनी में जन-अवलोकन हेतु रखा गया। हम यह प्रार्थना करते हैं कि आने वाले समय में मानव जाति को, कोविड-19 के विरुद्ध संघर्ष में, पूर्ण सफलता मिले, ताकि हमारे संस्थान की परंपरागत रौनक पुनः वापस लौट आए और यहाँ की साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियाँ पुनः अपना विशिष्ट आकार ले सकें।

### **बैण्ड दल**

**प्रभारी – श्रीमती किरण महोबिया**

शा. पूर्व प्रा. प्रशि. संस्थान में बैण्ड दल का संचालन सन् 1988में शुरू हुआ, जो कि आज तक संचालित है। समय-समय पर यहाँ के बैण्ड दल ने अनेक राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में सहभागिता की है, और प्रमाण-पत्र प्राप्त किए हैं जो अत्यन्त सराहनीय है।

शा. पूर्व प्रा. प्रशि. संस्थान (मॉण्टेसरी) मध्यप्रदेश की शासकीय संस्थाओं में एक मात्र ऐसी संस्था है जहाँ प्राथमिक वर्ग के कक्षा 2 से 5 तक के बच्चे बैण्ड दल का संचालन करते हैं। इसमें लगभग 7 वाद्ययंत्रों का वादन किया जाता है।

### **संस्थान छात्रावास**

**श्रीमती रजनी द्विवेदी, छात्रावास अधीक्षक**

हरियाली से आच्छादित संस्थान का छात्रावास मनोरम वातावरण में स्थित है। इस छात्रावास में मध्यप्रदेश के विभिन्न ज़िलों की प्रशिक्षणार्थी छात्राएँ निवास करती हैं। यहाँ अनेकता में एकता की मिसाल कायम करती सभी छात्राएँ मिलजुलकर दो वर्षीय मॉण्टेसरी प्रशिक्षण प्राप्त करती हैं।

छात्रावास में छात्राओं के लिये 12 कमरे प्रथम तल पर हैं। प्रत्येक कमरे में 02 छात्राएँ रहती हैं। कमरों में पर्याप्त पंखों व फर्नीचर की व्यवस्था है। वॉश एरिया भी पर्याप्त है जिसकी स्वच्छता के लिए स्वीपर है। पानी के लिये बोरिंग है एवं नगर-निगम से भी पानी की पूर्ण व्यवस्था है।

नीचे के तल में अधीक्षक आवास के साथ ही रसोईघर एवं भोजन-कक्ष है, जिसमें छात्राएँ अपना भोजन मिलजुलकर बनाती एवं खाती हैं। ऊपर पूजा घर भी है। छात्राएँ दोनों समय आरती पूजन एवं समय-समय पर त्यौहारों पर भजन कीर्तन भी करती हैं।

15 अगस्त एवं 26 जनवरी को छात्रावास में ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसे प्राचार्य द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। कोरोना काल में छात्रावास खाली हो गया था, किंतु इस वर्ष छात्राओं की उपस्थिति से पुनः छात्रावास भरा पूरा चहक रहा है। एकसाथ रहकर छात्राओं का सामाजिक एवं व्यवहारिक पक्ष भी मजबूत होता है एवं स्थानीय भाषा व खान-पान का भी मजा छात्रावास में मिलता है।

## बालांगण

### पुस्तकालय

प्रभारी - श्रीमती अंजलि सक्सेना, व्याख्याता

संस्थान में एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय है जो अनमोल पुस्तकों से सुसज्जित है। पुस्तकालय में लगभग 5900 पुस्तकें हैं, जिनमें हिन्दी एवं मराठी माध्यम की पुस्तकें हैं। शैक्षिक प्रशासन, शिक्षा सिद्धांत, मनोविज्ञान, विज्ञान, नाटक, उपन्यास, हस्तकार्य, पर्यावरण, बाल साहित्य आदि की भरपूर पुस्तकें यहाँ संकलित हैं। पुस्तकालय से संस्थान के प्रशिक्षणार्थी, शिक्षक, बच्चों एवं अन्य स्टाफ सदस्यों को उनकी आवश्यकता एवं रूचि के अनुरूप पुस्तकें अधिकतम 15 दिन के लिए प्रदान की जाती हैं। प्रतिवर्ष उपलब्ध राशि से एवं आवश्यकतानुसार दैनिक समाचार पत्र एवं पुस्तकें क्रय की जाती हैं।

### राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन में संस्थान की भूमिका

क्र.	सत्र	कार्य का विवरण	आयोजन स्थल	आयोजन दिनांक	सहभागी का नाम
1	2019-20	ECCE हेतु गतिविधि पुस्तिका निर्माण में सहभागिता	राज्य शिक्षा केन्द्र मध्यप्रदेश भोपाल	22.12.2019 से 24.12.2019	श्रीमती अंजली सक्सेना श्रीमती बरखा खरे
2	2020-21	सी.एम. राईज, (ECCE) कार्यशाला में सहभागिता	राज्य शिक्षा केन्द्र मध्यप्रदेश भोपाल	10.11.2020	श्रीमती बरखा खरे
3	2020-21	महिला एवं बालविकास की NEP 2020 ECCE कार्यशाला में सहभागिता	भोपाल	26.11.2020	श्रीमती बरखा खरे
4	2020-21	शिक्षक संदर्शिका - प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा-सीखने की बुनियाद का निर्माण किया	शिशु शिक्षा प्रकोष्ठ राज्य शिक्षा केन्द्र मध्यप्रदेश भोपाल	03.02.2021 से 07.02.2021 तक	श्रीमती बरखा खरे
5	2020-21	जिला स्तरीय NEP 2020 क्रियान्वयन में सुझाव हेतु जिला स्तरीय दल में प्रतिनिधित्व	जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय जबलपुर	मार्च 2021 से अद्यतन	श्रीमती अंजली सक्सेना
6	2020-21	ECCE/ आंगनबाड़ी शिक्षकों के ऑनलाइन प्रशिक्षण हेतु 6 माह का कोर्स डिजाइन कर राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल को प्रेषित किया गया।	PPTI JABALPUR	24 मार्च 2021	श्रीमती अर्चना शर्मा श्रीमती बरखा खरे श्रीमती अंजली सक्सेना सुश्री रेखा शर्मा
7	2021-22	NCERT विद्या प्रवेश आधारित एक माह के स्कूल रेडिनेस प्रशिक्षण कार्यक्रम को तैयार कर राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल को प्रेषित किया गया।	PPTI JABALPUR	18 नवम्बर 2021	श्रीमती अर्चना शर्मा श्रीमती बरखा खरे श्रीमती अंजली सक्सेना सुश्री रेखा शर्मा
8	2021-22	जबलपुर जिले के समस्त संकुल प्रचारों को NEP 2020 के लिए क्रियान्वयन संबंधी कार्यशाला में प्रारंभिक शिक्षा पर पॉवर पॉइंट प्रस्तुति	उत्कृष्ट विद्यालय जबलपुर	08 जनवरी 2022	श्रीमती अंजली सक्सेना
9	2021-22	स्कूल रेडिनेस संबंधित कार्यशाला में सहभागिता	भोपाल	14 जनवरी से 15 जनवरी 2022	श्रीमती बरखा खरे



## ❖ ❖ ❖ विदाई-शुभकामनाएँ ❖ ❖ ❖

(2017-2021)

### प्रशिक्षण संवर्ग से सेवानिवृत्त

- (1) डॉ. सुनीता केशरवानी (व्याख्याता)
- (2) सुश्री पापरी गुहा नियोगी (उ.श्रे. शिक्षक)
- (3) श्रीमती शिबानी चटर्जी (संगीत शिक्षक)
- (4) श्री एस.एस. कछवाहा (सहायक ग्रेड 2)

### प्रशिक्षण संवर्ग से स्थानांतरित

- (1) श्रीमती संध्या गढ़ेवाल - (लेखापाल)
- (2) श्रीमती कविता सोनी - (सहायक ग्रेड 2)
- (3) श्री जय साहू - (स्टेनो)

### प्राथमिक संवर्ग से सेवानिवृत्त

- श्रीमती कृष्णा सोलंकी (सहा. शिक्षक)
- श्रीमती मनीषा लघाटे (सहा. शिक्षक)
- श्रीमती निधि केलकर (सहा. शिक्षक)
- सुश्री अर्चना श्रीवास्तव (सहा. शिक्षक)
- श्रीमती साधना शुक्ला (सहा. शिक्षक)
- श्रीमती शैल गुप्ता (सहा. शिक्षक)
- श्रीमती ऊषा जैन (सहा. शिक्षक)

## स्वागत-अभिनंदन

### • प्राथमिक संवर्ग •

- (1) श्रीमती किरण महोबिया (सहा. शिक्षक) (2) श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव (प्राथमिक शिक्षक)
- (3) श्रीमती वंदना श्रीवास्तव (प्राथमिक शिक्षक) (4) श्रीमती मीना चौरसिया (प्राथमिक शिक्षक)
- (5) श्रीमती आयशा अंसारी (प्राथमिक शिक्षक)

### • कार्यालय •

- (1) श्री राजेश उपाध्याय (लेखापाल)

## लघुकथा

अनंतपुर में राजा विष्णुदत्त का राज था। अनंतपुर की सीमा के पास गंगाराम नामक शिल्पी पत्थर की सुंदर मूर्तियाँ बनाते थे। एक बार राजा वहाँ से गुजरे और वे मूर्तियों को देखकर मुग्ध हो गये। उन्होंने गंगाराम से अपनी मूर्ति बनाने को कहा। गंगाराम ने मूर्ति बनानी प्रारम्भ कर दी, परन्तु अनेक प्रयासों के बाद भी वह सफल न हो सके और हारकर बैठ गये। तभी उनकी नजर एक चींटी पर पड़ी जो एक शक्कर के दाने को अपने बिल में ले जाना चाह रही थी। परन्तु बार-बार गिर जा रही थी, लेकिन उसने प्रयास नहीं छोड़ा और अंततः वह सफल हो गई। इसे देखकर गंगाराम ने सोचा कि जब निरंतर प्रयास से यह छोटी सी चींटी सफल हो सकती है तो मैं क्यों नहीं? अब गंगाराम पुनः उत्साह पूर्वक राजा की मूर्ति बनाने लगे और सफल हुए। राजा मूर्ति देखकर खुश हो गये और उन्होंने गंगाराम को राजशिल्पी घोषित कर दिया।

## बालाकृष्ण

### परीक्षा में सर्वोच्च स्थान डी.पी.एस.ई. प्रशिक्षण

कक्षा	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21
डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष	निर्मला वर्मा	कामिनी ठाकुर	पूजा कुशवाहा	दयमयंती कोरी

#### प्रथमिक कक्षा

कक्षा	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21
पांचवी 'अ'	समीर पटेल 1078	अदिति गुप्ता समीक्षा पटेल 1050	वासु पासी 545	प्रियांजलि 410
पांचवी 'ब'	शाची गौतम 1066	बुलबुल आत्मा 1058	विशाल दुबे 534	प्राची पटेल 449

USO (General Knowledge Exam) - 2017-18

#### चमके सितारे

समीर पटेल  
5 वर्षीय  
'अ'  
नकद पुरस्कार प्राप्त

देवांश पटेल  
5 वर्षीय  
'अ'  
नकद पुरस्कार प्राप्त

#### वर्णमाला गीत (स्वर)

अर्चना सोनी

डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष

अनार में है मोती से दाने।  
आम लगे हम झटपट खाने॥  
इंजन खींच रहा है गाड़ी।  
झैख चूसता है पनवाड़ी॥  
उस्तरे से बनते हैं बाल।  
ऊनी स्वेटर पहने लाल॥  
ऋषि करते ईश्वर का ध्यान।  
एक तारा कर गाते गान॥  
ऐरावत की देखें शान।  
ओखल में कूटेंगे धान॥  
औजारों का है ये काल।  
अंगूरों से होते लाल॥  
अ: से करते हाः हाः हाः

#### वर्णमाला गीत (व्यंजन)

कमलों की है शोभा न्यारी।  
खरगोशों की है लाचारी॥  
गमलों में हैं फूल खिले।  
घर में ही सुख शांति मिले॥  
गंगा का है मीठा पानी।  
चटाई पर सोती है नानी॥  
छतरी लेकर आया सावन।  
जहाज चलाता राम खिलावन॥  
झरनों में बहता है जल।  
खंजन होते हैं चंचल॥  
टमाटर बड़े और हैं लाल।  
ठठेरा बना रहा है थाल॥  
डलिया देखो पूरी है खाली।  
ढक्कन बंद कर रही है आली॥  
दवात से लिखती है रानी।  
धनुष भंग मुनि सब हर्षानी।

नल से बहता छल-छल पानी॥  
पतंग छू रही है आकाश।  
फल करते रोगों का नाश॥  
बगड़ के हैं पेड़ खड़े॥  
भवन बने हैं बड़े-बड़े॥  
मछली तैर रही जल अंदर।  
यज्ञ हो रहा कितना सुंदर॥  
रथ में बैठा राजकुमार।  
लट्टू खेले नंद कुमार॥  
वन में उगती है हरियाली।  
शहनाई बज उठी निराली॥  
घट्कोणों से बना है चित्र।  
सपेरा है साँपों का मित्र॥  
हल से जोते खेत किसान।  
क्षत्रिय होते हैं बलवान।  
त्रिशूल से शोभित शिव हाथ।  
जानी झुका रहा है माथ॥

# ବାଲୋକଣ

## संस्थान - अतिथियों की नजर में...

**श्रीमती हर्षिका सिंह I.A.S. (C.E.O) Z.P**

The functioning of the school is say the least Exceptional. Great devotion of teachers and amazing vibes in the entire school makes it an ideal school. Best wishes to the entire team to carry on the good work!!

AKS  
03/10/2018  
CHIEF GUARD OFFICER  
CEO, SP  
JALALPUR.

न्यामूर्ति श्री विवेक स्नासिया म.प्र. उच्च न्यायालय

आज दि. 30.08.2021 प्रवृत्ति प्रमाणित करने वाले अधिकारी के सहित योग्य साथ आगा है।

अंग देखे मर डलना इसका काम किए हैं  
जिसे आदों में छिकना अमर्गत नहीं है। लक्षण की पुरानी  
रातों को अभी तक युक्तिपूर्ण रखा गया है उनके जिसे  
प्राचीन ती तक करने सकता था वह इसके साथ भी बहुत से  
अधिक है। यथा अभी का उत्तम अवसर अपने घरहाँसी है  
गौं सारे देशी बड़ी बहुत असति तोड़ता व श्रीमति र श्रीति-  
गी आदे के लिने अर्जुन तेजावा हो गया। ५

पुरानी यादों को तज्ज्ञ बताने के लिए  
आप सभी हाथों को आच्छागद

  
Justice Vivek Rastogi  
High Court J.M.P.  
Ap. 30/8/21.

## न्यायमूर्ति श्री संजय द्विवेदी म.प्र. उच्च न्यायालय जबलपुर

It is my pleasure to visit this school. I have seen great devotion of teachers towards school that makes student extra ordinary. Great.

Tus. Sarjay Survival  
15/9/18

**High Performance Prandtl**

# श्री ए.के. चौरगडे उपसंचालक, लोक शिक्षण संचालनालय

आसकीज यह प्रश्नामेंक अधिकारों संस्थान की वालिक राष्ट्रपति, साहित्यिक श्रीडा प्रतिपोदित हो चुकीकिए गये का सौन्दर्यम् प्राप्त हुआ। इस सौन्दर्य में विद्यार्थी संस्कारवान्, उपेक्षन व अनुभावित है। विद्यार्थी का जागरूकता राष्ट्रपत्राधीन एवं अधिकारी है। विद्यार्थी लग्नपति के दास अपने राजिकों का अधिकारी कर रहे हैं। उन दासी के लिये प्रश्नामें के रूप में श्री तिलकीजी का कार्य बताया गया है।

८५ २०.१२.१४  
ए के गोरांडी  
३७ वायालक  
गोरा बिहारी गोरांडी

# ବାଲୋକଣ

## **संस्थान - अतिथियों की नजर में...**

# श्री भरत यादव I.A.S. कलेक्टर जबलपुर

କୋର୍ଟ ଫିଲେଖାନେ 22-01-2022 ଦେଇ ଶାକାଖାନା ଏହି ଅଧିକାର ପରିବଳ ସମ୍ବନ୍ଧରେ  
 ଅଧିକାର ପରିବଳ ଏହି ଆଧୁନିକ ଏକ ପଦ ହେଉଥିଲା ଏହା କିମ୍ବା ଏହା ଏକ ପଦ  
 ହେଉଥିଲା ଏହା ଏକ ଆଧୁନିକ ପଦ ହେଉଥିଲା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା  
 ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା  
 ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା  
 ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା  
 ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା  
 ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା

۳۱۴

संस्कृत विद्या  
विद्यालय  
(इन्डियन प्रेस )

## श्री विनय सक्सेना विधायक उत्तर मध्य विधान सभा क्षेत्रजबलपुर

श्रीम-पूजे याद्य अद्वितीय शंख के भवित्व में सामृद्धि है।  
भास्य भी उक्ती तरह विवाह परिवर्तन वस्त्रों के उत्तरे  
सिद्धिनि संघ लगातार से उक्त गविष्यु हेतु जाग  
उप देते हैं। भृ-शास्त्र की इनकी हेतु शुभ्राणाम्  
उत्तम है। ऐसंप भी उपासन करेंगा।

१९८० मेरा विद्यालय  
११/२/१९  
मानसिंह विद्यालय, अंतर्राष्ट्रीय  
विद्यालय.

## श्रीमती सृष्टि प्रजापति, डिप्टी कलेक्टर

It was a pleasure to visit your Institution. I was totally overwhelmed with the welcome that children gave to me. Devotion of teachers and enthusiasm of children is remarkable. Best wishes to achieve more success. Keep enlightening little minds to make beautiful future!

Srichaitri Prajapati  
Deputy Collector  
Tabalpur.

श्री राजेश तिवारी, संयुक्त संचालक लोकशिक्षण जबलपुर संभाग

जबलपुर

ପ୍ରାଚୀନ ଏହି ପ୍ରାଚୀନ ଅଧିକାରୀ ଦ୍ୱାରା ତଥା ଲାଲ-ଗୋପାଳେ ତେ ବିଜ୍ଞାନ ଶକ୍ତି ଅନୁଭବ କରି  
ମୁହଁନ୍ତିର୍ଣ୍ଣ ପାଇଯାଇଲେ ମେ ଦେଖ-ଦେଖ ଦେଇବାକିମୁହଁ ବାବୋ, ଆଶର୍ଵ ପରାମରିଣ୍ଡର କେବେ ଲେଖିଲୁଗା ନାହିଁ  
କୁବା କୁବା ଦ୍ୱାରା ଲେଖିଲା କାହାର କି ଏକଲଙ୍ଘ କୁରିଲିପିର ବଳେ ମେ କୁବା ଦ୍ୱାରା କେ ନାହିଁ କିମ୍ବା କିମ୍ବା  
ଆଶର୍ଵ ଅନୁଭବିଲେ, କୁବାର ମାନ୍ୟରେ ଏହି ସମୟ ମେ ଆଶର୍ଵରେ ଅନୁଭବ କରିଲା ତଥା ଏହି କୀମାନରେ  
ଲିପି ଦ୍ୱାରା ଲିଖିଲା ଏହି ଅନୁଭବ ଏହି ରାମନେତ୍ରରେ ଲିଖାଯାଇଲା ଏହି ବାହିକା କାହିଁ ଦ୍ୱାରା ଲିଖାଯାଇଲା  
ଏହି ଦ୍ୱାରା ଲାଲ-ଗୋପାଳ କରାଯାଇଲା, ମହାନଙ୍କାନ୍ତରେ



## शालापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण (डी.पी.एस.ई.) - वर्तमान परिदृश्य

शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर में शाला पूर्व शिक्षा में डिप्लोमा (D.P.S.E.) पाठ्यक्रम पिछले 67 वर्षों से संचालित किया जा रहा है। इस नियमित प्रशिक्षण में मध्यप्रदेश की मूल निवासी महिलाएँ प्रशिक्षण प्राप्त करती हैं। इनके लिये प्रवेश की आयु सामान्य वर्ग हेतु अधिकतम 40 वर्ष व आरक्षित वर्ग के लिये अधिकतम 45 वर्ष निर्धारित है। सभी अभ्यर्थियों के लिये न्यूनतम आयु 18वर्ष है। पाठ्यक्रम का निर्धारण माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. भोपाल द्वारा किया जाता है व परीक्षाओं का आयोजन भी माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा ही किया जाता है। इस कोर्स की अवधि दो वर्ष है। शुल्क शासन द्वारा काफी कम निर्धारित है। अन्य शहरों की छात्राओं के लिये परिसर के अंदर ही सुव्यवस्थित महिला छात्रावास भी है, जिससे छात्राओं को काफी सुविधा है। वर्तमान में यह प्रशिक्षण पूर्णतः गैर सेवारत् महिलाओं के लिये है। प्रशिक्षण का आधार मॉटेसरी पद्धति है, किन्तु वर्तमान में म.प्र. में नई शिक्षा नीति 2020 को भी ध्यान में रखते हुए उसमें, उल्लेखित लक्ष्यों के अनुसार कुशल नर्सरी शिक्षक तैयार किये जा रहे हैं। प्रशिक्षण की समस्त अकादमिक गतिविधियों के व्यवस्थित, संचालन हेतु शालेय शैक्षिक कैलेण्डर, सत्र के आरंभ में ही तैयार कर लिया जाता है जिसमें प्रशिक्षण प्रथम व द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न व्यवहारिक कार्यों को माहवार विभाजित कर एक सत्रगत् योजना बनायी जाती है। प्रशिक्षणार्थियों को भी सत्रारंभ में इसकी जानकारी दी जाती है। इन नियमित अकादमिक कार्यों के अलावा उच्च कार्यालय के निर्देशानुसार भी कई राज्य स्तरीय कार्यों, अकादमिक कार्यों में प्रशिक्षण संस्थान का सहयोग व मार्गदर्शन रहता है। इस सत्र (2021-22) में संस्थान द्वारा राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के आदेश पर दो

प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किये गए। (1) शाला पूर्व शिक्षा में प्रमाण पत्र 6 माह का ऑनलाइन कार्यक्रम (2) आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं हेतु प्रशिक्षण मॉड्यूल 1 माह का जो विद्या प्रवेश (NCERT) नई दिल्ली पर आधारित है। संस्थान द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को नगर की अन्य नर्सरी शालाओं में (फील्ड विजिट) क्षेत्र भ्रमण कराकर उसका प्रतिवेदन तैयार कराया जाता है। प्रशिक्षण की छात्राओं को बाल मन को जानने व उन्हें शिक्षा में योगदान देने हेतु केस स्टडी करने का अभ्यास कराया जाता है। बाल शिक्षण हेतु आवश्यक बाल स्वास्थ्य, पोषण, सुरक्षा व प्राथमिक चिकित्सा आदि की व्यवहारिक योग्यता भी विकसित की जाती है। संस्थान में महिलाओं के स्वास्थ्य को समुन्नत करने हेतु कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, जिसमें अनुभवी महिला चिकित्सकों द्वारा जाँच, व व्याख्यान भी समय-समय पर आयोजित किये जाते हैं। प्रशिक्षण छात्राओं को 3-6 वर्ष के बालकों की विकास अनुरूप गतिविधियों के अभ्यास हेतु आँगनबाड़ी केन्द्रों का भ्रमण कराया जाता है व शिक्षण विधियों का आदान-प्रदान किया जाता है। समाज में 3-6 आयु समूह के अलग-अलग श्रेणी के बालकों के समूह होते हैं उन्हीं में से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की संस्थाओं में प्रशिक्षण की छात्राओं द्वारा जाकर विविध गतिविधियाँ करायी जाती हैं, व उनकी शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप का अवलोकन भी किया जाता है।

### कोविड-19 और प्रशिक्षण का परिवर्तित स्वरूप

आज जब भी हम एकांत में बैठकर बीते दो वर्षों के बारे में सोचते हैं तो सब कुछ, बदला-बदला सा नज़र आता है, फिर चाहे वह हमारी सोच, व्यवहार या कार्यशैली ही हो। जिसका कारण है वह महामारी, जिसका कभी नाम भी नहीं सुना था-कोविड-19। इस महामारी ने मानो सारी दुनियाँ को ही बदल कर रख दिया। ऐसी विषम

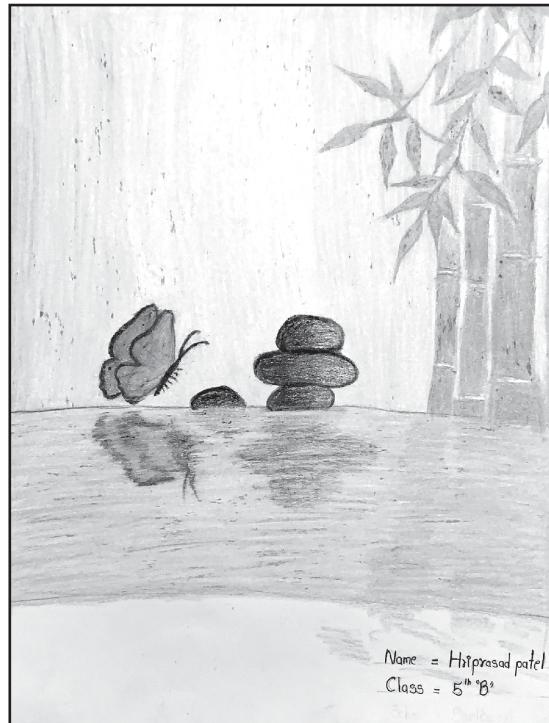
## बालाजी

परिस्थितियों के बीच हम सभी को अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन करना किसी चुनौती से कम न था। मार्च 2020 में कोरोना ने गति पकड़ी व पहली बार इतना बड़ा और लम्बी अवधि का लॉकडाउन लगा। यह हमारा सौभाग्य था कि उस सत्र 2019-20 की वार्षिक परीक्षाएँ 18 मार्च तक सम्पन्न हो चुकी थीं, जिससे वह सत्र प्रभावित नहीं हुआ। जुलाई में 2020-21 सत्र के प्रवेश होने थे। जिसका विज्ञापन मई के स्थान पर जुलाई माह में प्रकाशित हुआ। प्रवेश लेने संस्थान तक पहुँचने में भी कठिनाई थी, चैंकि नियमित बसों का संचालन उस समय तक नहीं हो रहा था। उस सत्र की प्रवेश प्रक्रिया माह सितम्बर 2020 में सम्पन्न हुई। अब भी कोरोना अपने पाँव पसारे ही था इस स्थिति में प्रशिक्षण को सुचारू रूप से संचालित रखने हेतु हमने ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों तरह की योजना बनाई। तत्पश्चात् प्रशिक्षणार्थियों से फोन नं. लेकर एक व्हाट्सअप ग्रुप तैयार किया व ऑनलाइन कक्षाएँ गूगलमीट पर भी संचालित की गयीं। यह सिलसिला कुछ समय चला फिर छात्राओं के आग्रह पर हमने व्यवहारिक कार्य व अभ्यास शिक्षण हेतु प्रतिदिन 3 घण्टे ऑफलाइन कक्षा कोविड एस.ओ.पी. को ध्यान में रखते हुए संचालित की। अब फिर समस्या थी गतिविधि आधारित शिक्षण अभ्यास हेतु 3-6 वर्ष के बालकों की अनुपलब्धता। स्कूल अब भी बंद थे। तब हमने ऐसी परिस्थिति में अभ्यास शिक्षण हेतु छात्राओं को ही बालक बनाकर कक्षाओं का विधिवत संचालन किया। इस बीच माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. द्वारा डी.पी.एस.ई. वार्षिक परीक्षा का समय विभाग चक्र घोषित किया गया। परीक्षाएँ मार्च में शुरू होनी थीं। इससे पहले कि परीक्षाएँ प्रारंभ होतीं, कोविड-19 की दूसरी लहर आ गयी व शासन द्वारा लॉक डाउन की घोषणा कर दी गयी। परीक्षाएँ स्थगित हो गयीं। पहली बार मण्डल के आदेशानुसार इस सत्र की परीक्षाएँ जुलाई माह में ओपन बुक पद्धति से आयोजित हुईं।

सत्र 2021-22 से डी.पी.एस.ई. प्रशिक्षण में प्रवेश

हेतु ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ हुई व अन्य शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के साथ संयुक्त विज्ञापन दैनिक समाचार पत्रों में अगस्त में प्रकाशित हुआ, जिसके बाद चयनित अध्यर्थियों की आवंटित सूची प्रकाशित हुई। सूची के आधार पर संस्थान में प्रवेश दिया गया। परीक्षा आवेदन फार्म भी एम.पी. ऑनलाइन द्वारा भरे गये। परीक्षा आवेदन फार्म भरने की प्रक्रिया 15 दिसंबर तक पूर्ण हुई। प्रशिक्षण सत्र 2021-22 का सह-संचालन, क्षेत्र भ्रमण का कार्यक्रम परिस्थिति के अनुसार संचालित किया गया। नई शिक्षा नीति 2020 में शाला पूर्व शिक्षा को अनिवार्य शिक्षा किये जाने के कारण इस प्रशिक्षण का महत्व और भी बढ़ गया है।

आशा है कि संस्थान के प्रयास भविष्य में समाज के लिये अत्यंत फलदायी होंगे। यहाँ से प्रशिक्षित बाल शिक्षक समाज में अपना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेंगी व बालकों को श्रेष्ठ नागरिक बनाने में सहयोगी होंगी।



## मॉन्टेसरी विद्यालय परिदृश्य एक नज़र में



श्रीमती रजनी द्विवेदी  
प्राथमिक संवर्ग प्रभारी

शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान (मॉन्टेसरी) में आपका स्वागत है। शाला प्रांगण का खूबसूरत रमणीक दृश्य, गोल बगीचे के चारों ओर लगे हुये झूले, फिसल पट्टी, बच्चों को अत्यधिक प्रिय बच्चों की किलकारियों से गूँजता खेल का मैदान। कक्षाओं में सीखते सिखाते छात्र, एक स्नेहिल वातावरण, दीदियों की प्यार भरी फटकार, अनुशासन में रहकर दक्षता को हासिल करने की होड़ में अपनी उपलब्धि स्तर को बढ़ाते छात्र, कला में अपनी-अपनी निपुणता दिखाते और अच्छा करने की चाह, सांस्कृतिक, साहित्यक, खेलकूद गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते बच्चे, साथ में अपनी सहभागिता एवं मार्गदर्शन देती दीदियाँ। एक खुशनुमा वातावरण में हमारी शाला का परिदृश्य बहुत ही मनमोहक एवं सुहावना लगता है।

किन्तु मार्च 2020 कुछ ऐसी त्रासदी लेकर आया कि वार्षिक मूल्यांकन के समय पर बच्चे परीक्षा का हिस्सा भी नहीं बन पाये। हमारे मासूम बच्चे अपने-अपने घरों में कैद हो गये। संस्थान, जो बच्चों की किलकारियों से गूँजता रहता था, वहाँ निःशब्दता छा गयी एवं सूना पड़ा परिसर। शिक्षा विभाग ने फिर भी हार नहीं मानी और घर-घर बच्चों को शिक्षा देने का संकल्प लिया।

सर्वप्रथम सभी कक्षाओं में बच्चों का मोबाइल नं. लेकर गृह प्रशिक्षण का लगातार करवाया गया और सीखने की गतिविधियों को अंजाम दिया गया, जिसमें छात्रों व अभिभावकों ने अपनी सहभागिता दी। कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त छात्रों एवं उनके अभिभावकों को भी इस वर्ष प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। इस दरमियान महत्वपूर्ण योजनाओं के माध्यम से भारत के भविष्य को निखारने के लिए शासन द्वारा निष्ठा प्रशिक्षण आयोजित कर शिक्षकों का क्षमता सर्वन्दर्भन किया गया।

### 2020-21 में दर्ज संख्या

	बालक	बालिका	योग
प्राथमिक वर्ग	138	162	308
बाल मंदिर	33	27	60

### 2021-22 में दर्ज संख्या

	बालक	बालिका	योग
प्राथमिक वर्ग	142	180	322
बाल मंदिर	72	75	144

“शिक्षा एक अंतहीन यात्रा के समान है जो जीवनपर्यन्त साथ रहती है।”

## बालाकृष्ण

कोविड-19 से कुछ निज़ात मिलने के बाद नया सत्र आरंभ हुआ, जिसमें पिछले सत्र की अपेक्षा छात्रों की दर्ज संख्या में बढ़ोत्तरी रही है। यह शाला की उपलब्धि की ओर संकेत करती है।

वर्तमान सत्र में शासन के निर्देशानुसार कक्षाओं को आरंभ किया गया जिसमें आरंभ में ही राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वे की परीक्षा कक्षा 3 एवं 5 में आयोजित की गई, जिसके लिए लगातार अभ्यास प्रश्न पत्रों का अभ्यास करवाया गया। इसी अभ्यास के द्वारा 2 वर्षों से आई रिक्तता पूर्ण हुई। अभ्यास परिणाम के द्वारा समीक्षा भी की गयी।

बच्चों की नियमित उपस्थिति आरंभ होते ही सभी कक्षाओं में सीखने सिखाने की प्रक्रिया को आरंभ किया गया, जिससे दक्षता में आयी रुकावट को गति प्राप्त होने लगी। गतिविधि आधारित शिक्षण से बच्चे अवधारणा, कौशल व दक्षता को प्राप्त कर जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रहे हैं।

कक्षा 3 से 5 के बच्चों के लिये दक्षता उन्नयन हेतु विषयवार अभ्यास पुस्तिका एवं कक्षा शिक्षकों के मूल्यांकन के आधार पर दो वर्गों में छात्रों को रखा जाकर अंकुर एवं तरुण ग्रुप के आधार पर अभ्यास कार्य करवाया जा रहा है।

**ब्रिज कोर्स-** वर्तमान में कक्षाओं में ब्रिज कोर्स आरंभ किया गया है जिसमें विषयवार अभ्यास कराकर बच्चों को पिछली कक्षाओं से वर्तमान कक्षा में जोड़ा रहा है। अभिभावकों के प्रयास एवं सहभागिता से हम अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सके अन्यथा इस विषम परिस्थिति में कार्य को अंजाम देना कठिन कार्य था। सहभागी समस्त शिक्षकों एवं अभिभावकों को हार्दिक “धन्यवाद” !

“परमेश्वर जिस पर भरोसा करता है उसे माता-पिता बनाता है और जिस पर बहुत भरोसा करता है उसे शिक्षक बनाता है।”



### संस्थान का जन्म दिवस संगीत

आज तुम्हारे जन्मदिवस पर बहुत-बहुत बधाई।

तुमको बहुत-बहुत बधाई ॥

रहो सदा तुम खिले फूल से बहुत-बहुत बधाई।

तुमको बहुत-बहुत बधाई ॥

जीवन को हर खुशी से भर लो आज तुम्हे बधाई।

उन्नति के हर शिखर को छू लो।

आज तुम्हें बधाई ॥

आज तुम्हारे जन्मदिवस पर बहुत-बहुत बधाई।

तुमको बहुत-बहुत बधाई ॥



रचनाकार

श्रीमती शिवानी चटर्जी

संगीत शिक्षक (सेवानिवृत्त)

शासकीय पूर्व प्रा. प्रशि. संस्थान, जबलपुर



## सीखने की कला

श्रीमती अर्चना शर्मा  
सहा. प्राध्यापक

मनुष्य के जीवन के कार्यों का संचालन मुख्यतः मानसिक शक्तियों द्वारा होता है। इसके लिये हमें यह जानने की आवश्यकता है कि मन की विधि क्रियाएँ किस प्रकार होती हैं, और उसकी दक्षता में वृद्धि कैसे की जा सकती है।

मानसिक दक्षता का मुख्य साधन है सीखना। जिस किसी भी कला या निपुणता की आवश्यकता हो, उसे तत्परता से सीखना चाहिये। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने सीखने की क्रिया का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया है। जिसके द्वारा मनुष्य मार्ग में आने वाली कठिनाइयों, अपनी कमियों और त्रुटियों का पता कर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करता है।

चूंकि सीखना मानसिक दक्षता का आधार है अतएव मनोवैज्ञानिकों ने सीखने की क्रिया को प्रोत्साहित करने हेतु कुछ तरीके बताए हैं जो इस प्रकार हैं-

( 1 ) शुरू में जल्दबाजी न करें - पहला सुझाव यह है कि प्रारंभिक प्रयत्नों को बड़ी सुगमता से धीरे-धीरे, शांतिपूर्वक और बिना घबराहट के करना चाहिये। भूलों का होना स्वाभाविक है, पर उनसे डरना या परेशान नहीं होना चाहिये। मनोविज्ञान के अनुसंधानों से यह पता चला है कि जिन लोगों ने शुरू में धीरे-धीरे, निश्चिंत भाव से सीखने का प्रयत्न किया, उन सभी को अन्त में सफलता मिली।

( 2 ) प्रयत्न करने के तरीके बदलते रहें - दूसरा सुझाव यह है कि अपने प्रयत्न करने के तरीकों को बदलते रहें। जिस तरीके से सीखने में कोई प्रगति न हो रही हो उसे बदलकर दूसरे तरीके अपनाएँ। जो कुछ भी सीखना हो उसमें सभी वैकल्पिक विधियों को आजमाकर ऐसी विधि का पता लगाएँ जो आपके लिये सर्वोत्तम हो।

( 3 ) करने की अपेक्षा सोचिये अधिक - सीखने का आधार है सोचना। कुछ भी कार्य करने से पहले मन ही मन उसका भली-भाँति विश्लेषण करें फिर दो-तीन बार कार्य करने का प्रयत्न करने के बाद रुकें एवं विचार करें कि

आपको कितनी सफलता प्राप्त हुई एवं किन कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है? ऐसे थोड़े से प्रयत्न व अनुभव आपकी उन्नति में अधिक सहायक होंगे।

( 4 ) क्रियाओं को मन ही मन करना - किसी हुनर को सीखने के लिये शिक्षार्थी मनन करे कि वह उस कार्य से संबंधित सभी क्रियाएँ कैसे करेगा या इन गुणों को कैसे प्राप्त करेगा। और फिर उन क्रियाओं की तैयारी मन ही मन करे। अपनी त्रुटियों का पता लगाए व अपनी सफलताओं का निरीक्षण करे। इससे शक्ति एवं समय की बचत होगी एवं सीखने में सहायता मिलेगी।

( 5 ) व्यर्थ की क्रियाओं के हटाना - किसी कार्य को सीखने की दक्षता में उन्नति करने हेतु व्यर्थ की क्रियाओं को हटा दिया जाए। आपको जो काम करना है उसे सरल तरीके से एवं कम से कम परिश्रम से करना सीखें। अपने कार्य करने के तरीके में सदा सुधार करने का प्रयास करें।

( 6 ) कठिनाइयों में अभ्यास - प्रवीण व्यक्ति वही है जो हर प्रकार की परिस्थिति में दक्षता से काम कर सके। सीखने का आरंभ तो बहुत सरल कार्यों से होना चाहिये पर, शिक्षार्थी को कभी-कभी कठिनाइयों में भी कार्य करने का अभ्यास करना चाहिये। अगर किसी कार्य को सीखने में कोई लाभ है तो निः संदेह उस कार्य को अच्छी तरह सीखना चाहिये, जिससे आप हर परिस्थिति में दक्षता से कार्य कर सकें।

( 7 ) प्रतियोगिता और आत्म-प्रतियोगिता - सीखने के हर कार्य में समय-समय पर अपनी तुलना दूसरों से करते रहें। प्रतियोगिता से सहायता मिलती है, यदि इसमें घृणा और ईर्ष्या न हो। न केवल दूसरों से बल्कि अपने-आप से भी प्रतियोगिता अथवा आत्म-प्रतियोगिता से सीखने वाले के सामने सदैव लक्ष्य बना रहता है जो उन्नति करने के लिये प्रेरक का कार्य करता है।





## खेल में उज्जवल भविष्य

विनोद पोद्दार

सहा. ग्रेड-3 क्रीड़ा प्रभारी

व्यक्ति के जीवन में तन मन की सुदृढ़ता चारित्रिक मजबूती, उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अहम हिस्सा होता है। स्वस्थ तन और स्वस्थ मन में विकास की संभावनाएँ प्रबल होती हैं। भारतीय संस्कृति सदैव योग के माध्यम से शारीरिक मानसिक और चारित्रिक विकास की पक्षधर रही है। शारीरिक विकास का एक मुख्य हिस्सा खेल एवं क्रीड़ा गतिविधियाँ रही हैं जिनके माध्यम से न केवल शारीरिक विकास, अनुशासित जीवन से उच्च व्यक्तित्व का निर्माण होता है बल्कि नैतिक और चारित्रिक निर्माण में भी सहायक होते हैं। कैरम, शतरंज, लूटो, चौपड़ जैसे खेल एक स्थान पर बैठकर मानसिक एकाग्रता और मन के माध्यम से बौद्धिक चातुर्य भरे होते हैं जो व्यक्ति के मानसिक व्यायाम के साथ-साथ बौद्धिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। मैदान पर खेले जाने वाले खेल एथलेटिक्स, खो-खो कबड्डी, हॉकी, क्रिकेट आदि खेलों से व्यक्ति के शारीरिक व्यायाम के साथ-साथ नियम पालन से जीवन अनुशासित बनता है। खेल भावना सदैव त्याग, मित्रता, परस्पर सहयोग और मिलनसारिता की ओर ले जाती है। खेलों में जहाँ एक ओर एकजुटता हमें भाषा, रंग, लिंग के भेदभाव से दूर ले जाती है, वहीं राष्ट्रीय स्तर पर एकता और अखंडता के भाव को मजबूत बनाती है। भारतीय खेलों में लगातार हो रही उन्नति से आज एशियाड और ओलंपिक में भी भारतीय खिलाड़ियों ने अपना उच्च कोटि का प्रदर्शन दिखाते हुए भारत को स्वर्णिम सफलताएँ दिलाई हैं। पीवी सिंधु, नीरज चौपड़ा, राज्यवर्धन सिंह, साइना नेहवाल, पी.टी. ऊषा जैसे नाम राष्ट्र को गौरवान्वित करते हैं। आज खिलाड़ियों को उनकी कड़ी मेहनत के साथ-साथ उच्च स्तर का प्रशिक्षण दिलाने में शासन और खेल एसोसिएशन भी बहुत ही दृढ़ता के साथ आगे आए हैं। देशी-विदेशी प्रशिक्षक, खिलाड़ियों को नई तकनीकों के साथ खेलों की विधाओं में पारंगत कर रहे हैं। अब बाल्यकाल से ही खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें प्रशिक्षण के माध्यम से आगे बढ़ाया जाता है। खिलाड़ियों को नाम के साथ-साथ प्रतिष्ठा और आर्थिक समृद्धि भी प्राप्त हो रही है। खेलों से निवृत होने के पश्चात खिलाड़ियों को कोच, कॉमेंटेटर, अकादमी के प्रशिक्षक और एसोसिएशन के पदाधिकारियों के रूप में कार्य करने के अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे उनकी गुणवत्ता का लाभ आने वाली पीढ़ी को भी प्राप्त होता है। भारत में प्राचीन काल से ही खेलों का महत्व रहा है और वर्तमान में एक बार पुनः खेल गतिविधियों के तीव्र होने से खेल और खिलाड़ियों का भविष्य उज्जवल हो रहा है।

“देश के बच्चे और युवक ही हमारे देश की आशा हैं और भविष्य भी”

### मेरा गीत

राजेश उपाध्याय, लेखापाल  
आज मैंने एक सपना देखा,  
सपना बड़ा निराला।

सपने में एक नगरी देखी,  
सूरज जहाँ पर करे अंधेरा,  
चाँद करे उजियारा।

सड़कों पर थी बड़ी सफाई,  
और घरों में धूल।

बच्चे घर में करें जुगाली,  
भैंस पढ़े स्कूल।

पेड़ों पर लटके लड्डू बर्फी,  
हलवाई बनाए सेव-मौसम्बी।

टॉफी टपके बारिश में,  
मजा आ गया नगरी में।

सपने में शायद मैं था,  
चौपट राजा की अंधेर नगरी में।



## स्वामी विवेकानंद-शिक्षा दर्शन एवं स्त्री शिक्षा

डॉ. ( श्रीमती ) शशि सराफ, सहा. शिक्षक

शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है। हमारी संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, अनुसंधान तथा युगों से संचित ज्ञान को वर्तमान तथा आने वाली पीढ़ियों में संप्रेषित करने का एक मात्र साधन शिक्षा है।

स्वामी विवेकानन्द ने संस्कृति, शिक्षा एवं आध्यात्म के मूल स्रोत के रूप में भारत भूमि को ही चिन्हित किया है। उन्होंने मानव मस्तिष्क में विद्यमान ज्ञान के भण्डार को जागृत करने हेतु शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर बल दिया है। उनका कथन है – “‘कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता, सब अन्दर ही है।’”

स्वामी जी ने कहा-शिक्षा को मात्र सूचना तक सीमित नहीं करना चाहिए अपितु शिक्षा मनुष्य के चरित्र निर्माण में सहायक होनी चाहिए। उनके शब्दों में–“यदि तुम केवल परखे हुए विचार आत्मसात कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हो, तो तुम एक पूरे ग्रंथालय को कंठस्थ करने वाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हो। यदि शिक्षा का अर्थ जानकारी ही होता तब तो पुस्तकालय संसार के सबसे बड़े संत हो जाते और विश्व के महान ऋषि बन जाते।” आज आवश्यकता है, आत्म निर्भर करने वाली तथा जीवन की समस्याओं का हल करने वाली शिक्षा की। उन्होंने सैद्धांतिक शिक्षा से अधिक व्यवहारिक शिक्षा पर बल दिया है। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक और व्यवहारिक है।

भारतीय नारी की दयनीय दशा से स्वामी जी अत्यन्त दुखी थे। भारत में नारी पुरुष के बीच व्याप्त अन्तर की आलोचना करते हुए स्वामी विवेकानंद जी ने कहा “सभी प्राणियों में वही एक आत्मा विद्यमान है, इसलिये नारियों के ऊपर अनुचित नियंत्रण नहीं रखना चाहिए।” उन्होंने नारी को पुरुष के समान स्थान दिये जाने की बात कहते हुये कहा कि जिस देश में नारी का सम्मान नहीं होता, वह देश कभी भी उन्नति नहीं कर सकता।

**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।**

**यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्त्रता फलाः क्रियाः ॥**

“जहाँ स्त्रियों का आदर होता है, वहाँ देवता प्रसन्न होते हैं और जहाँ उनका सम्मान नहीं होता, वहाँ सारे कार्य तथा प्रयत्न असफल हो जाते हैं।” जहाँ तक भारतीय नारी का प्रश्न है, उनमें सावित्री की भाँति सतीत्व है, जो यमराज से अपने पति को जिन्दा करवा लेती है। स्वामी जी का मानना था भारतीय नारी ने त्याग-तपस्या, पवित्रता, धैर्य, दया, संतोष, सेवा, क्षमा आदि सद्गुणों का विकास करके राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर और आध्यात्मिकता के उच्चतम स्तर को अक्षुण्य बनाये रखा है। स्वामी विवेकानंद जी का मानना था स्त्रियों की सोच सकारात्मक हो जिससे चरित्र निर्माण हो सके, मनोबल में वृद्धि हो, बौद्धिक क्षमता का विकास हो। उन्हें वीरोचित शौर्य की आवश्यकता है, उन्हें अपनी रक्षा स्वयं करनी चाहिये।



उन्होंने भगिनी निवेदिता को स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में काम करने की प्रेरणा दी थी। उन्होंने कोलकाता में महिला विद्यालय खोला था, जो स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर बन गया।

स्वामी विवेकानन्द जी ने स्त्री शिक्षा पर जोर दिया है। उनका मानना है कि स्त्री शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बने। किसी भी स्थिति में अपने आप को किसी से कम न समझे।



## मेरा सेवा कालीन अनुभव

मुश्शी रेखा शर्मा, उच्च श्रेणी शिक्षक

मध्यप्रदेश में SCERT राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा मण्डला जिले में सन् 1982-83 में ई.सी.ई. शिशु शिक्षा प्रोजेक्ट का सर्वे हुआ। यह प्रोजेक्ट यूनीसेफ द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त थी। इस प्रोजेक्ट में मॉण्टेसरी प्रशिक्षित 65 शिक्षकों को नियुक्ति मिली जो मण्डला जिले के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में पदस्थ हुए। उनमें से मेरी नियुक्ति मार्च 1985 में मण्डला जिले के सेमरखापा अचली गाँव में हुयी जो मण्डला से पहले 14 किलो मीटर अंदर है।

हम शिक्षकों को 3 से 6वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा देनी थी। विभिन्न गतिविधियों द्वारा जैसे-खिलौने, चित्र, चार्ट, बालगीत, खेल, कहानी एवं वातावरण के माध्यम से बच्चों को सिखलाना पड़ता था। गाँव में प्राथमिक बालक शाला, प्राथमिक कन्या शाला और माध्यमिक शाला थी, जो गाँव के अंतिम छोर में थी। मैं प्राथमिक बालक शाला में पदस्थ थी।

वहाँ के लोग कच्चे खपरे वाले मकानों में रहते थे, मैं भी ऐसे ही मकान में रहती थी। घर गोबर से लीपना पड़ता था। मैंने घर लीपना वहीं सीखा। स्टोव पर खाना बनाते थे। नहाने के लिए और कपड़े धोने बाहर कुँए पर जाना पड़ता था, जो मेरे लिए बहुत मुश्किल होता था। मिट्टी का तेल लेने और आवश्यक सामान लेने मण्डला जाना पड़ता था। निस्तार के लिए बाहर मैदान में झाड़ियों के पास जाना पड़ता था। बरसात में काफी कठिनाई होती थी। महिलाओं का क्षेत्र अलग और पुरुषों का क्षेत्र अलग निर्धारित था। यह देखकर मुझे अच्छा लगा। प्राथमिक बालक शाला के मास्टर जी जो गाँव में ही रहते थे, हमारे साथ 3 साल से 6साल तक के बच्चों के लिए सर्वे में सहयोग देते थे। हम माता-पिता एवं परिवार के लोगों को बच्चों को शाला भेजने के लिए समझाते थे। स्कूल आने के लिये बालकों को हम टॉफी, बिस्किट का लालच देते थे। शिशु शिक्षा केन्द्र सुबह के समय प्राथमिक बालक शाला में लगता था।

बालकों के केन्द्र आने के कुछ दिनों बाद गाँव के लोग एकत्रित होकर, शिशु शिक्षा केन्द्र आये और पूछने लगे कि, आप इन छोटे बच्चों को कैसे पढ़ायेंगी? मैंने बताया कि कहानी, बालगीत, अभिनय, खेल और वातावरण द्वारा पढ़ाउँगी। हमारा पढ़ाना गाँव वालों ने देखा, तब बच्चों को शिशु शिक्षा केन्द्र भेजने लगे। हम बालकों की खेलकूद प्रतियोगिताएँ करवाते थे। समय-समय पर मीटिंग के लिए मण्डला बी.टी.आई. जाते थे जो गाँव से काफी दूर था। बरसात में नाला पार करना मुझ शहरी महिला के लिए बहुत ही मुश्किल होता था।

दो महीने बाद एक आया निर्मला मिली जो दूसरे गाँव की थी। निर्मला घर-घर जाकर बालकों को एकत्रित करके शिशु शिक्षा केन्द्र लाती थी, गर्भियों की छुट्टियों में मैं और निर्मला आने वाले साल के लिये 3 से 6वर्ष के बालकों का सर्वे करते थे। हर साल हम माता-पिता को अपने बच्चों को, शिशु शिक्षा केन्द्र भेजने के लिए समझाते थे।



9 वर्ष के बाद मेरा स्थानान्तरण जबलपुर के शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान (माँट्रिसरी) में हुआ। उस समय से मैं इसी संस्थान में ई.सी.ई. शिक्षक के रूप में कार्यरत हूँ एवं जून 2022 में सेवा निवृत्त हो जाऊँगी। इस लेख के माध्यम से मैं हमारे संस्थान के स्टाफ, प्रशिक्षण की छात्राओं एवं बच्चों को शुभकामनाएँ देती हूँ।



## सरदार बल्लभ भाई पटेल

(संस्मरण)

श्रीमती रश्मि दवे, सहा. शिक्षक

सरदार बल्लभ भाई पटेल जो कि भारत के पहले गृहमंत्री थे, इनका पूरा नाम बल्लभभाई सावेर भाई पटेल था। इनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 को हुआ था। इतिहास में इन्हें “लौह पुरुष के नाम से जाना जाता है। भारत को एकता के सूत्र में पिरोने वाले बल्लभभाई पटेल को सारी दुनिया “सरदार” नाम से जानती है। सरदार यानि प्रमुख। सरदार पटेल के जीवन से जुड़ी कुछ प्रमुख बातें जिनसे हम सभी सीख ले सकते हैं—

**सीख 1 – बड़ा दिल रखो :-** सरदार पटेल भारत के पहले गृहमंत्री बने तब उनके कंधों पर सबसे बड़ी जिम्मेदारी थी छोटी-छोटी रियासतों को भारतीय गणराज्य में शामिल करना। उनके पास पुलिस व आर्मी थी। पर उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं हुई। हैदराबाद, जूनागढ़ व कश्मीर में उन्हे पुलिस की आवश्यकता हुई। बड़ा दिल रखकर उन्होंने 562 रियासतों को समझाया कि भारतीय गणराज्य उनका खयाल रखेगा।

**सीख 2 – जिम्मेदार बनो :-** 1930 से 1935 के दौरान जब प्लेग की महामारी फैली हुई थी, तब सरदार ने, आम के पेढ़ के नीचे तंबू लगाकर, लोगों को जोड़कर, स्वयं जिम्मेदारी लेकर, सैकड़ों लोगों की जान बचाई। लोगों को हॉस्पिटल पहुँचाया व जागरूक किया।

**सीख 3 – बड़ों का आदर करना :-** सन् 1946 में कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष पद के चुनाव में पूर्ण बहुमत होने पर भी गाँधी जी की इच्छा को देखते हुए गृहमंत्री का पद स्वीकार किया।

**सीख 4 – कर्तव्य निष्ठा का पालन करना :-** 11 जनवरी 1905 को कोर्ट में जिरह करते समय उन्हें अपनी पत्नी के निधन का टेलीग्राम मिला। जिसे पढ़कर वे चुपचाप रखकर कोर्ट में जिरह करते रहे। जज को जब इस घटना का पता चला तो उनके पूछने पर सरदार पटेल ने बतलाया कि मेरा यह कर्तव्य था कि मैं अपने पक्षकार के लिए लड़ू जिसे झूठे केस में फँसाया गया था। इस घटना से उनकी कर्तव्य निष्ठा व समर्पण का भाव पता लगता है। अपने से पहले देश, अपने परिवार से पहले काम को रखा। 562 रियासतों को एकता के सूत्र में बांधकर बड़े भाई, नेता, दोस्त एवं सरदार (प्रमुख) का कर्तव्य पूर्ण किया। इनका जन्मदिन 31 अक्टूबर को “राष्ट्रीय एकता दिवस” के रूप में मनाया जाता है।



## नई शिक्षा नीति में आधारभूत शिक्षा

श्रीमती शीबा खान, सहायक शिक्षक

हम सभी जानते हैं कि NEP 2020 के अंतर्गत समग्र शिक्षा में प्री प्राइमरी को भी जोड़ने की बात कही गई है। यह एक बहुत बड़ी पहल है।

### NEP में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा का महत्व -

प्रारंभिक बाल्यावस्था जन्म से 8 वर्ष तक की आयु के रूप में मानी गई है। एक शोध के अनुसार बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की आयु तक हो जाता है। इस स्थिति में बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए आरंभिक 6 वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। नेशनल एजुकेशन पॉलिसी के अंतर्गत 6 वर्ष की आयु तक के बच्चों पर खास ध्यान देने का प्रावधान रखा गया है। जिससे कि बच्चों का विकास संपूर्ण रूप से हो सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित 5 +3 +3 +4 शिक्षा प्रणाली में 3 साल की उम्र से प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) शामिल है। वर्तमान शिक्षा नीति में कक्षा एक से पूर्व तीन वर्ष से छः वर्ष की आयु में 3 साल की आंगनबाड़ी, प्री स्कूल एवं बाल वाटिका प्रस्तावित है।

यदि प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति देखें तो वर्तमान में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा तथा सार्वभौमिक पहुंच की कमी के कारण बच्चों का एक बड़ा हिस्सा बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान से संबंधित सीखने की एक गंभीर समस्या से जूझ रहा है। शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल जल्द से जल्द सार्वभौमिक करने का प्रावधान है। जिसके लिए 2030 तक का समय निर्धारित किया गया है।

### बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता-

इसके अंतर्गत बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता के ज्ञान को विकसित करने के लिए “निपुण भारत” योजना का संचालन किया गया है। इस योजना का पूरा नाम “नेशनल इनीशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमरेसी” है। इस योजना के माध्यम से आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता का ज्ञान छात्रों को तीसरी कक्षा के अंत तक प्रदान किया जा सकेगा। जिससे वह पढ़ने, लिखने एवं अंकगणित को सीखने की क्षमता प्राप्त कर सकें।

ECCE को बेहतर ढंग से लागू करने के लिए राज्य एवं संघ शासित प्रदेशों से यह आशा की गई है कि वह अपने शिक्षकों के लिए स्कूलों को तैयार करने से संबंधित कोर्स स्वयं तैयार करें ताकि कक्षा एक में बच्चों का सहज पारगमन सुनिश्चित हो पाए, इसके लिए उच्च गुणवत्ता वाले ईसीसीई शिक्षक का होना अति महत्वपूर्ण है। परिणामस्वरूप एनसीईआरटी द्वारा एक विकसित पाठ्यक्रम व शैक्षणिक ढांचे के अनुसार एक व्यवस्थित तरीके से



प्रशिक्षण देने की आवश्यकता का अनुभव किया गया। राज्य सरकार को चरणबद्ध तरीके से व्यवसायिक प्रशिक्षण मार्गदर्शन की व्यवस्था करके ईसीसीई के लिए व्यवसायिक रूप से योग्य शिक्षकों को तैयार करने की जिम्मेदारी है। इन्हीं जिम्मेदारियों को पूर्ण करने के लिए NCERT नई दिल्ली द्वारा एक विकसित पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचे के अनुसार एक व्यवस्थित तरीके से प्रशिक्षण देने की आवश्यकता महसूस की गई। राज्य सरकारों को भी चरणबद्ध तरीके से प्रशिक्षण की व्यवस्था करके ECCE के लिए व्यवसायिक रूप से योग्य शिक्षकों को तैयार करने की जिम्मेदारी है। इन्हीं जिम्मेदारियों को पूर्ण करने के लिए ECCE पाठ्यक्रम की प्लानिंग, क्रियान्वयन व प्रशिक्षण हेतु मॉड्यूल बनाना आदि कार्यों को करने के लिए विभिन्न राज्यों से एक्सपर्ट संस्थाएं व शिक्षकों का चयन किया गया।

#### **FLN योजना में शास. पूर्व प्राथ. प्रशिक्षण. संस्थान की सहभागिता-**

ECCE के क्षेत्र में शाला वर्षों से कार्य करती आई है एवं इस संबंध में संस्थान में विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन भी होता रहा है। अतः जब मध्यप्रदेश में FLN योजना की बात चल रही है तो उसमें मॉण्टेसरी की भागीदारी न हो, ऐसा संभव नहीं है। इसीलिए हमारी शाला के प्राचार्य महोदय, व्याख्याताओं और शिक्षकों ने योजना के क्रियान्वयन और सफलता के लिए विशेष योगदान दिया है।

NCSL (National Centre for School Leadership) के अंतर्गत मध्य प्रदेश स्टेट लीडरशिप अकादमी एस.सी.ई.आर.टी., राज्य शिक्षा केंद्र में 11 मॉड्यूल का निर्माण प्रदेश के विभिन्न डाइट को सौंपा गया, जिनमें से मध्यप्रदेश में ECCE में नेतृत्व की शुरुआत के लिए डाइट जबलपुर को चुना गया। डाइट जबलपुर की टीम में शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान से मैने इस मॉड्यूल के निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण में विशेष सहयोग प्रदान किया। इसके पूर्व निष्ठा के मॉड्यूल 15 “पूर्व प्राथमिक शिक्षा” पर भी राज्य स्तर पर मेरे द्वारा सफलतापूर्वक प्रस्तुतीकरण किया गया। सरस्वती शिशु मंदिर द्वारा महाकौशल क्षेत्र के विभिन्न जिलों से आए हुए शिक्षकों हेतु पूर्व प्राथमिक व प्राथमिक कक्षाओं के लिए FLN संबंधित प्रशिक्षण में भी हमारे संस्थान ने सहयोग दिया। गत वर्ष निष्ठा द्वारा प्राथमिक कक्षाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित प्रशिक्षण को प्रदेश के विभिन्न शिक्षकों के लिए सरल बनाने हेतु नगर 1 के BRC श्री प्रमोद कुमार श्रीवास्तव द्वारा आयोजित प्रश्नोत्तरी द्वारा विस्तृत चर्चा में शामिल रही, जिसके यूट्यूब पर विभिन्न लिंक भी उपलब्ध हैं। विगत कई वर्षों से हमारी संस्था ने मॉण्टेसरी पद्धति का उपयोग करके पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का संचालन एवं पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकों को तैयार करके ECCE के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है तथा बच्चों के विकास संबंधी सभी क्षेत्रों में विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करके देश को सुशिक्षित, संस्कारी नागरिक प्रदान करती आई है। हमारे संस्थान के शिक्षक संस्थान के उत्थान, शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास और शासन की योजनाओं के सफल संपादन के लिए सदैव निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्य का निर्वहन करते आए हैं तथा भविष्य में भी अपना यथासंभव योगदान देते रहेंगे।



### कहो कि...

श्रीमती कुसुम पासी, सहायक शिक्षक

कहो कि इस भारत भूमि से बेहतर कोई धरा नहीं ।  
कहो कि इसके प्रति तुम्हारे मन में विष कोई भरा नहीं ॥  
कहो कि तुम इस देश के सच्चे शुभचिंतक अभिलाषी हो ।  
कहो कि तुम सौभाग्यशाली इस भारत भू के वासी हो ॥  
कहो कि इसमें रहकर तुमने जन्मत को भरपूर जिया ।  
कहो कि इसमें रहकर तुमने शिखरों को स्पर्श किया ॥  
कहो कि भारत वर्ष में कोई छोटा और कोई बड़ा नहीं ।  
कहो कि दुःख दर्दों में कोई अब तक तन्हा लड़ा नहीं ॥  
कहो कि भारत आन-बान और प्राणों से भी प्यारा है ।  
कहो कि भारत जिन्दाबाद आँखों का अपनी तारा है ॥  
कहो कि इस दुनिया में कोई भारत जैसा देश नहीं ।  
कहो कि देश प्रेम से बढ़कर कोई धर्म और उपदेश नहीं ॥  
कहो कि भारत जिये हमेशा प्रगति पथ पर बना रहे ।  
कहो कि हिन्द की शान में अपना सिर गौरव से तना रहे ॥

### अक्लाहट

श्रीमती किरण महोबिया, सहा. शिक्षक

दुनियाँ की रंगीनियों से मन अब उड़ चुका है,  
चलो अब आध्यात्म में खो जाएँ ।  
दुनियाँ की माया बाजार से दूर होकर,  
मन को अब शांति में लगाएँ ।  
दुनियाँ की चहल-पहल से मन अब थक चुका है ।  
चलो अब मन को शून्य में लगाएँ,  
दुनियाँ के घटविकारों से शरीर जर्जर हो चुका है ।  
चलो अब योग से शरीर को पवित्र बनाएँ,  
दुनियाँ की दोस्ती ने बहुत धोखा दिया है ।  
चलो अब प्रभु से दोस्ती बढ़ाएँ ।



### राष्ट्रीय आल्हा गीत

मीना चौरसिया, प्राथमिक शिक्षक

तीन रंग की लेकर चूनर  
साजन एक रंगा देना  
प्यारे हिन्दुस्तान का जिसमें,  
मानचित्र बनवा देना ॥ १ ॥ तीन....  
एक तरफ हो खड़ा हिमालय  
एक तरफ बहती गंगा हो  
एक तरफ हो लाल किला,  
जिसमें लगा तिरंगा हो ॥ २ ॥ तीन....  
एक तरफ हो मन्दिर मस्जिद  
एक तरफ गुरुद्वारा हो ॥ ३ ॥  
एक तरफ हो शहीद स्मारक,  
जहाँ भगत सिंह झूला हो ॥ ४ ॥ तीन....  
एक तरफ लहराती फसलें  
एक तरफ नदियों की लहरें हो  
एक तरफ हो कश्मीर प्यारा  
एक तरफ खम्बात की खाड़ी हो ॥ ५ ॥ तीन..  
एक तरफ हो ताजमहल  
तो एक तरफ कुतुबमीनार हो  
एक स्तम्भ ऐसा बना दो,  
जिसमें अशोक चक्र प्यारा हो ॥ ६ ॥ तीन....  
जहाँ जाति धर्म का भेद नहीं  
और सब में भाई-चारा हो  
न रखे किसी से बैर-बुराई,  
वह हिन्दुस्तान हमारा हो ॥ ७ ॥ तीन....



मॉण्टेसरी धराना



### जीवन और सागर

श्रीमती किरण महोबिया, सहा. शिक्षक

**जीवन**  
सागर की एक लहर,  
ज्वार-भाटा।  
**जीवन का एक रूप,**  
सुख-दुःख।  
जीवन सागर की एक लहर,  
कभी तेज-कभी धीमी।  
जीवन एक सफर,  
कभी सड़क कभी पगड़ंडी।  
जीवन सागर की एक लहर,  
कभी शान्त कभी अशान्त।  
जीवन एक नाटक,  
कभी सुखान्त-कभी दुखान्त।  
जीवन सागर की एक लहर,  
जीवन सागर की एक लहर।



घर

तुम जो रहो घर पर तो,  
घर भी जीवित हो जाता है।  
ईट, कंकर, पत्थर घर का,  
प्राणमयी हो जाता है।  
जब संकट के बादल घिर जाएँ,

तब घर रक्षक बन जाता है।  
जब खुशियों की बौछारें आएँ,  
घर दुल्हन सा सज जाता है।  
घर पालना है इस जीवन का,

मानव का पालन करता जाता है।

### सरस्वती वंदना

श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव प्रा. शिक्षक

सुर सरिता में आओ नहाएँ, देवी शारदा खूब मनाएँ  
भाँति-भाँति फूल कमल से,  
धूप ध्यान और ज्ञान कमल से।  
पूजन कर मन दीप जलाएँ,  
सुर सरिता में आओ नहाएँ॥

साऽ मग पम धप निध सारे सानि धप मप गम धऽ  
धनि सारे सानि धप मप गम धऽ मप गम धऽ गम धऽ

माऽऽ ताऽऽ जय जय सरस्वती,

विद्या सुख वरदान दायनी।

राग सुधा नव स्त्रोत वाहिनी,  
जीवन का सुख मार्ग दायनी।



तेरा गौरव गाएँ – गाएँ,

सुर सरिता में आओ नहाएँ॥

यक्ष किन्नरी जाने तेरा,

देवी देवता माने तेरा।

तानसेन अरू बैजू बावरा,

तीन लोक में गौरव तेरा।

यही तो गाते आऽऽए,

सुर सरिता में आओ नहाएँ॥

### आशा विश्वकर्मा

कार्या. सहायक

“ “ सूझबूझ और मौलिकता से  
ही सरस्वती लक्ष्मी  
का रूप ले पाती है ، ،



## पथिक

(संकलित)

**श्रीमती वंदना श्रीवास्तव, प्राथमिक शिक्षक**

पथिक चलता जा निरंतर भोर निश्चित ही मिलेगी।  
मुश्किलों से पन्थ की कल ढाल हाथों की बनेगी ॥  
अश्रु में बहती निराश दर्प बन सर पर सजेगी ॥  
यह परिश्रम की अडिगता स्वप्न को अभिरूप देगी ॥  
कण्टकों के रास्तों पर सन्तुलित से पग बढ़ाना ।  
धैर्य से मन को सजाना, धैर्य से मुश्किल टलेगी ॥  
पथिक चलता जा निरंतर, भोर निश्चित ही मिलेगी...  
टूट जाना और गिरना भाग हैं, रणबाध्यता के ।  
हार इनको मान लेना भाव है अज्ञानता के ॥  
रक्त के कण अश्रु बिखरे और ढुकड़े आत्मबल के ।  
सब उठाकर मुटिरियों से अनुभवों में टाँक कल के ॥  
और जीवन में खुलेगी, अनुभवों की पोटली जब ।  
टिमटिमाती रौशनी इन चक्षुओं में जल उठेगी ॥  
पथिक चलता जा निरंतर भोर निश्चित ही मिलेगी...  
फूँक कर यह धूल सब उठते सवालों के पटल से ।  
और हाथों से झङ्गाकर दर्द फिर साहस अटल से ॥  
उठ खड़ा हो चोट पर कुछ बूँद दृढ़ता की रगड़ कर ।  
और पहुँची ठेस के पने, निररता से पलट कर ।  
बढ़ कि तेरी असफलता धुँधला सा चित्रण जाए ।  
भस्म द्वन्द्वों की बनाकर, तिलक माथे पर करेगी ॥  
पथिक चलता जा निरंतर भोर निश्चित ही मिलेगी....

## शिक्षक : कौम की बुनियाद

हमारी दर्सगाहों में जो ये 'उस्ताद' होते हैं ।  
हकीकत में वही तो कौम की बुनियाद होते हैं ॥  
वही रखते हैं हमारे इल्म की हर रुह को रौशन ।  
हमें मंज़िल में पहुँचाकर ये कितना शाद होते हैं ।  
बरसते हैं यह सावन की तरह प्यासी जमीनों पर ।  
इन्हीं के फैज से उजड़े चमन आबाद होते हैं ।

## भूल न पाएंगे

**श्रीमती रजनी द्विवेदी, प्राथमिक प्रभारी**

पाठशाला की घण्टी, और टाट पट्टी,  
बस्ता किताबे चॉक और पेन-पट्टी,  
मास्टर जी की रौबीली आवाज,  
पढ़ाने का अनूठा अन्दाज,  
प्रेरक व्यक्तित्व धीर-गंभीर,  
उनकी कही बात पत्थर की लकीर  
ब्लैक बोर्ड पर चॉक चलाते,  
पूरी दुनिया का दर्शन कराते,  
कराते नियमों का पालन,  
रखते कठोर अनुशासन  
मासूम-शारात जब करते नहे शैतान,  
खाते बेंत की मार या मुर्गा बन देते बांग,  
पास-फेल की चिंता से परे,  
परीक्षा की तैयारी मजे में करते ।  
बच्चे पढ़-पढ़ कर नहीं,  
खेल कूद कर थकते थे,  
वो दिन भी क्या दिन थे  
भूल न पाएंगे हम ।

**श्रीमती आयशा अंसारी, प्राथमिक शिक्षक**

पस्ती को बुलन्दी बखाते हैं अपने कान्धों की ।  
इन्हीं की खोज से सब नामवर ईज़ाद होते हैं ॥  
जो करते हैं अदब 'उस्ताद' का पाते हैं वह रिफअत ।  
जो इनसे बे अदब होते हैं वही बर्बाद होते हैं ।  
अगर रुहानियत से बाहमी रिश्ता जोड़े आयशा ।  
फिर तो शारिर्द भी 'उस्ताद' की औलाद होते हैं ॥



## भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में जबलपुर का योगदान

सरोज रावत कायर्डे, प्रथम वर्ष

जबलपुर ..... “माँ नर्मदा के किनारे बसी, मान्यताओं  
के अनुसार-जाबाति ऋषि की तपोभूमि”

ज्ञान, संस्कार, शौर्य और साहस की पोषक जबलपुर की धरती ने हमारे महान भारत की आजादी में महती योगदान दिया है।

जब इस योगदान को याद करते हैं तो सर्वप्रथम याद आती है-1857 की क्रांति में संस्कारधानी के तत्कालीन गोंडवाना शासकों के 2 वीर सपूत-राजा शंकर शाह और उनके बेटे रघुनाथ शाह की, जिनकी वीर रस और आत्माभिमान से ओत प्रोत कविताओं ने जनमानस में स्वतंत्रता की ऐसी लहर जगाई कि, अंग्रेजी शासन की नींव हिल गई। राजा शंकर शाह और पुत्र रघुनाथ शाह ने उस वक्त अंग्रेजों के खिलाफ आजादी का बिगुल फूँका, जब अंग्रेजों के सामने बड़ी-बड़ी रियासतें कमजोर पड़ रही थीं। जबलपुर में अंग्रेजों की पकड़ बढ़ रही थी। वे जबलपुर को केन्द्र बनाकर पूरे महाकौशल में कंपनी का वर्चस्व कायम करना चाहते थे, लेकिन जबलपुर के सपूतों को यह मंजूर न था। 1857 में जबलपुर में तैनात अंग्रेजों की 52 वीं रेजीमेंट का कमांडर बहुत क्रूर था। उसकी क्रूरता के खिलाफ राजा व राजकुमार शाह ने मोर्चा खोल दिया। उनकी वीर रस की कविताओं से विद्रोह की आग पूरे राज्य में सुलग गई। अंग्रेजों ने 14 सितम्बर की रात धोखे से महल घेर कर राजा व 32 वर्षीय राजकुमार को बंदी बना लिया। वह स्थान जहां दोनों को बंदी बनाकर रखा गया था, जबलपुर में आज वहाँ वन विभाग का ऑफिस है। क्रूर अंग्रेजों ने 18 सितम्बर 1857 को दोनों पिता पुत्र को तोप के मुँह पर बाँध कर उड़ा दिया।

देश में झंडा सत्याग्रह की शुरूआत भी जबलपुर से ही हुई। चौरी चौरा काण्ड के बाद विरोध को देखते हुए अंग्रेजों को यह नागवार गुज़रा और उन्होंने आदेश जारी कर शासकीय व अर्द्धशासकीय भवनों पर तिरंगा फहराने पर प्रतिबंध लगा दिया। जबलपुर के स्वतंत्रता सेनानियों ने इस प्रतिबंध को चुनौती के रूप में लिया। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, देवदास गाँधी, जमनालाल बजाज के रूप में जब कांग्रेस की दूसरी कमेटी जबलपुर आयी तो नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तपस्वी सुन्दरलाल ने साथियों के साथ, तत्कालीन कलेक्टर हेमिल्टन से तिरंगा फहराने की अनुमति माँगी। कलेक्टर ने साथ में यूनियन जैक (ब्रिटिश झण्डा) फहराने की भी शर्त रख दी, जिसे स्वतंत्रता सेनानियों ने अस्वीकार कर दिया। 18 मार्च 1923 को सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, बालमुकुंद त्रिपाठी, तपस्वी सुन्दरलाल टाऊन हॉल पहुँचे, और अंग्रेजों की आँखों में धूल झोंक कर टाऊन हॉल भवन पर दूसरी बार तिरंगा फहरा दिया। अंग्रेजों ने लाठी चार्ज किया। कई गंभीर घायल हुए, गिरफ्तार हुए। लेकिन इस घटना ने झंडा सत्याग्रह आंदोलन की शुरूआत कर दी। सरदार पटेल ने इसका आह्वान किया। जबलपुर में सुभद्रा कुमारी चौहान के नेतृत्व में महिलाएँ वीर रस की कविताओं से लोगों का उत्साह बढ़ाने लगीं। इसी के चलते अंग्रेजों ने सुभद्रा कुमारी चौहान को गिरफ्तार कर लिया। अंततः झंडा सत्याग्रह के आगे अंग्रेजों को झुकना पड़ा। 17 अगस्त 1923 को सत्याग्रहियों की मांग मान ली गई और देश भर के आंदोलनकारी रिहा कर दिये गये।



जबलपुर के पूजनीय स्वतंत्रता सेनानी पं. बालमुकुंद त्रिपाठी ने गाँधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। उन्होंने अंग्रेजों की असीम यातनाएँ सही। उन्हें पानी व भोजन में काँच पीस कर दिया गया। दुष्परिणाम स्वरूप जेल से छूटने के ढाई महीने बाद ही वे शहीद हो गये। जबलपुर के एक और अमर शहीद स्वतंत्रता सेनानी गुलाब सिंह को नमन किये बिना स्वतंत्रता आंदोलन की चर्चा अधूरी है। 10 अगस्त 1942 को भारत छोड़े आंदोलन के दौरान घमंडी चौक जबलपुर में हुई फायरिंग में सीने पर अंग्रेजों की गोली खाने वाले गुलाब सिंह की उम्र शहादत के समय, मात्र 16वर्ष थी।

जबलपुर की धरती में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की स्मृतियाँ भी हैं। यहाँ की हवाओं में नेताजी का त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में दिया भाषण घुला है। जबलपुर केन्द्रीय जेल में नेताजी को गिरफ्तार कर रखा गया था, इसका नाम नेताजी के नाम पर ही है। 1947 में स्वतंत्रता हासिल करने के बाद, जबलपुर देश के नव-निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाता आ रहा है। शिक्षा, संस्कृति, रक्षा, उद्योग हर क्षेत्र में जबलपुर के सपूत्र योगदान दे रहे हैं। इस तरह जबलपुर की यह पावन धरा देश के लिए सदा समर्पित रही है और रहेगी।



### स्वच्छ भारत आलहा

मनीषा विश्वकर्मा, द्वितीय वर्ष

स्वच्छ भारत मिशन चलो जो, सब भाई सुनलो कान लगाय,  
सब खों मिलकर सफल बनाने, बात हमारी टालो नाय।  
बड़े मिशन जो, अरे बड़े मिशन जो स्वच्छ भारत,  
सुनलो सब जन कान लगाय, बड़े मिशन जो।

कचरा गाड़ी घर-घर आवै, सूखा कचरा दे, गोला डाल,  
फिक्र नहीं अब हो कचरे की, मैं कचरे की लेऊँ बलाय।  
बड़े मिशन जो, अरे बड़े मिशन जो स्वच्छ भारत,  
सुन लो सब जन कान लगाय, बड़े मिशन जो।



गंदा पानी न रूकने पाए, नाली जलदी देव बहाय,  
रोग बला न आने पाए, मैं कचरा की लेऊँ बलाय।  
बड़े मिशन जो, अरे बड़े मिशन जो स्वच्छ भारत,  
सुनलो सब जन कान लगाय, बड़े मिशन जो।



पहाड़ चढ़ने का एक उसूल है....  
झुककर चलो, दौड़ो मत।

जिंदगी भी बस इतना ही मांगती है हमसे।

• • •  
सामने रास्ता न दिखने का मतलब ये नहीं  
कि रास्ता खत्म हो गया है...  
कोहरा हमेशा दीवार सा होता है...  
मगर वहाँ होती सिर्फ हवा है।

विश्वास का कपड़ा बुनने के लिये  
सच्चाई का धागा लगता है।

• • •  
यदि मंजिल को है पाना है  
तो अंधेरों से गुजर जाना.....  
पढ़ने लायक कुछ लिख जाना या  
लिखने लायक कुछ कर जाना....

झूबना आसान है बस हाथ  
चलाना बंद कर दो,  
तैरना भी आसान है बस  
हाथ चलाते रहो।

निर्णय आपका है  
तैरना है या झूबना है?

• • •  
अरुणिका पटेल, प्रथम वर्ष

## इंद्रधनुष



### “हाय रे नौकरी”

नेहा परिहार

डी.पी.एस.ई., प्रथम वर्ष

बड़ी हसीन होगी तू ऐ नौकरी,  
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं ।  
सुख-चैन खोकर, चटाई पे सोकर,  
सारी रात जागकर पन्ने पलटते हैं ।  
दिन मे तहरी और रात को मैगी,  
आधे पेट ही खाके तेरा नाम जपते हैं ।  
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं ।।  
अंजाने शहर में छोटा सस्ता रुम लेके,  
किचन, बेडरुम सब उसी मे सहेज के ।  
चाहत में तेरी, अपने माँ-बाप और  
दोस्तों से दूर रहते हैं ।  
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं ।।



### भारत की युवाशक्ति

मानसी विश्वकर्मा

डी.पी.एस.ई., द्वितीय वर्ष  
हैं युवा हम वो शक्तिशाली ।  
खण्ड नहीं कर सकता कोई,  
हैं उस अखण्ड देश की डाली ॥  
ओत-प्रोत हैं यौवन से हम,  
और नहीं हैं असमर्थ विकल्प ।  
आहान कर युवा क्रांति का,  
लिया है परिश्रम का संकल्प ॥  
नहीं असम्भव हमारे लिये,  
कर के सब दिखलायेंगे ।  
पराकाष्ठा वीरत्व छूकर,  
अपना महत्व बतलायेंगे ॥  
जो छायी है इस अम्बर में,  
सूरज की वो लाली हैं हम ।  
सब के चेहरों पर जो बनकर,  
चमके वो खुशहाली हैं हम ॥



### बुद्धिमान बुजुर्ग

पूनम सकवार, डी.पी.एस.ई., द्वितीय वर्ष

चार व्यक्तियों ने चुपचाप ध्यान करने का फैसला किया । उन्होंने इस अभ्यास के प्रतीक के रूप में एक मोमबत्ती जलाई, जो उन्हें हर वक्त याद दिलाती थी कि, उन्हें बिना कुछ बोले ध्यान करना है । उन चारों व्यक्तियों ने ध्यान करना शुरू किया । पहले दिन की रात होते-होते मोमबत्ती टिमटिमाई और बुझ गई । यह देखते ही पहले व्यक्ति ने कहा, अरे ये मोमबत्ती तो बुझ गई । दूसरे व्यक्ति ने कहा, हमें बात नहीं करनी चाहिए, हमने आपस में कुछ ना बोलने की कसम खाई थी । तीसरे व्यक्ति ने कहा, तुम दोनों को बोलने की क्या जरूरत थी ? चौथा व्यक्ति हँसकर बोला, मैं अकेला हूँ जिसने बात नहीं की । उन चारों व्यक्तियों के बोलने के अलग-अलग कारण थे । अतः उन चारों व्यक्तियों ने बिना कुछ सोचे अपने विचार रख दिये, उन व्यक्तियों ने स्वयं को सुधारने का प्रयास नहीं किया । एक बुद्धिमान बुजुर्ग व्यक्ति भी वहाँ ध्यान कर रहा था, उस बुजुर्ग ने उन चारों व्यक्तियों की ओर ध्यान नहीं दिया । बिना कुछ बोले उस व्यक्ति का मौन देखकर उन चारों को अपनी गलती का अहसास हो गया, जो वे चारों व्यक्ति बोलकर भी नहीं कर पाये थे ।

**शिक्षा** - बिना सोचे समझे और जरूरत से ज्यादा बोलने पर लोगों के सामने शर्मिदा होना पड़ता है ।



## सुभद्रा जी की रचना - माला

अंकिता गिनारा, डी.पी.एस.ई, प्रथम वर्ष  
मातृ मंदिर में तुम मानिनि राधे ।  
प्रियतम भैया कृष्ण के साथ ।  
मेरे भोले सरल हृदय ने प्रतीक्षा की ।  
प्रथम दर्शन के लिए, उल्लास से अराधना की ।  
मेरे पथिक से साथ है, स्वदेश के प्रति ।  
तुम परिचय दो, वीरों का कैसा हो वसंत ।  
झांसी की रानी से झांसी की रानी की समाधि तक ।  
गिरफ्तार होने वाले, जलियाँ वाला बाग में वसंत ।  
नील के पेड़ पर कोयल बैठी गाए ।  
हे काले-काले बादल, हे काले-काले बादल ।  
भ्रम में पड़ी व्याकुल चाह से पूछी ।  
बादल हैं किसके लाल? ये बादल ।  
यह कदम्ब का पेड़, का मुरझाया फूल ।  
फूल के प्रति, जरूरी है पानी और धूप ।  
तुम मुझे पूछते हो तो पूछो फिर ।  
समर्पण और वेदना से भरा मेरा जीवन फूल ।  
बालिका का परिचय, छिलमिल तारे से ।  
मेरा नया बचपन, मेरा गीत मेरी कविता से ।  
अनोखा दान होता है, बिदाई से विदा तक ।  
मेरा जीवन का आधार मेरी टेक ।

## कुछ अच्छा होगा

साक्षी ठाकुर, डी.पी.एस.ई, प्रथम वर्ष  
भविष्य में क्या होगा,  
मुझे ये नहीं पता ।  
पर जो भी होगा,  
कुछ अच्छा ही होगा ।  
लोगों की बातों को सुनकर,  
अपना रास्ता तुम मत मोड़ना  
अगर किस्मत ने चाहा तो,  
कुछ अच्छा जरूर होगा ।  
वक्त से लड़कर जो नसीब बदल दे,  
इंसान वही जो अपनी तकदीर बदल दे ।  
कल क्या होगा, कभी न सोचो,  
पर जो भी होगा, कुछ अच्छा ही होगा ।  
मैं जो ये लिख रही हूँ,  
मुझे पता नहीं, इसका अंजाम क्या होगा ।  
किन्तु है मुझे यकीन,  
जो भी होगा, बहुत अच्छा होगा ।  
सफलता को पाने के लिए, जो डटकर खड़ा होगा,  
सफल ही होगा जो, अपनी जिद पर अड़ा होगा ।  
तुम कोशिश तो करो,  
जो भी होगा, कुछ अच्छा ही होगा ।

“बच्चों के मुँह पर मुस्कान सदैव बनी रहे,  
हमें ऐसी शिक्षा-प्रणाली लानी होगी”



## इंद्रधनुष बाल गीत



### सूरज

रोशनी नायक, द्वितीय वर्ष  
रोज सुबह को सूरज आकर,  
शाम को डूब जाता है।  
अपने घर को जाता सूरज,  
रोज प्रकाश फैलाता है।  
सूरज निकला मिटा अंधेरा,  
देखो बच्चों हुआ सबेरा।

### स्वच्छता

 प्रीति सराठे द्वितीय वर्ष  
आस-पास को तुम साफ बनाओ,  
कूड़े को कूड़ेदान में पहुँचाओ।  
स्वच्छता अपनाओ, स्वच्छता अपनाओ,  
अपने देश को सुंदर बनाओ।

### ऊँट

 अंजली चौधरी द्वितीय वर्ष  
ऊँट चला भाई ऊँच चला,  
ऊँची गर्दन ऊँट चला।  
पीठ उठाकर ऊँट चला,  
हिलता डुलता ऊँट चला।

### जीना सिखायें

 शमा बेगम द्वितीय वर्ष  
खुद जिएँ सबको जीना सिखायें,  
अपनी खुशियाँ चलो बाँट आयें।  
मिलकर सब प्यार का गीत गायें,  
तोड़ लायें चलो सब सितारे,  
आओ जुगनूँ पकड़कर लायें।।

### बिल्ला-बिल्ली

 प्रगति विश्वकर्मा द्वितीय वर्ष  
लाठी लेकर बीन बजाता,  
बिल्ला जा पहुँचा ससुराल।  
मैं आया बिल्ली को लेने,  
कौन पकाये रोटी-दाल?

### तितली

 अर्चना सोनी द्वितीय वर्ष  
प्यारी तितली प्यारी तितली,  
पंख कहाँ से लायी हो ?  
तुम रंगों की राजकुमारी,  
परीलोक से आयी हो ?  
फूल तुम्हें भी अच्छे लगते,  
फूल हमें भी भाते हैं।  
वे तुमको कैसे लगते हैं,  
जो फूल तोड़ ले जाते हैं।।

### कर्म करो

अनुपमा चौरे द्वितीय वर्ष  
कर्म करो भाई कर्म करो,  
हमेशा अपना कर्म करो,  
न आलस करो, न आलस करो।  
आगे बढ़कर कर्म करो,  
कर्म करने से लक्ष्य मिले,  
कर्म करो भाई कर्म करो।।

### मेरी मम्मी...

 द्रोपती विश्वकर्मा द्वितीय वर्ष  
सबसे प्यारी मेरी मम्मी।  
सुबह उठाती मेरी मम्मी।।  
ब्रश कराकर - नहा धुलाकर,  
मुझे खिलाती मेरी मम्मी।  
सबसे प्यारी मेरी मम्मी।।

### चिड़िया

अफशाँ निगार, प्रथम वर्ष  
आसमान में उड़ती चिड़िया,  
पंख पसारे सुंदर चिड़िया।  
मधुर कंठ में गाना गाती,  
मुझको भाती प्यारी चिड़िया।

# झलकियाँ...



गुरु वंदन कार्यक्रम अगस्त 2021



संस्था अवलोकन



बाल-खेल गतिविधि दिसम्बर 2021



शिक्षक दिवस पौधारोपण 5 सितम्बर 2021



रांगोली प्रतियोगिता नवम्बर 2021



बाल कक्ष गतिविधियाँ

# झलकियाँ...



विजिटर्स बुक में लिखते हुए<sup>१</sup>  
मान. जस्टिस श्री संजय द्विवेदी



मान. जस्टिस श्री विवेक रूसिया का संस्थान में आगमन



प्रतिभा अलंकरण कार्यक्रम, तत्कालीन  
कलेक्टर श्री भरत यादव की उपस्थिति में 2019-20



सरस्वती पूजन फरवरी 2022



निष्ठा मॉड्यूल में सहयोग हेतु श्रीमती शीबा खान को  
राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल में प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ



हस्तकार्य 2021-22

# झलकियाँ...



क्षेत्रीय विधायक मान. श्री विनय सक्सेना का  
संस्थान में आगमन फरवरी 2019



संस्थान का बैण्ड दल



स्वच्छ सर्वेक्षण 2019 - जागरूकता रैली



राज्य स्तरीय विज्ञान नाटिका प्रतियोगिता में  
निर्णायक के रूप में श्रीमती अंजलि सक्सेना (व्या.)

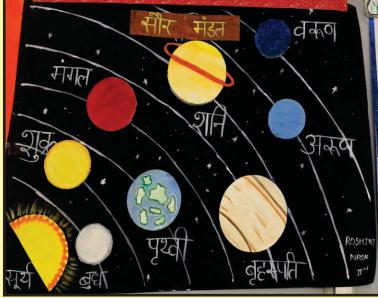
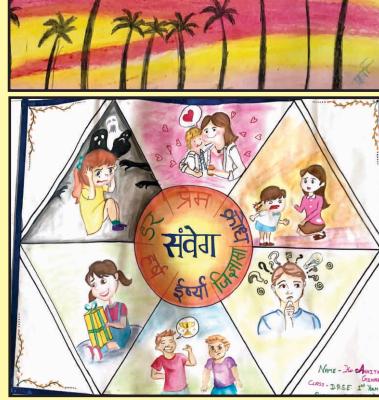
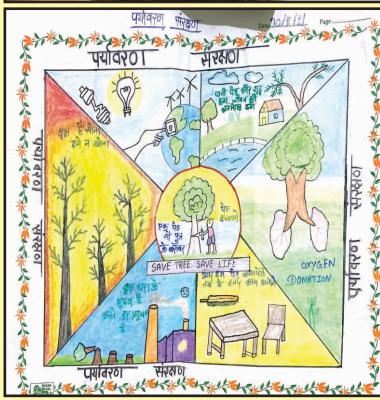
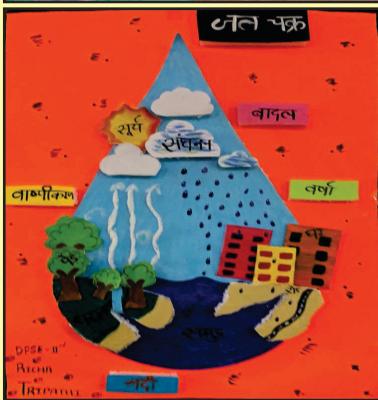
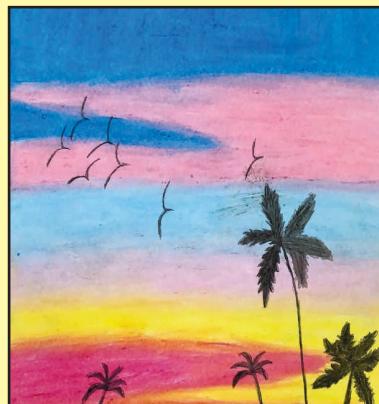
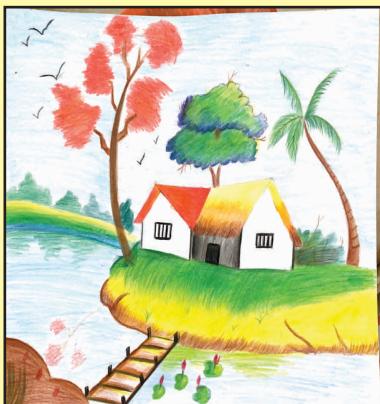
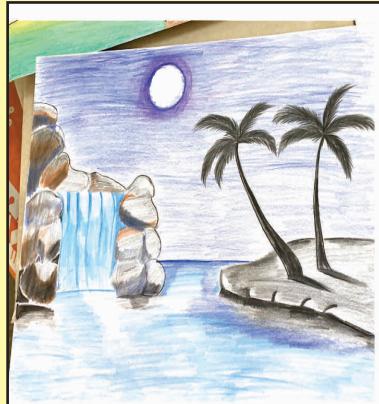
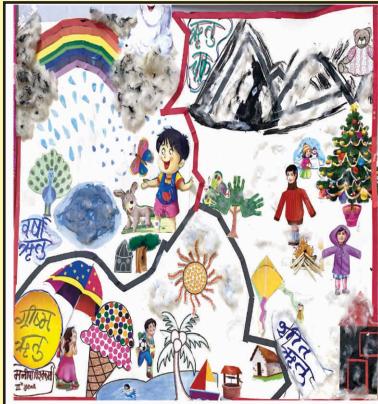


घूमर नृत्य प्राथमिक संवर्ग



बाल कक्ष सांस्कृतिक कार्यक्रम

## फृप्तियां की उडान...





## मेरा भारत, स्वतंत्र भारत, शिक्षित भारत, विकसित भारत

अर्चना सोनी, द्वितीय वर्ष

मेरा भारत एक महान्, विशाल लोकतांत्रिक गणराज्य है। यहाँ पर सभी धर्मों के लोग बिना किसी भेद-भाव के धर्म, लिंग, जाति के आधार पर स्वतंत्र निवास करते हैं। भारत में अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं, क्योंकि विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ग के लोग निवास करते हैं, परंतु सभी का राष्ट्र धर्म ही सर्वोपरि है। हमारे देश में लगभग 1.3 अरब जनसंख्या निवास करती है। देश में जनशक्ति महत्वपूर्ण होती है। जनशक्ति के द्वारा ही कोई भी देश प्रगति कर सकता है। हमारे देश में अपार प्राकृतिक संसाधन हैं, जिनका विदोहन पूर्ण रूप से नहीं हो पाया है। यदि इन संसाधनों का उचित विदोहन प्रारंभ हो जाये तो विदेशी निर्भरता समाप्त हो जायेगी। स्वतंत्रता के बाद से हमारा देश विकासशील राष्ट्र के नाम से जाना जाता है। अभी हमें पूर्णरूप से आत्मनिर्भर एवं विकसित होना है। यह विकास विभिन्नताओं से ऊपर उठकर पूर्ण होगा। हमारे देश में शिक्षा का प्रतिशत बढ़ गया है। आज गाँव-गाँव में शिक्षा पहुँच गई, परंतु शिक्षा का लक्ष्य पूरा नहीं हो पाया है। इस उद्देश्य को पूर्ण करके ही प्रत्येक बच्चा राष्ट्रनिर्माता बनकर देश की प्रगति में सहयोग करेगा। हमें शिक्षा के मूल्य एवं महत्व को समझकर शिक्षा के अभियान को पूर्ण करना होगा, जिससे हमारे नये भारत का निर्माण हो सके। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम सर्वांगीण विकास कर सकते हैं और आत्म निर्भर बन, विकसित हो सकते हैं। आज हम कई मायनों में आत्मनिर्भर होकर विदेशों को भी सहायता पहुँचा रहे हैं। हम ऐसे ही निरंतर प्रगति पथ पर बढ़कर वसुधैव कुटुम्बकम की नीति द्वारा सभी राष्ट्रों को सहयोग कर सकें, इसके लिए हमें जागरूक होना है, और लोगों को जागरूक करना है।

“एकता में ही बल है” सर्वविदित है। एक अकेला इंसान कुछ नहीं कर पाता लेकिन यदि सभी मिलकर कार्य करते हैं तो वही कार्य सरलता से हो जाता है। ऐसे ही हमें मिलकर अपने देश को उन्नत राष्ट्र बनाना है। आज हमारी सैन्य शक्ति अपार है जिसके द्वारा हम सुरक्षित हैं। हमें एकता के सूत्र में बँधकर प्रगति करते हुए भारत का नया स्वरूप बनाना है।

मेरे देश की धरती, सोना उगले

उगले हीरे मोती

मेरे देश की धरती.....

उन शहीदों को शत्-शत् नमन है जिन्होंने भारत माता की आन-बान एवं शान बनाये रखी है।

जय जवान! जय किसान! जय विज्ञान!

जय हिन्द - जय भारत

ऐसा कोई काम नहीं जो किया ना जा सके। जब आप विश्वास के साथ कहते हैं कि, आप कोई

काम कर सकते हैं, तो आपका दिमाग उसे करने के तरीके ढूँढ़ लेता है।



## मेक इन इण्डिया परिचय

शमा ब्रेगम, द्वितीय वर्ष

नयी दिल्ली में 25 सितम्बर 2014 को भारत में “मेक इन इण्डिया” नाम से एक पहल की शुरूआत भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की गयी। इस अभियान का मुख्य लक्ष्य, भारत को आर्थिक स्तर पर वैश्विक पहचान दिलाना है। इस कार्यक्रम को आरंभ के रूप में देखना चाहिये। भारत में बाजार के रूप में सेवा-चालित वृद्धि मॉडल से भारतीय अर्थव्यवस्था को नया रूप देना इस अभियान का लक्ष्य है। इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करना, भारत में 10 मिलियन से ज्यादा लोगों के लिये रोजगार का कारण बनेगा। ये एक असरदार योजना है, जो भारत में अपने व्यवसाय को लगाने के लिये प्रमुख विदेशी कंपनियों को आकर्षित करेगी।

आओ चलो व्यापार करें

हम और तुम सुधार करें

एक नए भारत के सपने को साकार करें।

आओ हम सब मिलकर भारत में व्यापार करें॥

वैश्विक केन्द्र बनाने के लिये, देश में डिजिटल नेटवर्क के बाजार के सुधार के साथ ही असरदार भौतिक संरचना के निर्माण पर केन्द्रित, भारत सरकार द्वारा मेक इन इण्डिया अभियान की शुरूआत की गयी।

इस योजना के सफलतापूर्वक लागू होने से भारत में 100 स्मार्ट शहर प्रोजेक्ट और वहन करने योग्य घर बनाने में मदद मिलेगी। प्रमुख निवेशकों की मदद के साथ देश में ठोस वृद्धि और मूल्यवान रोजगार उत्पन्न करना इसका मुख्य लक्ष्य है। ये दोनों तरफ के लोगों को फायदा पहुँचायेगा, निवेशक और हमारे देश दोनों को। निवेशकों के असरदार और आसान संचार के लिये एक ऑनलाइन पोर्टल और एक समर्पित सहायक टीम भारत सरकार ने बनायी है।

## मेक इन इण्डिया निवेश योजना

श्रुति दुबे, द्वितीय वर्ष

भारत का निर्यात उसके आयात से कम होता है। इसी ट्रेंड को बदलने के लिए, सरकार ने वस्तुओं और सेवाओं को देश में ही बनाने की मुहिम को शुरू करने के लिए, मेक इन इण्डिया यानी भारत में बनाओ नीति प्रारंभ की थी। इसके माध्यम से सरकार भारत में अधिक पूँजी और तकनीकी निवेश पाना चाहती है। इस परियोजना के शुरू होने के बाद सरकार ने कई क्षेत्रों में लगी F.D.I. की सीमा को बढ़ा दिया है लेकिन सामरिक महत्व के क्षेत्रों जैसे-अंतरिक्ष में 74 प्रतिशत, रक्षा 49 प्रतिशत और न्यूज मीडिया 26 प्रतिशत को अभी पूरी तरह से विदेशी निवेश के लिए नहीं खोला है। वर्तमान में चाय बागान में एफडीआई के लिए कोई प्रतिबंध नहीं है।



- इस योजना के शुरू होने के समय से इसकी वेबसाईट पर इन्वेस्ट इंडिया के “निवेशक सुविधा प्रकोष्ठ” को लाखों सवाल मिले हैं। जापान, चीन, फ्रांस, और दक्षिण कोरिया जैसे देशों ने विभिन्न औद्योगिक और बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में भारत में निवेश करने हेतु अपना समर्थन दिखाया है।

## मेक इन इंडिया लोगो

विनीता तिवारी, द्वितीय वर्ष

मेक इन इंडिया के लोगो (प्रतीक चिन्ह) में शेर का इस्तेमाल किया गया है। इस लोगो में रेल्वे के इंजीनियर्स ने एक ऐसा आर्ट वर्क तैयार किया है, जो मेक इन इंडिया का संदेश देता है। इसे तैयार करने के लिए पाँच टन लोहे के कबाड़ का उपयोग किया गया है। मेक इन इंडिया के इस लोगो को “उरकुरा” स्टेशन के स्कैप यार्ड में तैयार किया गया है। इस का प्रतीक चिन्ह, भारत के राष्ट्रीय प्रतीक से लिया हुआ, एक विशाल शेर है, जिसके पास ढेर सारे पहिये हैं जो शांतिपूर्ण प्रगति और चमकीले भविष्य के रास्ते को इंगित करते हैं। कई पहियों के साथ चलते हुए, शेर वाले, हिम्मत, मजबूती, दृढ़ता और बुद्धिमत्ता को इंगित पेज को हजारों लाइक्स मिले हैं। आरंभ करने की तारीख से कुछ महीनों के अंदर, ट्विटर पर इसके 130000 से ज्यादा फालोअर्स हो चुके हैं।

## मेक इन इंडिया में रोजगार के अवसर

रोशनी नायक, द्वितीय वर्ष

- इस योजना में घरेलू और विदेशी, दोनों निवेशकों को एक अनुकूल माहौल उपलब्ध कराने का वादा किया गया है। मेक इन इंडिया के पीछे सोच यह थी कि, भारत को एक मजबूत निर्माण केन्द्र के रूप में परिवर्तित करके रोजगार के अवसर पैदा किये जा सकेंगे।
- मेक इन इंडिया का दृष्टिकोण, निवेश के लिए अनुकूल माहौल बनाना, आधुनिक और कुशल बुनियादी संरचना, विदेशी निवेश के लिए नये क्षेत्रों को खोलना और सरकार एवं उद्योग के बीच एक बेहतर साझेदारी का निर्माण करना है, जिससे रोजगार के अधिक अवसर पैदा हो सकेंगे।

## मेक इन इंडिया में निर्यात सम्भावनाएँ

नीतू गौड़, द्वितीय वर्ष

भारत का निर्यात उसके आयात से कम होता है, इस विसंगति को दूर करने के लिए मेक इन इंडिया योजना का एकमात्र उद्देश्य भारत को ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब में बदलना है। यदि वस्तुओं का निर्माण हमारे देश में ही किया जाये तो, स्पष्ट है कि ये वस्तुएँ सस्ती भी होंगी और अधिक मात्रा में उत्पादन होने से हमारी निर्यात सम्भावनाएँ भी बढ़ जायेंगी।



## इंद्रधनुष नई शिक्षा नीति 2020

### नई शिक्षा नीति - प्रमुख बातें

रचना जाटव, डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा नीति है जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित किया गया। सन् 1986 में जारी हुई नई शिक्षा नीति के बाद भारत की शिक्षा नीति में यह पहला नया परिवर्तन है। यह नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक के कस्तुरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है।

#### प्रमुख बातें

1. नई शिक्षा नीति 2020 के तहत वर्ष 2030 तक सकल नामांकन अनुपात को 100 प्रतिशत लाने का लक्ष्य रखा गया है।
2. नई शिक्षा नीति के अंतर्गत शिक्षा क्षेत्र पर सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है।
3. मानव संसाधन मंत्रालय का नाम परिवर्तित कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है।
4. पांचवीं कक्षा तक की शिक्षा में मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है, साथ ही मातृभाषा को कक्षा 8 और आगे की शिक्षा के लिए प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है।
5. ECCE को अनिवार्य कर दिया गया है।

### नई शिक्षा नीति में शाला पूर्व शिक्षा

अंजली चौधरी, डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष

बचपन की देखभाल और शिक्षा पर जोर देते स्कूल पाठ्यक्रम के 10+2 ढाँचे की जगह 5+3+3+4 की नयी संरचना लागू की जाएगी, जो क्रमशः 3-8, 8-11, 11-14 और 14-18 उम्र के बच्चों के लिए है। इसमें अब तक दूर रखे गए 3-6 साल के बच्चों को स्कूली पाठ्यक्रम के तहत लाने के प्रावधान है, जिसे विश्व स्तर पर बच्चे के मानसिक विकास के लिए महत्वपूर्ण चरण के रूप में मान्यता दी गई है। नई प्रणाली में 3 साल की आँगनबाड़ी/प्री स्कूलिंग के साथ 12 साल की स्कूली शिक्षा होगी। NCERT 8 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए, प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा के लिए, एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचा (NCFECCE) विकसित करेगा। एक विस्तृत और मजबूत संस्थान प्रणाली के माध्यम से प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ECCE) मुहैया कराई जाएगी। इसमें आँगनबाड़ी और प्रीस्कूल भी शामिल होंगे, जिसमें ईसीसीई शिक्षाशास्त्र और पाठ्यक्रम में प्रशिक्षित शिक्षक और आँगनबाड़ी कार्यकर्ता होंगे। ECCE की योजना और कार्यान्वयन मानव संसाधन विकास, महिला और बाल विकास (WCD), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण (HFW) और जनजातीय मामलों के मंत्रालयों द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा। बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान की प्राप्ति को, सही ढंग से सीखने के लिए अत्यंत जरूरी एवं पहली आवश्यकता मानते हुए 'NEP 2020' में मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) द्वारा 'बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन' की स्थापना किए जाने पर विशेष जोर दिया गया है।



## प्री-प्राइमरी स्कूल

मनीषा विश्वकर्मा, डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार प्री-प्राइमरी स्कूल खोले जाते हैं तो बच्चों को बहुत ही लाभ होंगे जैसे-

- (1) प्री-प्राइमरी छात्र सीधे शिक्षा विभाग के लिंक से जुड़ जाएँगे।
- (2) बच्चे शासन द्वारा प्रदत्त की जाने वाली सभी योजनाओं का लाभ पा सकेंगे।
- (3) छोटे बच्चे शाला में अध्ययनरत अपने भाई-बहन की देखरेख में रह सकेंगे। उन्हें एक ऐसा वातावरण प्राप्त होगा, जैसे वो घर पर ही हों और अपने आपको अकेला महसूस नहीं करेंगे।
- (4) शासन का फोकस राज्य में (CBSE) पैटर्न भी होना चाहिए, ऐसे प्रयास भी चल रहे हैं जिसका लाभ भी प्री-प्राइमरी के छात्रों को निश्चित रूप से होगा।

नई शिक्षा नीति 2020 में प्री-प्राइमरी शिक्षा को शामिल करना निश्चित रूप से अभिनव पहल है भविष्य में लाभकारी परिणाम आएंगे।

## बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN)

मधु बेन, डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष,

इस शिक्षा नीति में 10+2 पाठ्यक्रम को खत्म कर दिया गया है। इसकी जगह 5+3+3+4 सिस्टम को लाया जा रहा है। इसके तहत अब स्कूल के पहले 5 साल जिसमें पूर्व-प्राथमिक शिक्षा और प्रथम और द्वितीय कक्षा सम्मिलित हैं, इसे मूलभूत अवस्था कहा गया है, जो शिक्षा की नींव तैयार करने का काम करेगी। इसमें पाठ्यक्रम लचीला, खेलकूद और अन्य गतिविधियों पर आधारित होगा। बच्चों के लिए कक्षा 3 तक पहुँचने के पूर्व लिखना-पढ़ना और संख्या कौशल में निपुणता प्राप्त करने का लक्ष्य है।

## शिक्षा का अधिकार

प्रगति विश्वकर्मा, डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (Early Childhood Care & Education) को एक मजबूत बुनियाद के रूप में शामिल किया गया है, जिससे आगे चलकर बच्चों का विकास बेहतर हो। इस तरह शिक्षा के अधिकार (RTE) का दायरा बढ़ गया है। यह पहले 6 से 14 साल के बच्चों के लिए था, जो अब बढ़कर 3 से 18 साल तक के बच्चों के लिए हो गया है।



## विशेष आवश्यकता वाले बच्चों हेतु प्रावधान

अनुपमा चौरे, डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष

इस नई नीति में, विशेष अवश्यकता बाले बच्चों के लिए क्रॉस विकलांगता प्रशिक्षण, संसाधन केन्द्र, आवास, सहायक उपकरण, उपयुक्त प्रौद्योगिकी आधारित उपकरण, शिक्षकों का पूर्ण समर्थन एवं प्रारंभिक से लेकर उच्च शिक्षा तक, नियमित रूप से स्कूली शिक्षा प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करना आदि प्रक्रियाओं को सक्षम बनाया जाएगा।

## उच्च शिक्षा में बदलाव

योगिता सकवार, डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष

नई शिक्षा नीति के अनुसार कला, भाषा, संस्कृति को पहले से अधिक विद्यार्थियों में प्रोत्साहित किया जायेगा। एम.फिल. डिग्री समाप्त कर दी गई है। यदि स्नातक कोर्स करते समय बीच में पढ़ाई छोड़नी पड़ी तो क्रेडिट ट्रांसफर के तहत बाद में पूरा डिग्री कोर्स करने का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

नई शिक्षा नीति के अनुसार सभी उच्च शिक्षा संस्थानों को 2030 तक मल्टी सब्जेक्ट इंस्टीट्यूशन बनाया जाएगा। जिसमें डिस्टेंस लर्निंग और ऑनलाईन शिक्षा को बढ़ावा दिया जायेगा।

## नई शिक्षा नीति - मेरा नज़रिया

दीपा कुमुद, डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा नीति है जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित किया गया। नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया है।

इसमें पहले पाँच साल में प्री-प्राइमरी स्कूल के तीन साल और कक्षा एक और कक्षा दो सहित फांडेशन स्टेज शामिल होंगे। इसके बाद कक्षा 3-5 के तीन साल शामिल हैं। इसके बाद 3 साल का मिडिल स्टेज आएगा यानी कक्षा 6 से 8 तक की कक्षा। चौथा स्टेज (कक्षा 9 से 12 वीं तक का) 4 साल का होगा। कक्षा 9 से विषय चुनने की आजादी होगी। नई शिक्षा नीति में पहली से पांचवीं तक शिक्षा में मातृभाषा का प्रयोग किया जायेगा। मैं एक शिक्षक हूँ।

नई शिक्षा नीति से बहुत सहमत हूँ। शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन जरूरी है। इससे मुझे सीखने-सिखाने का अधिक अवसर प्राप्त होगा।



स्वयं सिद्धा....



## नारी का बंधन भी नारी....

पुष्पा माँझी, डी.पी.एस.ई, प्रथम वर्ष

एक स्त्री होना कितना कठिन है, यह बात केवल स्त्री ही जानती है। कहते हैं कि पुरुषों ने उसका शोषण किया है, उसको यह दयनीय और लाचार जीवन दिया है, परन्तु यह सिर्फ सिक्के का एक ही पहलू है, दूसरा पहलू तो स्वयं स्त्री ही है। एक नारी की स्वतंत्रता दूसरी नारी ही छीनती है, उसे दूसरी नारी की उड़ान भी बर्दाश्त नहीं होती है। प्रायः जब भी किसी स्त्री ने अपने पंखों पर बल लगया है, उसे एक स्त्री ने ही रोका है।

माँ रूपी स्त्री ही तो बेटी को सिखाती है—बड़ी होकर तुझे अच्छी पत्नी बनना है। वह यह क्यों नहीं सिखाती कि बड़ी होकर तुझे एक महान और आदर्श महिला बनना है। स्त्री ही अपनी बेटी को रसोई में बाँध कर उसका बचपन कुचल देती है, और कह देती है, यही आगे काम आयेगा। पैदा होते ही उसे कोसना, बोझ कहना, पराया धन कहना, यह अपने समान स्त्री से ही तो सुनते हैं। एक स्त्री अपने ही समान स्त्री को वस्त्र और गहने रूपी जंजीरों में बाँधती है, उससे कह देती है—यही संसार है तेरा। वह यह क्यों नहीं कहती, इन्हीं छलावों से है दूर तुझे रहना, उठा किताबें, मेहनत कर। ये जो रूप हैं तेरा वह एक दिन ढल जाएगा, पर ज्ञान तेरे माथे का स्वाभिमान है, सदा काम आएगा। जब एक नारी अपने अधिकार के लिए लड़ती है तो उसमें, उसकी परछाई रूपी अन्य नारियाँ साथ नहीं देती हैं। उसके चरित्र को वही दाग लगाती हैं। पर शायद वह यह नहीं जानती कि, ऐसी स्त्रियाँ अपने जीवन में अधिकार के लिए लड़ती हैं ताकि, उनके समान बाकी स्त्रियों को वैसी ही लड़ाई न लड़नी पड़े।

जब एक स्त्री पर कोई अत्याचार हो रहा होता है तो, उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा जो उस पर अत्याचार कर रहा होता है, वह दूसरी स्त्री होती है, जो कह देती है—यही नियति है तेरी। मैं हमेशा इंतजार करती हूँ कि, ऐसा एक दिन आएगा, जब एक स्त्री दूसरी स्त्री को उड़ने के लिए पंख दे। तब यह संसार मुझे सच में सुंदर लगेगा।



दौड़ने दो खुले मैदानों में नहे कदमों को साहब।

जिंदगी बहुत भगाती है बचपन गुज़ार जाने के बाद।।

## पढ़ना है.... साधना रघुवंशी, प्रथम वर्ष

एक पिता अपनी बेटी से कहता है

पढ़ना है, पढ़ना है, तुम्हे क्यों पढ़ना है?

पढ़ने को बेटे काफी है, तुम्हे क्यों पढ़ना है?

बेटी पिता से कहती है—जब पूछा ही है

तो सुनो मुझे क्यों पढ़ना है?

क्योंकि मैं लड़की हूँ, मुझे पढ़ना है।

पढ़ने की मुझे मनाही है, इसलिए पढ़ना है।

दर-दर नहीं भटकना, इसलिए पढ़ना है।

मुझे अपने पैरों पर चलना है, इसलिए पढ़ना है।

मुझे अपने डर से लड़ना है, इसलिए पढ़ना है।

क्योंकि मैं लड़की हूँ, मुझे पढ़ना है।।



मुझे पढ़ना है ज़रूरी

सोच भन साकार ॥  
मनमें भी से धार ॥  
पिछेगा भेड़ी सेवन का भल  
किंजी भेर काना संसार ॥

स्वयं सिद्धा...



### नारी तुम

रंजना पटेल, प्रथम वर्ष

नारी तुम प्यार हो,  
जीवन का आधार हो ।  
श्रद्धा की प्रतिमा हो,  
सिद्धि शक्ति गरिमा हो ।  
नारी तुम पुष्प का पराग हो,  
जिन्दगी का अनुराग हो ।  
ईश्वर की कल्पना हो,  
ऋषियों की आराधना हो ।  
विकृति मे प्रकृति हो,  
सर्वेश्वर की नेक कलाकृति हो ।  
सूरज की रौशनी चांद की चाँदनी हो,  
फनकार के कंठ की रागिनी हो ।  
लोक रंजन हो लोक मंगल हो,  
प्रीति हो, नीति हो सुकीर्ति हो ।  
नारी तुम दर्पण हो अर्पण हो,  
रंजना के जीवन का समर्पण हो ।



### नारी के सपने

सपना विश्वकर्मा

प्रथम वर्ष

हर घर में नारी के सपने हैं,  
खुद का इक आकाश चुने ।  
बाप का सीना बने हिमालय,  
हर बेटी विश्वास बुने ॥  
मुझे भी हक है अपने हिस्से,  
का तो जीवन जीने का ।  
मुझे भी हक है बयाँ करूँ,  
मैं अपना दुख तो सीने का ॥  
किसी भी गुड़िया को,  
फुसलाने वाला ना शैतान मिले ।  
ऐसी गन्दी नियत हो जिसकी,  
फाँसी का अनुदान मिले ॥  
हर नारी है पूज्य हमारी,  
उनका न अपमान करो ।  
मत पूजो तो कम से कम,  
हर नारी का सम्मान करो ॥

### जगत जननी : नारी

प्रीति सराठे, द्वितीय वर्ष

उतारो मुझे जिस क्षेत्र में,  
सर्वश्रेष्ठ कर दिखाऊँगी ।  
औरों से अलग हूँ दिखने में,  
कुछ अलग कर के ही जाऊँगी ॥  
चाह नहीं है एक अलग नाम की,  
इसी नाम को महान बनाऊँगी ।  
नारी हूँ मैं इस युग की,  
नारी की अलग पहचान बनाऊँगी ॥  
जो सदियों से देखा तुमने,  
लिपटी साड़ी में कोमल तन को ।  
घर-घर में रहती थी तो,  
पर जान न सके थे उसके मन को ॥  
अब बदल गयी है ये पहचान,  
नारी की नई परिभाषा ।  
बाणी अभी भी मध्यम मधुर सी  
पर कुछ कर गुजरने की है, प्रबल सी आशा ॥  
चाहे जो भी मैं बन जाऊँ  
गर्व से नारी ही कहलाऊँगी ।  
चाहे युग कोई सा आये,  
मैं ही जगत जननी कहलाऊँगी ॥

### माँ और बेटी

नेहा शाक्य, प्रथम वर्ष

माँ बेटी और बंदिशें,  
पिंजड़े में कैद कबूतर सी हैं,  
उन दोनों की ख्वाहिशें ।  
माँ बूढ़ी चिड़िया है, जिसके  
पंख अब मजबूत नहीं हैं ।  
बिटिया सोन चैरैया है पर,  
उड़ने को गगन महफूज नहीं है ।



ख्यां सिज्जा...

**बेटी**

सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा देवी,  
कहने को अवतार हैं बेटी।  
जीवन का हर बाग-बगीचा,  
करती तो गुलज़ार है बेटी॥  
आँगन, गली, सड़क-मोहल्ले,  
और सजाती घर बार है बेटी।

सपना कोरी, प्रथम वर्ष  
जीवन की डूबती नैया को,  
बचाने वाली खेवनहार है बेटी॥  
पापियों के नाश हेतु,  
चंडी का अवतार है बेटी।  
बेटी जन्म पर खुशी मनाओ,  
क्योंकि अब ना भार है बेटी॥

**स्कूल से कॉलेज तक**

राखी विश्वकर्मा, प्रथम वर्ष

बस्ते का बोझ हल्का हुआ, जिंदगी का वजन भारी हुआ।  
यूँ हमारे कॉलेज का सफर जारी हुआ॥  
कुछ दोस्त नए बने, कुछ पुराने दोस्तों से दूरी हो गई॥  
स्कूल में खुलकर रो देते थे, लेकिन यहाँ चुप रहने की मजबूरी हो गई॥  
समझदारी हमारे अंदर कुछ इस तरह घर करने लगी।  
कि एक्टर, पायलट, क्रिकेटर बनने की खाहिश भी मरने लगी॥  
गलती करती थी तो अपने समझा देते थे, जीवन कभी ना भारी हुआ।  
अब तो अपने जीवन की गाड़ी का खुद ही चालक खुद ही सवारी हुआ॥  
आसान नहीं बिल्कुल सीधे स्कूल से कॉलेज के माहौल मे ढल जाना।  
दूसरों के लिए बदल जाना खुद के लिए बदल जाना॥

**कौन तय करेगा?**

सरोज रावत कायंदे, प्रथम वर्ष  
मेरे बर्दाश्त की हद, कौन तय करेगा...?  
मेरे इम्तहान की हद, कौन तय करेगा...?  
रंग-ए-रूसवाई में डूबे कसीदे पढ़कर .....  
मेरे ईमान की हद, कौन तय करेगा....?  
सियासत उनकी मेरे पर कतरने की है....  
मेरे उड़ान की हद, कौन तय करेगा...?  
लब सिले रखूँ तो, अच्छी लगूँ सबको.....  
मेरे इस मौन की हद, कौन तय करेगा...?  
करती थी, करती हूँ, करती रहूँगी तुझपर....  
मेरे इस यकीन की हद, कौन तय करेगा?

**शेर से शेर**

अफशाँ निगार, द्वितीय वर्ष  
मंज़िल मिलें ना मिलें,  
ये तो मुक़द्र की बात है।  
हम कोशिश भी ना करें,  
तो यह गलत बात है॥  
जिंदगी जाख्तों से भरी है,  
वक्त को मरहम बनाना सीख लो।  
हारना तो है एक दिन मौत से,  
फिलहाल जिंदगी जीना सीख लो॥  
जिंदगी में जितना शांत रहोगे,  
अपने आपको हमेशा, उतना ही मजबूत पाओगे।  
क्योंकि लोहा ठंडा होने पर ही मजबूत होता है,  
इस बात को सच पाओगे॥  
अगर आप सही हो तो,  
कुछ साबित करने की कोशिश मत करो।  
बस सही बने रहो,  
और सही वक्त का इंतज़ार करो॥



## बुरी आदत

विधि तिवारी, कक्षा 2 अ

एक आदमी था जिसे शराब पीने की आदत थी। उससे उसके सारे घर वाले परेशान थे। उसको उसके घर वालों ने सलाह दी कि गाँव में एक गुरु जी हैं, जो सभी को सही राह दिखाते हैं, तुम उनके पास जाओ। वो अहंकारी और घमण्डी आदमी यह सोचकर कि देखता हूँ कि, ये गुरु जी कैसे मेरी शराब छुड़ाते हैं? जो आज तक मेरे परिवार वाले नहीं कर पाए वो ये गुरु जी कैसे करते हैं? गुरुजी के पास गया।

वह गुरु जी के पास गया और बोला- गुरु जी मुझे शराब पीने की आदत है, मुझे ये शराब नहीं छोड़ती मैं क्या करूँ? गुरु जी बोले- तुम एक काम करो, तीन दिन बाद आओ।

तीन दिन बीत जाने के बाद वो शराबी आदमी गुरु जी के पास गया तो गुरुजी उस आदमी को एक आम के पेड़ के पास लेकर गए और कहा कि इस पेड़ के तने को पकड़ लो। कुछ समय बाद गुरु जी ने कहा कि अब तुम इस पेड़ को छोड़ दो। उसने वैसा ही किया। उसके बाद गुरु जी ने उस पेड़ के तने को पकड़ लिया और कहने लगे- अरे भाई मुझे इस पेड़ से छुड़ाओ इसने मुझे पकड़ लिया है। वो व्यक्ति बोला- गुरु जी आपने इस पेड़ को पकड़ा है न कि पेड़ ने आपको? गुरु जी ने कहा- अरे हाँ मैंने ही तो, पेड़ को पकड़ कर रखा है, तो मैं इसे छोड़ देता हूँ। और गुरु जी ने उस पेड़ को छोड़ दिया। तब गुरु जी ने उस आदमी को समझाया कि जिस तरह मैं इस पेड़ को पकड़ा था, तो उसे छोड़ना भी मेरा ही काम था। उसी तरह शराब को तुमने पकड़ के रखा है। न कि शराब ने तुम्हें? तो शराब को छोड़ना तुम्हारा काम है। उस आदमी को अहसास हुआ कि हाँ शराब को मैंने पकड़ रखा है तो मैं आज से शराब पीना बंद करता हूँ। इससे उसका पूरा परिवार उससे खुश हो गया और उससे सभी प्यार करने लगे।

**निष्कर्ष** - इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि बुरी आदतें हम ही पकड़ते हैं, तो उन्हे छोड़ना भी हमारा काम है। इससे हमारे आस-पास के लोग हमेशा हमारे साथ खुश रहते हैं।

“आत्मारूपी रजिस्टर में हमारे सब कर्म और दुष्कर्म दर्ज हो जाते हैं।”

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

### आम की टोकरी

शौर्य पटेल, कक्षा-3 ब  
छः साल की छोकरी,  
भरकर लाई टोकरी  
टोकरी में आम हैं,  
नहीं बताती दाम है।  
दिखा-दिखाकर टोकरी,  
हमें बुलाती छोकरी।  
हमको देती आम है,  
नहीं बताती नाम है।  
नाम नहीं अब पूछना,  
हमें आम है चूसना।

### बिल्ली चूहा

अर्पिता लोधी, कक्षा-2 ब  
बिल्ली बोली-बड़ी जोर का,  
मुझको हुआ जुकाम।  
चूहे चाचा चूरन दे दो  
जलदी हो आराम।  
चूहा बोला बतलाता हूँ,  
एक दवा बेजोड़।  
अब आगे से चूहे खाना,  
बिल्ली दो तुम छोड़।





### कोयल

अनन्या शर्मा, कक्षा-2 अ  
काली कोयल बोल रही है,  
डाल-डाल पर डोल रही है।  
कुहू-कुहू का गीत सुनाती,  
कभी नहीं मेरे घर आती।  
आमों की डाल पर गाती,  
बच्चों के दिल को बहलाती।  
कुहू-कुहू कर किसे बुलाती,  
क्या अम्मा की याद सताती?  
यदि हम भी कोयल बन जाते,  
उड़ते फिरते गीत सुनाते।

### झंडा प्यारा

आराध्या प्रजापति, कक्षा-2 अ  
देखो बच्चे यह झंडा प्यारा।  
तीनों रंगो का मेल है सारा ॥  
रहे सदा यह झंडा ऊँचा।  
आकाश को रहे यह छूता ॥  
सदा करो तुम इसका सम्मान ॥  
कभी ना करना तुम इसका अपमान ॥  
झंडा ही है देश की शान ॥  
बना रहे सदा इसका सम्मान ॥

### प्यारी माँ

पायल कहार, कक्षा-3 ब  
प्यारी जग से न्यारी माँ।  
खुशियाँ देती सारी माँ ॥  
चलना हमें सिखाती माँ।  
मंजिल हमें दिखाती माँ ॥  
खाना हमें खिलाती माँ।  
लोरी गाकर सुलाती माँ ॥  
प्यारी जग से न्यारी माँ।  
खुशियाँ देती सारी माँ ॥

### तितली रानी

आयुषी कैथवास,  
कक्षा-2 ब  
तितली रानी बड़ी सयानी,  
रंग-बिरंगे फूलों पर जाती।  
फूलों से वह रंग चुरा कर,  
अपने पंखों को सजाती ॥  
कोई हाथ लगाए तो,  
छूमंतर हो जाती है।  
पंखों को फैलाकर अपने,  
फूलों पर मंडराती ॥



### तिरंगा

यशमिता देवी मरावी  
कक्षा-3 ब  
तीन रंग का मेरा झंडा,  
लहर-लहर लहराता है।  
मिल-जुलकर रहें हम,  
यह संदेश सुनाता है।  
तिरंगा ऊँचा रहे हमारा,  
देश प्रेम बरसाने वाला,  
तिरंगा ऊँचा रहे हमारा।



### सूरज

डॉली सोनी, कक्षा - 2 ब  
रोज सुबह को सूरज आकर,  
सबको सदा जगाता है।  
शाम हुई लाली फैलाकर,  
अपने घर को जाता है।  
दिन-भर खुद को जला-जलाकर,  
वह प्रकाश फैलाता है।  
उसका जीना है जीना ,  
काम सभी के आता है।



साहिल बंशकार, कक्षा-2 अ  
साफ सफाई की आदत अपना लो,  
कूड़ा कूड़ेदान में डालो।  
मत फैलाओ इधर उधर,  
अच्छी आदत तुम अपना लो।

### स्वच्छता

नितलेश सोंधिया, कक्षा-2 अ  
स्वच्छ रखो सुंदर रखो, भारत देश विशाल।  
आओ बनाएँ साथियों, हिन्दोस्तां खुशहाल ॥  
करो जतन हो जाए यह, सारा जग हैरान ॥  
इस तरह हो स्वच्छता, चमके हिन्दुस्तान ॥  
घर की करते नित्य हम, देखभाल भरपूर ।  
वैसे ही इस देश से, करो गंदगी दूर ॥



## मजेदार चुटकुले

आरोही पटेल, कक्षा-2 ब

अध्यापक - भाईचारा शब्द का प्रयोग  
करके कोई वाक्य बनाओ।

चिंटू - मैंने दूध वाले से पूछा-दूध  
इतना महंगा क्यों है?  
तो वह बोला भाई चारा महंगा हो गया है।

सिंकी जायसवाल, कक्षा-2 ब

लड़की - मैं अपने पापा की परी हूँ  
लड़की - मैं भी अपने पापा का पारा हूँ....।

लड़की - पारा? ये क्या है?

लड़का - मुझे देखते ही उनका  
पारा चढ़ जाता है ..... !

अनुष्का पटेल, कक्षा-2 ब

एक बार चूहे के दो बच्चे  
बाइक पर घूम रहे थे

रास्ते में उन्हें शेर का बच्चा मिला  
उसने कहा-मुझे भी बैठा लो,

कुछ सोचने के बाद चूहे ने कहा- देख ले,  
वरना बाद में तेरी मम्मी बोलेंगी  
गुंडों के साथ घूमता है।

वैष्णवी रैकवार, कक्षा-2 ब  
मास्टर जी - महान वही है जो  
हर वक्त दूसरों की मदद करे।  
पप्पू - पर सर, परीक्षा के वक्त ना  
आप खुद महान होते हैं,  
ना हमें होने देते हैं।

नितिन कुशवाहा, कक्षा-3 ब

अध्यापक - बताओ दुनियाँ  
गोल है, या चपटी?

चिंटू - सर दुनिया न गोल है न चपटी।  
मेरे पापा कहते हैं दुनियाँ 420 है।  
और मेरे पापा कभी झूठ नहीं बोलते।



माही बर्मन, कक्षा-3 ब

मास्टर जी - सबसे ज्यादा नशा  
किसमें होता है?

चिंटू - किताब में।

मास्टर जी - कैसे?

चिंटू - क्योंकि किताब खोलते ही  
नींद आ जाती है।





गौणी की तोलनी  
**4**  
Grade



## भगत सिंह

प्रियांशी कोरी, कक्षा 4 ब

शहीद भगत सिंह, भारत के एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था। उनका जन्म अविभाज्य भारत के, पंजाब प्रांत के, लायलपुर जिले के, बंगा गाँव में एक सिख परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह तथा माता का नाम विद्यावती कौर था। इनके पिता सरदार किशन सिंह तथा चाचा अजीत सिंह भी स्वतंत्रता सेनानी थे, यही कारण है कि भगत सिंह भी स्वतंत्रता सेनानी बनने की ओर आकर्षित हुए तथा उन्होंने मात्र 13 वर्ष की आयु में स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। भगत सिंह ने वर्ष 1926 में “नौजवान भारत सभा” की स्थापना की, जिसका उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता था। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान भगत सिंह द्वारा बहु प्रसिद्ध “इंकलाब जिंदाबाद” का नारा दिया गया, जिसका अर्थ है, क्रांति की जय हो।

भगत सिंह ने 17 दिसम्बर 1928 को लाहौर के अंग्रेज अधिकारी जे.पी. सांडर्स की हत्या की, इसके पश्चात् भगत सिंह ने बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर 8 अप्रैल 1929 को ब्रिटिश सेंट्रल असेम्बली में बम फेंका था। 23 मार्च 1931 को भगत सिंह को सुखदेव तथा शिवराम राजगुरु के साथ फांसी दी गई। इस प्रकार वे भारत माँ के लिए शहीद हो गए। भगत सिंह को छोटी उम्र में अपने बलिदान के लिए “शहीद-ए-आज़म” की उपाधि दी गई।

## क्रोध - विष

कृतिका रैकवार, कक्षा 4 ब

क्रोध मनुष्य के लिए विष के सामान है। क्रोध से जीवन के हर क्षेत्र में नुकसान उठाना पड़ता है। महान दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों, चिकित्सकों द्वारा विभिन्न माध्यमों से बतलाया गया है कि, क्रोध के कारण अनेक बीमारियाँ पैदा होती हैं। क्रोध की स्थिति में व्यक्ति की सोचने-समझने की क्षमता घट जाती है। पित्त का प्रकोप बढ़ जाता है, गला सूखने लगता है और रक्त चाप भी बढ़ जाता है। अधिक क्रोध से हाथ-पैर के रोगों भी खड़े हो जाते हैं।

प्रसिद्ध चिकित्सा शास्त्री डॉ. ऐस्टर का कथन है “ 15 मिनिट का क्रोध व्यक्ति के 9.30 घण्टे के श्रम के बराबर शक्ति को नष्ट कर देता है। क्षण भर के क्रोध से 1600 आर.बी.सी. जल जाती हैं जबकि समता के भाव से क्षण भर में 1400 आर.बी.सी. बनती हैं। क्रोध के सामान कोई पाप नहीं और क्रोध के समान कोई शत्रु भी नहीं।

क्रोध को नियंत्रित करने से हमारा फायदा है। हमें चाहिए कि हम उन परिस्थितियों से सावधान रहें जो क्रोध पैदा करती हैं, और जब क्रोध आए तो या तो मौन रहें या फिर एक ग्लास पानी पी लें या एक से बीस तक गिनती गिनें। इतने में क्रोध समाप्त हो जाएगा और हम क्रोध-विष से बच जाएँगे।

### मॉण्टेसरी

#### अपनी हमको प्यारी

आशी साहू, कक्षा-4 अ  
मॉण्टेसरी अपनी हमको प्यारी  
ये सारी दुनियाँ से न्यारी।  
माला में मोती ही सच्चे  
जैसे शाला में हम बच्चे ॥  
करते प्रभु से रोज प्रार्थना  
सबके हित के लिए कामना।  
फिर गुरुओं को शीशा नवाएँ  
अनुशासन जीवन में लाएँ ॥  
खूब पढ़ें हम पढ़ते जाएँ  
सही राह पर बढ़ते जाएँ।  
ज्ञान बढ़ाएँ उद्यम सीखें  
खेल कूद में रहें न पीछे ॥  
फूल हैं हम शाला फुलवारी  
मॉण्टेसरी दुनियाँ से न्यारी ॥

गौरी की चौकड़ी  
**4** Grade

#### बेटियाँ देवियाँ हैं बचा लीजिए

मुस्कुराती रहें, यूँ जतन कीजिए।  
बेटियाँ देवियाँ हैं नमन कीजिए ॥  
शुद्ध मन, शुद्ध अन्तः करण कीजिए।  
बेटियाँ देवियाँ हैं नमन कीजिए ॥  
बेटियों की हिफाजत है दायित्व भी।  
परवरिश बेटियों की करें प्रेम से ॥  
भेद बेटे और बेटी का हवन कीजिए।  
बेटियाँ देवियाँ हैं नमन कीजिए ॥  
क्या कमी है भला बेटियों में कोई ॥  
उनके श्रम का भी मन से भजन कीजिए ॥  
बेटियों से संसार चलता रहे।  
बेटियाँ देवियाँ हैं बचा लीजिए ॥



भवित झारिया  
कक्षा-4 ब

### स्वच्छता अभियान

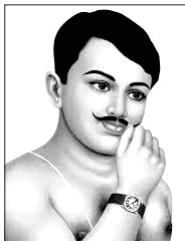
शीहम अली, कक्षा-4 अ  
स्वच्छ भारत के सपने को,  
सबको मिलकर पूरा करना है।  
देश की प्रगति को तो अब  
हम सभी को सुनिश्चित करना है।  
माना कि मंजिल बहुत दूर है,  
फिर भी हिम्मत से आगे बढ़ना है।  
देश के हर नागरिक को अब,  
एक ही रफ्तार से आगे चलना है।  
साफ हो हर घर, गली, चौराहा,  
यह बात निश्चित करना है।  
देश को अब गंदगी से मुक्त करना है।

### स्वच्छता

रौनक राजपूत, कक्षा-4 अ  
साफ-सफाई का सपना,  
बापू जी के ध्यान में।  
आओ मिल हाथ बढ़ाएँ,  
स्वच्छ भारत अभियान में ॥  
घर ऊँगन की करें सफाई,  
साफ दिखे हर कोना।  
इधर-उधर मत फेंको कूड़ा  
दिल में यही संजोना ॥  
करो इकट्ठा साथ,  
सब डालो कूड़ेदान में।  
आओ मिलकर हाथ बटाएँ,  
स्वच्छ भारत अभियान में ॥



गोरी की गोली  
4  
Grade



## चन्द्रशेखर आज़ाद

आस्था विश्वकर्मा, कक्षा 4 ब

**चन्द्रशेखर आज़ाद** – चन्द्रशेखर आज़ाद का जन्म 23-07-1906 में भाँभरा मध्यप्रदेश में हुआ था, जो वर्तमान अलीराजपुर जिले में स्थित है।

\* चन्द्रशेखर आज़ाद अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने वाले एक जु़़ारू एवं निडर योद्धा थे।

\* ‘आज़ाद’ सशस्त्र क्रांति द्वारा स्वाधीनता की प्राप्ति के समर्थक थे। अपनी क्रांतिकारी विचारधारा के तहत वे राष्ट्रीय स्वाधीनता के क्रांतिकारी आंदोलन में जुड़े।

- \* 1921 में उनके क्रांतिकारी जीवन का प्रारंभ हुआ।
- \* भगतसिंह, सुखदेव तथा रामप्रसाद बिसमिल ने जब पंजाब में क्रांतिकारी आंदोलन प्रारंभ किया तो आज़ाद उत्तर प्रदेश में सक्रिय थे।
- \* आज़ाद लाला लाजपतराय को लाठी-प्रहर से घायल करने वाले, ब्रिटिश सरकार के, पुलिस के उच्चाधिकारी सांडर्स को मौत के घाट उतारने वाले दल में सक्रिय थे।
- \* आज़ाद का नाम ही क्रांतिकारी-शौर्य और देशप्रेम का पर्याय था।
- \* जब सैंकड़ों अफसरों और सिपाहियों ने इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में उन्हें घेर लिया तो वे घंटों वीरतापूर्वक उनका मुकाबला करते हुए और एक अप्रितम शौर्य की मिसाल कायम करते हुए शहीद हो गये।
- \* इतिहास ‘आज़ाद’ को उनकी क्रांतिकारी शहादत के लिए युगों-युगों तक याद रखेगा।



## चिट्ठी का सफर

सरिता झारिया, कक्षा 4 ब

आज कनु अपने पापा को बहुत याद कर रही थी। उसके पापा भोपाल में नौकरी करते हैं, और वह अपने गाँव में अपनी मम्मी के साथ रहती है। मम्मी ने उसे समझाया कि तुम्हारे पापा अभी कुछ दिन बाद आएँगे, एक-दो दिन में उनकी चिट्ठी आने वाली है, परन्तु कनु नहीं मानी और रोते-रोते सो गई।

कनु – “कौन हो तुम?” चिट्ठी – “अरे! मुझे नहीं पहचाना, मैं तो चिट्ठी हूँ।” कनु – “तुम कहाँ से आई हो?” चिट्ठी – “मुझे भोपाल से तुम्हारे पापा ने भेजा है।” कनु – “तुम मेरे पास कैसे पहुँची?” चिट्ठी – “तुम नहीं जानतीं? आओ मैं सुनाती हूँ तुम्हें अपनी कहानी-तुम्हारे पापा ने मुझे डाकखाने से खरीदा। फिर मेरे अन्दर बहुत-सी



# 4 Grade

बातें लिखकर बन्द कर दिया। मेरे ऊपर तुम्हारा पता लिखा और लाल रंग के लेटर बॉक्स में डाल दिया। वहाँ मेरे और भी भाई-बहन थे। सबसे मिलकर मैं खुश थी। तभी किसी ने बॉक्स को खोला और हमें पकड़-पकड़ अपने थैले में ढूँस दिया। सच मानो तो मेरा दम निकल रहा था। उसने हमें अपनी पीठ पर लादा और एक बड़े कमरे में लाकर पटक दिया। हम एक-दूसरे से बहुत बुरी तरह टकराए, परन्तु डर के मारे कुछ नहीं बोले। उसने थैले को खोला तो चैन मिला, लेकिन तभी उसने पास पड़े ठप्पे को उठाया और मेरे ऊपर बहुत जोर से मारा, फिर पकड़कर मुझे थैले में पड़े कार्ड, लिफाफे और मनीऑर्डर के साथ बन्द करके गाड़ी में डाल दिया। मुझे तुम्हारे शहर लाया गया। यहाँ भी उसी प्रकार ठप्पा लगाया गया।”

कनु—“अरे हाँ तुम्हारे ऊपर काले रंग के दो निशान से लगे हैं। इन पर कुछ लिखा भी है— एक ओर भोपाल और दूसरी ओर लिखा है—तुम्हारे गाँव का नाम।” चिट्ठी बोली— “इस तरह मेरा सफर समाप्त हुआ। अब कम्प्यूटर ईमेल और मोबाइल के आ जाने से मेरी पूछ न के बराबर हो गई, लेकिन मेरा महत्व आज भी बना हुआ है।” तभी मम्मी ने आवाज दी—“कनु उठो देखो तुम्हारे पापा की चिट्ठी आई है।” कनु की नींद खुल गयी, वह खुशी के साथ दौड़ी—पापा की चिट्ठी पढ़ने।

## सफाई

शिमरा, कक्षा 4 ब

स्वच्छ रहे ये देश हमारा।  
लगे जहाँ मे सबसे न्यारा ॥।  
मिल जुलकर हम करें सफाई ।  
इसी में सबकी है भलाई ॥।



स्वच्छ रहे ये देश हमारा,  
कूड़ा कचरा न सड़क पे डालो ।  
बीमारी को तुम ना पालो ॥।  
मिलकर हम सब पेड़ लगायें ।  
पर्यावरण को हरा भरा बनायें ॥।

“संगीत का आनंद लेने में  
भाषा आड़े नहीं आती”

## भारत के राष्ट्रपति

खुशबू ठाकुर, कक्षा 4 थी ब

- |                                     |                                   |
|-------------------------------------|-----------------------------------|
| 1. राजेन्द्र प्रसाद                 | 26 जनवरी 1990 से 13 मई 1962 तक    |
| 2. डॉ. सर्वपली राधाकृष्णन           | 13 मई 1962 से 13 मई 1967 तक       |
| 3. डॉ. जाकिर हुसैन                  | 13 मई 1967 से 3 मई 1969 तक        |
| 4. वराहगिरि वेंकटगिरि               | 3 मई 1969 से 20 जुलाई 1969 तक     |
| 5. न्यायमूर्ति मोहम्मद हिदायतुल्लाह | 20 जुलाई 1969 से 24 अगस्त 1969 तक |
| 6. वराहगिरि वेंकटगिरि               | 24 अगस्त 1969 से 24 अगस्त 1974 तक |
| 7. फखरुर्रदीन अली अहमद              | 24 अगस्त 1974 से 11 फरवरी 1977 तक |
| 8. बसपा दनपा जत्ती                  | 11 फरवरी 1977 से 25 जुलाई 1977 तक |
| 9. नीलम संजीव रेड्डी                | 25 जुलाई 1977 से 25 जुलाई 1982 तक |
| 10. ज्ञानी जैल सिंह                 | 25 जुलाई 1982 से 25 जुलाई 1987 तक |
| 11. रामस्वामी वेंकट रमण             | 25 जुलाई 1987 से 25 जुलाई 1992 तक |
| 12. डॉ. शंकर दयाल शर्मा             | 25 जुलाई 1992 से 25 जुलाई 1997 तक |
| 13. के.आर. नारायणन                  | 25 जुलाई 1997 से 25 जुलाई 2002 तक |
| 14. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम        | 25 जुलाई 2002 से 25 जुलाई 2007 तक |
| 15. प्रतिभादेवी सिंह पाटिल          | 25 जुलाई 2007 से 25 जुलाई 2012 तक |
| 16. श्री प्रणव मुखर्जी जी           | 25 जुलाई 2012 से 25 जुलाई 2017 तक |
| 17. रामनाथ कोविंद                   | 25 जुलाई 2017 से अब तक            |



# 4 Grade

## घमण्डी पेड़

अनुज पटेल, कक्षा 4 ब



बहुत समय पहले की बात है, एक जंगल में दो पेड़ थे, एक था आम का और दूसरा पीपल का। दोनों बहुत ही सुंदर एवं हरे-भरे पेड़ थे। आम का पेड़ स्वभाव से अपने फल की तरह ही मीठा था। पक्षी उसकी डाल के ऊपर बैठकर फल खाते और सारा दिन गुनगुनाते रहते थे। आम का पेड़ भी इन गानों के साथ-साथ झूलता रहता था। पीपल के पेड़ को खुद के ऊपर बहुत घमण्ड था। कोई उसकी छाँव या उसकी डाल पर बैठे उसे बिल्कुल पसंद नहीं था। एक बार रानी मधुमक्खी अपने साथियों के साथ जंगल में रहने आयी। उसकी नजर पीपल के पेड़ पर पड़ी। ये पेड़ बहुत घना हैं, इसमें हम अपना छत्ता बना सकते हैं, ये बोल कर रानी मधुमक्खी बहुत विनम्रता से पीपल के पेड़ से बोली-हे! पीपल के पेड़ हम इस जंगल में नए हैं, क्या तुम हमें डाल पर छत्ता बनाने दोगे? पीपल का पेड़ बहुत सख्ती से बोला-जाने कहाँ से मुँह उठाकर चले आते हैं। नहीं-नहीं यहाँ छत्ता नहीं बनेगा। तुम यहाँ से चली जाओ। मधुमक्खी पीपल के पेड़ के बाद आम के पेड़ के पास गयी और उससे मदद की विनती की। आम का पेड़ पीपल के पेड़ से बोला-भाई तुम सबके साथ ऐसा क्यों करते हो? तुम्हारे पास तो बहुत ज्यादा जगह है, थोड़ी जगह मधुमक्खियों को दे देने से क्या होगा? आम का पेड़ बोला-तुम्हें इतनी दया आ रही है। तो तुम क्यूँ नहीं इन्हें आश्रय दे देते? आम का पेड़ बोला-तुम सभी मेरी डालियों पर छत्ता बना सकती हो। सभी मधुमक्खियों ने आम के पेड़ पर छत्ता बना कर रहना शुरू कर दिया। ऐसे ही कुछ दिन बीत गए। एक दिन जंगल में दो लकड़ियाँ काटने आते हैं। वह दोनों आम के पेड़ को देखकर बहुत खुश हो जाते हैं। पहला साथी कहता है-यह पेड़ बहुत मोटा है। इसे बेचकर बहुत पैसा मिलेगा। चलो इसे काटते हैं। दूसरा साथी कहता है-अरे बाप रे! इस पेड़ पर मधुमक्खी का छत्ता है। यदि हम इसको काटेंगे तो ये हमें नहीं छोड़ेंगी। चलो दूसरा पेड़ काटते हैं। पहला साथी कहता है-बिल्कुल सही है। वे दोनों पीपल के पेड़ को काटने लगे। आम के पेड़ ने पीपल के पेड़ को कटते देखकर मधुमक्खी से कहा-जाओ और उसकी रक्षा करो, नहीं तो वह उसे काटकर मार देंगे। फिर मधुमक्खियों ने पीपल के पेड़ की रक्षा की। पीपल का पेड़ मधुमक्खियों से बोला-मुझे क्षमा कर दो। अब से मैं ऐसा नहीं करूँगा। मुझे बचाने के लिए आप सबका धन्यवाद!

**सीख -** हमें हमेशा दूसरों की मदद करनी चाहिए।



“पेड़ धरा के गहने हैं, करते दूर प्रदूषण हैं।  
हम सबको भाते हैं पेड़, हरियाली लाते हैं पेड़।  
पत्थर खाकर भी फल देते, हवा के विष को ये हर लेते।  
साफ हवा हर पल ये देते, फिर भी हमसे कुछ न लेते।”





पंचम स्वर...

## एक बार की बात है...

खुशबू झारिया ५ 'अ'

एक राजा शिकार करने के लिए वन में गए। एक हिरण को देख कर उन्होंने अपने थोड़े को उसके पीछे दौड़ा दिया। हिरण का पीछा करते हुए, उनके बाकी के साथी उनसे पीछे ही रह गए। राजा दूर तक ऐसे जंगल में पहुंच गए, जहाँ मीलों तक पानी नहीं था। जब राजा कुछ और आगे बढ़े तो उन्हें एक किसान की झोपड़ी दिखाई दी। राजा दौड़कर झोपड़ी के पास गए। झोपड़ी के पास आठ-नौ साल की कन्या खेल रही थी। राजा ने उस कन्या से कहा-बेटी शीघ्र ही एक गिलास जल लाओ, मुझको बहुत जोर से प्यास लगी है। उस कन्या ने राजा को आम मुसाफिर समझ कर एक खाट लाकर डाल दी और बैठने के लिए कहा, तथा जल का एक गिलास लाकर राजा के हाथ में थमा दिया। राजा ने देखा कि पानी में तिनके पड़े हुए हैं, जिनको देखकर राजा को बहुत क्रोध आया और उसी आवेश में आकर उन्होंने कन्या से पूछा - तुम्हारे पिता कहाँ है? कन्या ने उत्तर दिया-मिट्टी को मिट्टी में मिलाने गए हैं। राजा को लड़की पर और ज्यादा क्रोध आया और वे कहने लगे - और साफ जल लाओ। वह कन्या जल लाने के लिए फिर से झोपड़ी के अन्दर गयी। इतने में ही उस कन्या के पिता वहाँ आ गए, उन्होंने तुरन्त राजा को पहचान लिया और उनको प्रणाम किया और कहने लगे - हुजूर आप एक गरीब की झोपड़ी में कैसे पधारे? राजा बोले - मैं शिकार के लिए वन में आया था, अपने साथियों से बिछुड़ कर दूर आ गया हूँ। मुझे बहुत जोर की प्यास लगी थी, तो यहाँ तुम्हारी कन्या से मैंने जल माँगा, तब तुम्हारी कन्या जल में तिनके डालकर ले आई। जब मैंने तुम्हारे बारे में पूछा तो उसने कहा- मिट्टी को मिट्टी में मिलाने गए हैं। कन्या के पिता बोले-हुजूर कन्या ने ठीक ही उत्तर दिया, एक सज्जन के बच्चे की मौत हो गयी थी, हम उसके शरीर को मिट्टी में दबाने गए थे। इतने में तो कन्या भी जल का गिलास लेकर आ गयी। किसान ने पूछा - बेटी तुमने राजा को अच्छा जल क्यों नहीं दिया? कन्या ने उत्तर दिया-पिताजी राजा धूप की तेजी में भागते हुए आए थे। पूरे शरीर से पसीना छूट रहा था, यदि आते ही जल दे देती तो गरम और ठंडे की वजह से राजा को नुकसान कर जाता और राजा बीमार पड़ जाते। इसलिये मना तो नहीं कर सकी, परन्तु जल में तिनके डाल कर लायी, ताकि राजा कुछ समय तक जल न पी सकें। राजा कन्या की चतुराई को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और अपने गले से बहुमूल्य हीरों का हार उस कन्या के गले में डाल दिया, और उनको हमेशा के लिए दरिद्रता के दुखों से छुड़ा दिया। इस तरह कन्या की बुद्धिमानी ने परिवार को दरिद्रता से बाहर निकाल लिया।



“मैं गुलाब का फूल कहलाऊँ, कभी हवा से हिल जाऊँ

कभी किरण से खिल जाऊँ, पास मेरे जो तितली आए,

मधुर-मधुर मुसकाऊँ, और उसको दोस्त बनाऊँ, मैं गुलाब का फूल कहलाऊँ।”





**पंचम स्वर...**

## बलिदानी राजा शंकरशाह और कुंवर रघुनाथ शाह

पूर्वा बाजपेई, कक्षा 5 वीं अ

हमारे जबलपुर और उसके आस-पास के क्षेत्र का स्वतंत्रता की लड़ाई में बहुत बड़ा योगदान रहा है। मुगलों के बाद अंग्रेज आए। 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति की आग भड़क उठी। मंगल पांडे, रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहेब पेशवा, वीर कुंवरसिंह आदि वीर, अंग्रेजों से जूझ पड़े। तब गढ़ा पुरवा (जबलपुर) के राजा शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह के हृदय में भी स्वतंत्रता की अग्नि सुलग रही थी। वो जबलपुर की अंग्रेज सैनिक छावनी में तैनात भारतीय सैनिकों की मदद से अंग्रेजी राज को उखाड़ फेंकने की योजना बना रहे थे। सेना तैयार कर रहे थे।

अंग्रेजी सेना में तैनात भारतीय सैनिकों को जगाने के लिए उन्होंने एक कविता माँ काली को संबोधित करके लिखी। उस कविता में उन्होंने लिखा-

मूँद मुख दंडिन को चुगलों को चबाई खाई,  
खूँद दौड़ दुष्टन को, शत्रु संहारिका।  
मार अंग्रेज, रेज, कर दई माता चण्डी,  
बचै नहीं बैरी, बाल बच्चे संहारिका।  
शंकर की रक्षा कर, दास प्रतिपालकर,  
दीन की सुन आय मात कालिका।  
खाई लेत मलेछन को, झेल नहीं करो अब,  
भच्छन कर तच्छन धौर मात कालिका।



अमर शहीद  
राजा शंकर शाह

अमर शहीद  
कुंवर रघुनाथ शाह

राजा शंकरशाह और कुंवर रघुनाथशाह पर मुकदमा चलाया गया। 18 सितम्बर 1858 को सुबह दोनों पिता-पुत्र को तोपों के मुंह से बांध कर उड़ा दिया गया।

“हे मानव जाति के आदर्शों की पोषक भारतभूमि! तुम्हें नमस्कार है। शताब्दियों तक अगणित आक्रमण सहने पर भी तेरी गरिमा न तो मलिन हुई, न कलुषित। तेरा स्वागत है। हे श्रद्धा, प्रेम, कला और विज्ञान की जन्मदात्री! तुझे शत्-शत् नमन।”

लुई जेकिलिमेट (फ्रांसीसी दार्शनिक)



### पंचम स्वर...

#### बढ़े चलो

हरिप्रसाद पटेल

कक्षा-5 ब

फूल बिछे हों या काँटे हों,  
राह न अपनी छोड़ो तुम।  
चाहे जो विपदायें आयें,  
मुख को जरा न मोड़ो तुम।  
साथ रहें या रहें न साथी,  
हिम्मत मगर ना छोड़ो तुम।  
नहीं कृपा की भिक्षा माँगो,  
कर न दीन बन जोड़ो तुम।  
बस ईश्वर पर रखो भरोसा,  
पाठ प्रेम का पढ़े चलो।  
जब तक जान बची हो तन में,  
तब तक आगे बढ़े चलो।

#### माँ

#### लक्ष्य अग्रही

कक्षा-5 अ

माँ तो जन्नत का फूल है,  
प्यार करना उसका उसूल है।।  
ऐ इंसाँ माँ को नाराज करना,  
तेरी सबसे बड़ी भूल है  
माँ के कदमों की मिट्टी में  
असली में जन्नत की धूल है।।

#### प्यारे बापू

दिव्यांश बंशकार

कक्षा-5 ब

हम सबके थे प्यारे बापू,  
सारे जग से न्यारे बापू।  
कभी न हिम्मत हारे बापू,  
भारत के रखवाले बापू।।  
लगते तो थे दुबले पतले,  
थे ताकत के पुतले बापू।।  
सदा सत्य अपनाते बापू,  
सबको गले लगाते बापू।।  
हम हैं एक, सिखाते बापू।  
अच्छी राह दिखाते बापू,  
बच्चों के अति प्यारे बापू,  
आँखों के थे तारे बापू।।



गाँधीजी से एक सज्जन ने पूछा- “आप कठिनाईयों से निर्भय होकर आगे बढ़ जाते हैं आपकी इस निर्भीकता का क्या रहस्य है?” गाँधीजी बोले- “मेरी ईश्वर पर पूरी आस्था है कि कल्याण पथ के पथिक की दुर्गति नहीं होती। जन कल्याण ही मेरा लक्ष्य है तो मैं क्यों डरूँ?”

#### ॥ हिन्दी ॥

गौरी राजपूत, कक्षा-5 अ

विचारों की बुनियाद है हिन्दी।  
साम्राज्यिक सद्भाव से आबाद है हिन्दी ॥।  
हिन्दी ही है हमारी मातृभाषा।  
हिन्दी ही है हमारी राष्ट्रभाषा ॥।  
हिन्दी में है नौ रंग से नौ रस।  
जिनमें है श्रृंगार, करुण, रौद्र वीभत्स ॥।  
और भयानक, वीर शांत अद्भुत ।।  
ये रस बढ़े हैं भावानुभूत ॥।  
हिन्दी में है अलंकार के भेद तीन ।।  
छन्द भी है हिन्दी की देन ॥।  
हिन्दी से ही उपसर्ग, प्रत्यय ।।  
तत्सम, तद्भव शब्द के अभ्यास ॥।  
हिन्दी में ही संज्ञा, सर्वनाम् ।।  
सन्धि और समास ॥।  
इसी कारण है श्रेष्ठ लेखक और कवि ।।  
जो प्रस्तुत करते हैं हिन्दी की सुन्दर छवि ॥।  
हिन्दी से है लेख और भाषा ।।  
जिससे चमकती है हमारे देश आशा ॥।  
हिन्दी ही हमारी भावनाओं का रूप ।।  
हिन्दी से है जीवन दृष्टि का स्वरूप ॥।  
हिन्दी इतनी महान भाषा ।।  
इससे जुड़ी हुई है हमारी आशा ॥।  
पर क्यों लुप्त हो रही है हिन्दी ॥।  
हिन्दी की महत्ता क्यों कम हो रही है ॥।।  
केवल इसलिए कि दूसरी भाषाएँ ।।  
हमें दिखावे में श्रेष्ठ बनाएँ ॥।।  
इस दिखावे की दुनिया से हिन्दी को बचाना होगा ।।  
अपनी मातृभाषा को वहीं स्थान दिलाना होगा ॥।  
उच्च विचारों की बुनियाद है हिन्दी ॥।  
साम्राज्यिक सद्भाव से आबाद है हिन्दी ॥।



**पंचम स्वर...**

## कोरोना वायरस (कोविड-19)

कशिश पवार, कक्षा 5 ब

पूरे विश्वभर में फैले हुए कोरोना वायरस (कोविड-19) का संक्रमण सबसे पहले दिसम्बर 2019 में चीन के वुहान शहर में हुआ था। यह संक्रमण एक सक्रमित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में जल्द फैल जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यू.एच.ओ. ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। इस वायरस का संक्रमण होने के बाद व्यक्ति को जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, गले में खराश जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यह वायरस अलग-अलग लोगों पर उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता के आधार पर अलग-अलग तरीके से प्रभाव डालता है। इसके गंभीर मामले में फेफड़े में बहुत जयादा परेशानी, फेफड़े, किडनी, लीवर आदि अंगों का फेल होना और मौत भी हो सकती है।

कोरोना वायरस से बचने के लिए हमें मुँह पर मास्क लगाना, सामाजिक दूरी बनाकर रखना, हाथों को बार-बार अच्छी तरह से साबुन से धोना, बीमार व्यक्ति से दूर रहना, अपनी तबियत पर ध्यान देना, कोरोना का टीका जरुर लेना आदि उपायों का सख्ती से पालन करना चाहिए। कोरोना संक्रमण के कारण पूरा विश्व मानो थम सा गया है। वर्तमान में कोरोना का ओमीक्रॉन वेरिएंट दुनियाँ में कहर बरपा रहा है।



कल्पनाओं की उड़ान नहीं तुलिकाओं द्वारा - बाल कक्ष से



## बातारूण

प्रशिक्षणार्थी द्वितीय वर्ष-2017-18		प्रशिक्षणार्थी द्वितीय वर्ष-2018-19		
क्र.	प्रशिक्षणार्थी का नाम	पता	प्रशिक्षणार्थी का नाम	पता
1.	अर्चना ठाकुर	गोटेगांव, नरसिंहपुर	अंकिता नेमा	चौक बाजार, नरसिंहपुर
2.	दसोदा प्रजापति	नई बस्ती, कुशनेर, जबलपुर	कामिनी ठाकुर	एम.एल.बी. स्कूल, जबलपुर
3.	ज्योति धुमके	नीमखेड़ा, जबलपुर	लाली डकहा	लालमाटी, जबलपुर
4.	ज्योति पटेल	पनागर, जबलपुर	प्रशिक्षणार्थी द्वितीय वर्ष-2019-20	
5.	ज्योति बरकड़े	देवरी खुर्द कुण्डम, जबलपुर	अनीता नामदेव	1080, शुक्ला नगर, जबलपुर
6.	कविता उपराले	अधारताल, जबलपुर	माधुरी नामदेव	1407/5, शांति नगर, जबलपुर
7.	निर्मला वर्मा	बलदेवबाग, जबलपुर	मोनिका कोरी	1659, सुहागी, जबलपुर
8.	पूनम पटेल	ग्राम तिघरा, खमरिया, जबलपुर	निशा पाठक	1799 महेशपुर, जबलपुर
9.	पूनम सविता	संजीवनी नगर, जबलपुर	पुष्पा चंदेलिया	वार्ड क्र. 6 पनागर, जबलपुर
10.	फूलबाई	जबलपुर	प्रीति लोधी	ग्राम मझौली, दमोह
11.	पीतांबरा सेन	संजीवनी नगर, जबलपुर	पूजा कुशवाहा	फूलसागर, जबलपुर
12.	रानू गोंटिया	त्रिमूर्ति मंदिर, छापर, जबलपुर	पूजा भलावी	न्यू पुलिस क्वार्टर, जबलपुर
13.	रुचि कोल	ग्वारीघाट, जबलपुर	आयुषी तिवारी	1282, चेरीताल, जबलपुर
14.	रोशनी राठौर	गढ़ाफाटक, जबलपुर	रुबी कोरी	रानीताल, जबलपुर
15.	सरिता गोमासे	गंगानगर रोड, बालाघाट	सविता लोधी	गुजरी कला, तह. रीठी, कटनी
16.	संजू यादव	दमोहनाका, जबलपुर	शमीम बानो	गोहलपुर, जबलपुर
17.	तरुणा तांबे	रामनगर, जबलपुर	सारिका चौहान	बंधैया मोहल्ला, जबलपुर
18.	विनीता विश्वकर्मा	कालीमठ मंदिर, मदन महल जबलपुर	श्रद्धा नामदेव	90क्वार्टर, विजय नगर जबलपुर
19.	प्रतिज्ञा पटेल	ग्राम-सिगुड़ी जिला-उमरिया	यास्मीन बानो	गोहलपुर, , जबलपुर
20.	रोशनी शाक्य	मुरैना म.प्र.	हर्षा मंगरूलकर	840, सुदामा नगर, , जबलपुर
21.	प्रेमलता धुर्वे	डिण्डोरी	पी.निधी जैकब	यादव कालोनी, जबलपुर
22.	गायत्री चौधरी	नरसिंहपुर	संध्या उइके	नैनपुर, मण्डला
			श्रद्धा पाठक	रानीपुर, सुदामानगर, जबलपुर

## बालाङ्गण

### प्रशिक्षणार्थी द्वितीय वर्ष-2020-21

क्र.	प्रशिक्षणार्थी का नाम	पता
1.	अर्चना केवट	संजीवनी, गढ़ा, जबलपुर
2.	दमयंती कोरी	भगत सिंह वार्ड, जबलपुर
3.	अनुपमा श्रीवास्तव	रॉयल सिटी, चौकीताल, जबलपुर
4.	साधना चौबे	धनवन्तरी नगर, जबलपुर
5.	पूजा कुशवाहा	103, वार्ड नं. 3 सिहोरा
6.	जीतू केवट	कमला नेहरू नगर, जबलपुर

प्रशिक्षणार्थी का नाम	पता
द्रोपती विश्वकर्मा	जबलपुर
मनीषा विश्वकर्मा	जबलपुर
सोनम पाण्डेय	जबलपुर
मधु बेन	जबलपुर
दीपा कुमुद	जबलपुर

### प्रशिक्षणार्थी प्रथम वर्ष-2021-22

प्रशिक्षणार्थी का नाम	पता
अंकिता गिनारा	एकता चौक, जबलपुर
सरोज रावत	विजय नगर, जबलपुर
सपना विश्वकर्मा	ग्राम हर्दिहा जिला सीधी
साधना रघुवंशी	पोनिया जिला छिंदवाड़ा
नेहा शाक्या	कांचघर, जबलपुर
रंजना पटेल	ग्राम रामनगर सीधी
नेहा परिहार	ग्राम गोडेगांव, सिवनी
अरूणिका पटेल	मझौली, जबलपुर
पुष्पा मांझी	धनपुरी शहडोल
सपना कोरी	धनपुरी नं. 4 शहडोल
साक्षी ठाकुर	ग्राम ठेका जिला सिवनी
राखी विश्वकर्मा	सुहागी, जबलपुर
अफशां निगार	हनुमानताल, जबलपुर
अर्चना सिंह	भेड़ाघाट, जबलपुर
भारती बंदेवार	छिंदवाड़ा

“ शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण अंग है  
आत्मविश्वास पैदा करना ”

-ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

## संरथान परिवार



कुर्मा पर बैठे हुए - श्रीमती रजनी द्विवेदी, श्रीमती अर्चना शर्मा, श्रीमती अंजलि सक्सेना, डॉ. रामपोहन तिवारी (प्राचाय), श्रीमती बरखा छरे, मुश्की रेखा शर्मा,

डॉ. (श्रीमती) शशि सराफ, श्री राजेश उपाध्याय

श्री शिव कुमार सौंदर्धिया, श्री विनोद पोद्दार, श्रीमती आयशा अंसारी, श्रीमती गृष्ण मेहता, श्रीमती मीना चौरसिया, श्रीमती किरण महोबिया,  
श्रीमती संगीता श्रीवास्तव, श्रीमती रश्म श्रीवास्तव, श्रीमती कुमुम पासी, श्रीमती बंदना श्रीवास्तव, श्रीमती आशा विश्वकर्मा,  
श्रीमती मिथिलेश तिवारी, श्रीमती विज्ञा कोल, श्रीमती साकिंती बकरी, श्री आनंद दुबे

श्रीमती उषा ठाकुर, श्रीमती सरोज तिवारी, श्रीमती नीमा बिहारी, श्रीमती वर्षा राजपूत  
नीचे बैठे हुए -



बालक एक शरीर हैं जो बढ़ता है, एक आत्मा हैं जो विकसित होती हैं।  
शारीरिक और आध्यात्मिक, इन दोनों रूपों का अनंत स्रोत जीवन है।  
अतः हमें दोनों प्रकार के विकास में निहित रहस्यपूर्ण शक्तियों  
को, न तो नष्ट करना चाहिए और न ही अवरुद्ध।

-डॉ. मारिया मॉण्टेसरी



◀ scan the QR code for e-balarun

एम.पी.प्रिंटिंग प्रेस, औद्योगिक सहकारी समिति मर्या, जबलपुर : 2409509